यूरोप की लोक कथाऐं–1

चयन और अनुवाद
सुषमा गुप्ता

2022

Series Title : Desh Videsh Ki Lok Kathayen
Book Title: Europe Ki Lok Kathayen-1 (Folktales of Europe-1)
Cover Page picture: Big Ben (London), Colosseum (Rome), Eiffel Tower (Paris)
Published Under the Auspices of Akhil Bhartiya Sahityalok

E-Mail: hindifolktales@gmail.com
Website: www.sushmajee.com/folktales/index-folktales.htm

Copyrighted by Sushma Gupta 2018
No portion of this book may be reproduced or stored in a retrieval system or transmitted in any form, by any means, mechanical, electronic, photocopying, recording, or otherwise, without written permission from the author.

Map of Europe

विंडसर, कैनेडा

जून 2022

Contents

देश विदेश की लोक कथाऐं 5

यूरोप की लोक कथाऐं–1 7

1 सन्तोष का सेब 9

2 भिखारी और रोटी 21

3 दो भाई और एक सफेद दाढ़ी वाला बूढ़ा 31

4 रफू करने वाली सुई 33

5 गरुड़ों का वायदा 40

6 राजकुमारी और मटर का दाना 44

7 राजकुमार और सेब 47

8 आधा मुर्गा 55

9 गाने वाला गुलाब 70

10 आदमी की उम्र अस्सी साल क्यों 79

11 दलिये का बर्तन 84

12 लम्बू, चौड़ू और दूर का देखने वाला 90

13 होशियार राजकुमारी 104

14 सिपाही और शैतान 112

15 एक अनाथ लड़का और नरक के कुत्ते 116

16 शाही गड़रिया 131

17 आधा कम्बल 160

18 एक या दो चुटकी नमक 164

19 सुन्दरी और जानवर 182

20 भालू ने मॉस खाना कैसे सीखा 203

21 छह मोमबत्तियॉ 212

22 सफेद बिल्ली 217

देश विदेश की लोक कथाऐं

लोक कथाऐं किसी भी समाज की संस्कृति का एक अटूट हिस्सा होती हैं। ये संसार को उस समाज के बारे में बताती हैं जिसकी वे लोक कथाऐं हैं। आज से बहुत साल पहले, करीब **100** साल पहले, ये लोक कथाऐं केवल ज़बानी ही कही जातीं थीं और कह सुन कर ही एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को दी जाती थीं इसलिये किसी भी लोक कथा का मूल रूप क्या रहा होगा यह कहना मुश्किल है।

आज हम ऐसी ही कुछ अंग्रेजी और कुछ दूसरी भाषा बोलने वाले देशों की लोक कथाऐं अपने हिन्दी भाषा बोलने वाले समाज तक पहुँचाने का प्रयास कर रहे हैं। इनमें से बहुत सारी लोक कथाऐं हमने अंग्रेजी की किताबों से, कुछ विश्वविद्यालयों में दी गयी थीसेज़ से, और कुछ पत्रिकाओं से ली हैं और कुछ लोगों से सुन कर भी लिखी हैं। अब तक **2500** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी हैं। इनमें से **550** से भी अधिक लोक कथाऐं तो केवल अफ्रीका के देशों की ही हैं।

इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि ये सब लोक कथाऐं हर वह आदमी पढ़ सके जो थोड़ी सी भी हिन्दी पढ़ना जानता हो और उसे समझता हो। ये कथाऐं यहाँ तो सरल भाषा में लिखी गयी है पर इनको हिन्दी में लिखने में कई समस्याऐं आयी है जिनमें से दो समस्याऐं मुख्य हैं।

एक तो यह कि करीब करीब **95** प्रतिशत विदेशी नामों को हिन्दी में लिखना बहुत मुश्किल है चाहे वे आदमियों के हों या फिर जगहों के। दूसरे उनका उच्चारण भी बहुत ही अलग तरीके का होता है। कोई कुछ बोलता है तो कोई कुछ। इसको साफ करने के लिये इस सीरीज़ की सब किताबों में फुटनोट्स में उनको अंग्रेजी में लिख दिया गया हैं ताकि कोई भी उनको अंग्रेजी के शब्दों की सहायता से कहीं भी खोज सके। इसके अलावा और भी बहुत सारे शब्द जो हमारे भारत के लोगों के लिये नये हैं उनको भी फुटनोट्स और चित्रों द्वारा समझाया गया है।

ये सब कथाऐं "देश विदेश की लोक कथाऐं" और "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें" नाम की सीरीज के अन्तर्गत छापी जा रही हैं। ये लोक कथाऐं आप सबका मनोरंजन तो करेंगी ही साथ में दूसरे देशों की संस्कृति के बारे में भी जानकारी देंगी। आशा है कि हिन्दी साहित्य जगत में इनका भव्य स्वागत होगा।

सुषमा गुप्ता
2022

यूरोप की लोक कथाऐं–1

संसार में सात महाद्वीप हैं – एशिया, अफ्रीका, उत्तरी अमेरिका, दक्षिणी अमेरिका, अन्टार्कटिका, यूरोप और आस्ट्रेलिया – सबसे पहले सबसे बड़ा और सबसे बाद में सबसे छोटा। साइज़ में यूरोप आस्ट्रेलिया से बड़ा है। यूरोप की बहुत सारी लोक कथाऐं अंग्रेजी भाषा में भी मिल जाती हैं।

इस महाद्वीप का अपना लिखा साहित्य और इसके बारे में लिखा साहित्य और दूसरे महाद्वीपों की तुलना में काफी मिलता है और इसी वजह से हमने इस महाद्वीप की केवल कुछ लोक कथाऐं हिन्दी भाषा में प्रस्तुत करने का विचार किया है क्योंकि इस महाद्वीप की लोक कथाओं के बिना दुनियॉ का लोक कथा साहित्य अधूरा लगता है।

इस महाद्वीप में कुल मिला कर **50** से ज़्यादा देश हैं पर इतने सारे देशों में से केवल कुछ ही देशों की लोक कथाऐं ज़्यादा मिलती हैं – इंगलैंड, नौर्स देशों के पॉच देश[1], जर्मनी, इटली आयरलैंड आदि। इसलिये इन देशों की लोक कथाऐं इन देशों के नाम से ही दी गयीं हैं। शेष देशों की लोक कथाऐं "यूरोप की लोक कथाऐं" पुस्तक के अन्तर्गत दी गयी हैं।

इस महाद्वीप में सिन्डरैला की कहानी बहुत मशहूर है और वह इसके भिन्न भिन्न देशों में भिन्न भिन्न तरीके से कही सुनी जाती है। सिन्डरैला के अलावा यहॉ कुछ और भी कथाऐं ऐसी हैं जो इसके भिन्न भिन्न देशों में भिन्न भिन्न तरीके से कही जाती है। ये सब कथाऐं भी अलग से दी गयी हैं "एक कहानी कई रंग" सीरीज़ के अनर्गत। इस महाद्वीप की सबसे ज़्यादा कथाऐं, ब्रिटेन और जर्मनी की लोक कथाऐं, ग्रिम्स और ऐन्ड्रू लैंग की कथाओं के संग्रहों में मिलती हैं। कुछ अनुवादकों ने इटली की लोक कथाओं पर भी ध्यान दिया है। दूसरे देशों की लोक कथाऐं कम मिलती हैं और कुछ देशों की लोक कथाऐं तो मिलती ही नहीं हैं।

हालॉकि इस महाद्वीप से लोक कथाऐं हज़ारों में लिखी जा सकती हैं पर इस समय हमने यहॉ की केवल इंगलैंड, जर्मनी, आयरलैंड, नौर्स और इटली की लोक कथाओं पर खास ध्यान दिया है। इनकी कथाऐं हमने इन देशों के नाम से ही प्रकाशित की हैं। यूरोप की लोक कथाओं का पहला संकलन प्रकाशित किया जा रहा है – "यूरोप की लोक कथाऐं–**1**"। यूरोप के कुछ देशों की लोक कथाऐं इसमें प्रकाशित की जा रही हैं और बाकी बचे देशों की लोक कथाऐं "यूरोप की लोक कथाऐं–**2**" में प्रकाशित की जायेंगी।

आशा है कि ये लोक कथाऍ भी तुम लागों को बहुत पसन्द आयेंगी और यूरोप की वे लोक कथाऐं जो अंग्रज़ी में होने की वजह से या फिर उनके भारत में उपलब्ध न होने की वजह से तुम लोग पढ़ नहीं सकते वे सब अब तुम हिन्दी में पढ़ सकोगे।

[1] Nordic or Norse or Scandinavian countries are five – Iceland, Denmark, Finland, Norway and Sweden

संसार के सात महाद्वीप

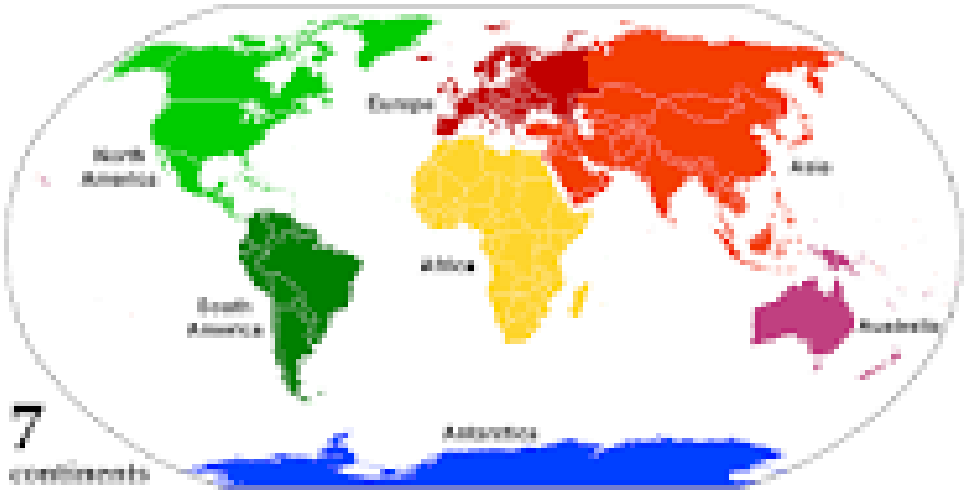

There are approximately 52 countries in Europe, but there are two distinctive geographical regions -
--The first one is United Kingdom of Great Britain and Northern Ireland (4 countries) – United Kingdom, Great Britain or Britain is an island on which there are three countries – England, Scotland, Wales. Later Northern Ireland joined them, so now the “United Kingdom of Great Britain and Northern Ireland” includes the Northern part of Ireland too.
-- The other one is Norse, or Nordic or Scandinavian countries (5 countries). There are five countries in Nordic Countries – Iceland, Denmark, Finland, Norway and Sweden

1 सन्तोष का सेब[2]

एक बार की बात है कि यूरोप में एक स्त्री रहती थी। उसके तीन बेटियॉ थीं। उसकी पहली बेटी की दोनों ऑखों में भेंगापन था फिर भी उसकी मॉ उसे बहुत प्यार करती थी क्योंकि उसकी अपनी दोनों ऑखें भी भेंगी थीं।

उसकी दूसरी बेटी का एक कन्धा ऊॅचा और एक कन्धा नीचा था और भौहों के बाल धुॅए की कालिख जैसे काले थे फिर भी उसकी मॉ उसको उतना ही प्यार करती थी जितना कि वह अपनी पहली बेटी को करती थी क्योंकि उसका अपना भी एक कन्धा ऊॅचा और एक कन्धा नीचा था और भौहों के बाल धुॅए की कालिख जैसे काले थे।

पर उसकी सबसे छोटी बेटी पके सेब की तरह सुन्दर थी। उसके रेशम से मुलायम बाल सोने के रंग जैसे थे परन्तु उसकी मॉ उसे बिल्कुल भी नहीं चाहती थी क्योंकि न तो वह खुद ही बिल्कुल सुन्दर थी और न ही उसके अपने बाल ही सुनहरे थे।

उस स्त्री की दोनों बड़ी बेटियॉ रोज सुबह शाम बहुत बढ़िया कपड़े पहनती थीं और सारा दिन बाहर धूप में बैठी रहती थीं। जब

[2] Apple of Contentment – a folktale from Europe. Written by Howard Pyle in "Pepper and Salt" in 1886. Available at : http://www.storytellingresearchlois.com/2016/09/pyle-apple-of-contentment-keeping.html This story is American.

कि क्रिस्टीन[3], उसकी सबसे छोटी वाली लड़की, बहुत ही घटिया कपड़े पहनती थी।

इसके अलावा वह घर में काम भी बहुत करती थी। वह बतखों को रोज सुबह पहाड़ी तक ले जाती थी ताकि वह हरी हरी घास खा कर मोटी हो जायें और फिर शाम को उनको घर वापस लाती थी।

दोनों बड़ी बहिनों को सफेद रोटी और मक्खन खाने को मिलता था और बढ़िया दूध पीने को मिलता था मगर क्रिस्टीन को सूखी डबल रोटी के टुकड़े ही खाने को मिलते थे।

एक बार क्रिस्टीन अपनी बतखें ले कर पहाड़ी की ओर चली जा रही थी। उसके हाथों में उसकी बुनाई थी। वह धूल भरे रास्ते पर कूदती फॉदती चलती जा रही थी कि एक पुल के पास आयी जो एक नाले पर बना हुआ था।

वहॉ उसने एक लाल रंग की टोपी देखी जो एक पेड़ की डाल से झूल रही थी। उसके ऊपर चॉदी की एक घंटी भी लगी थी।

वह टोपी क्रिस्टीन को बहुत अच्छी लगी। वह सोचने लगी कि वह उसको ले ले क्योंकि ऐसी टोपी उसने पहले कभी नहीं देखी थी। सो उसने वह टोपी उतार कर अपनी जेब में रख ली और बतखों के साथ आगे बढ़ चली कि उसने एक आवाज सुनी — "क्रिस्टीन, क्रिस्टीन।"

[3] Christine – name of the youngest daughter

उसने इधर उधर देखा तो उसे एक अजीब सा काला आदमी दिखायी दिया। उसका सिर तो बन्द गोभी जितना बड़ा था और टॉगें नन्हीं मूली जैसी थीं।

क्रिस्टीन ने उससे पूछा "तुम्हें क्या चाहिये।" वह आदमी अब तक उसके पास तक आ गया था और अपनी टोपी वापस मॉग रहा था क्योंकि उस टोपी के बिना वह पहाड़ी पर अपने घर वापस नहीं जा सकता था।

वह आदमी वहीं रहता था मगर फिर उसकी यह टोपी यहॉ पेड़ पर कैसे लटकी रह गयी यह उसकी समझ में नहीं आया। क्रिस्टीन ने सोचा कि टोपी उसको वापस देने से पहले उस आदमी का नाम तो उसे उस आदमी से मालूम कर ही लेना चाहिये।

असल में वह आदमी वहॉ उस नाले में मछलियॉ पकड़ रहा था कि हवा से उसकी टोपी नाले में गिर गयी थी और उसने उसे पेड़ पर सूखने के लिये डाल दिया था। अब क्या क्रिस्टीन वह टोपी उसे दे देगी?

उस आदमी ने उसे सब कुछ सच सच बता दिया कि कैसे उसकी टोपी वहॉ पेड़ पर पहुॅची।

क्रिस्टीन सोचने लगी कि वह क्या करे? टोपी दे या न दे? वह बहुत सुन्दर टोपी थी। अगर वह उसको टोपी दे देती है तो वह उसे टोपी के बदले में क्या देगा।

वह आदमी उसको उस टोपी के पॉच रुपये देने को तैयार था पर पॉच रुपये तो इतनी सुन्दर टोपी के लिये बहुत कम थे, और फिर उसमें चॉदी की घंटी भी तो लगी थी।

पर लो, वह आदमी तो उस टोपी के 100 रुपये भी देने को तैयार हो गया। नहीं नहीं, उसको पैसों की क्या परवाह पर इतनी सुन्दर टोपी आयेगी कहॉ से। उसको तो उसकी टोपी अच्छी लग रही थी।

आदमी बोला — "देखो किस्टीन, मैं इस टोपी के बदले में तुम को यह देने के लिये तैयार हूॅ।" कह कर उसने अपना खुला हुआ हाथ उसे दिखाया जिसमें बीन के एक दाने जैसा कुछ था। वह कोयले जैसा काला था।

"यह तो ठीक है पर यह है क्या?"

वह काला आदमी बोला — "यह "सन्तोष के सेब" का बीज है। इसे तुम अपने घर के पास बो देना। इसमें से एक पेड़ निकलेगा और उस पेड़ में लगेगा केवल एक सेब। जो भी उस सेब को देखेगा वही उसको देख कर उसको खाने के लिये ललचायेगा पर उस सेब को तुम्हारे सिवा कोई और नहीं तोड़ पायेगा।

जब तुम्हें भूख प्यास लगेगी तब यह मॉस और पानी बन जायेगा और जब तुम्हें ठंड लगेगी तो यह गर्म कपड़े बन जायेगा।

दूसरी अजीब बात इसके बारे में यह है कि जैसे ही तुम यह सेब तोड़ोगी उसी समय उस सेब की जगह दूसरा सेब उग आयेगा और इस तरह उस पेड़ पर हमेशा एक सेब रहेगा। क्या अब तुम मेरी टोपी दे दोगी?"

क्रिस्टीन उस जादू वाले बीज को देख कर बहुत खुश हुई। उसने उस आदमी को उसकी टोपी वापस कर दी और उससे सेब का बीज ले लिया। उस आदमी ने अपनी टोपी अपने सिर पर रखी और गायब हो गया — ऐसे जैसे फूँक से मोमबत्ती बुझ जाये।

क्रिस्टीन उस बीज को ले कर घर पहुँची और अपने कमरे की खिड़की के सामने उसको बो दिया। सुबह उठी तो उसने खिड़की से झाँका तो वहाँ तो सेब का एक बड़ा पेड़ खड़ा था और उस पर एक सेब लटक रहा था। सेब का रंग बिल्कुल सुनहरा था।

वह बाहर गयी और आसानी से उसे तोड़ लिया। जैसे ही उसने उसे वहाँ से तोड़ा तुरन्त ही उसकी जगह एक और सेब वहाँ पर आ गया।

भूखे होने की वजह से वह सेब उसने तुरन्त ही खा लिया। खाने पर उसको लगा कि इतनी अच्छा सेब तो उसने पहले कभी खाया ही नहीं था क्योंकि उस सेब का स्वाद सेब जैसा नहीं था बल्कि शहद और दूध से बने केक जैसा था।

कुछ देर बाद उसकी सबसे बड़ी बहिन बाहर आयी और चारों तरफ देखने लगी। उसने वहॉ एक सेब का पेड़ देखा और उस पेड़ पर लटकता हुआ एक सुनहरा सेब देखा तो उसे बड़ा आश्चर्य हुआ। यह सेब का पेड़ रातों रात यहॉ कहॉ से आ गया?

उस पेड़ पर लगे सेब को देख कर उसकी उसी समय उस सेब को खाने की इच्छा हुई। उसे लगा मानो यही इच्छा उसके जीवन की पहली और आखिरी इच्छा थी। उसने सोचा इसे मैं ही तोड़ लेती हूॅ इसको तोड़ने में क्या है।" पर इसे कहना आसान था बजाय करने के।

जैसे ही उसने सेब तोड़ने के लिये पेड़ पर चढ़ना शुरू किया तो उसे लगा कि वह सेब तोड़ने नहीं बल्कि चॉद पकड़ने जा रही है। वह चढ़ती गयी, और चढ़ती गयी और चढ़ती गयी।

चढ़ते चढ़ते उसे लगा कि वह चॉद भी नहीं बल्कि सूरज को पकड़ने जा रही है। दोनों ही काम आसान थे पर सेब उससे अभी भी बहुत दूर था। आखिर उसने हिम्मत छोड़ दी।

फिर उसकी दूसरी बहिन आयी और उसकी भी उस सुनहरे सेब पर नजर पड़ी तो उसकी भी उसको लेने की इच्छा होने लगी पर चाहने और पाने में तो बहुत अन्तर है सो उसको भी वह सेब नहीं मिल पाया।

अन्त में उसकी मॉ आयी। उसने भी वह सेब लेना चाहा पर वह भी सेब नहीं ले पायी।

तीनों ही उस पेड़ के नीचे खड़ी उस सेब की इच्छा कर रही थीं पर तोड़ उसे कोई भी नहीं पा रहा था। मगर क्रिस्टीन जब भी चाहती वह सेब तोड़ लेती।

जब उसे भूख लगती, पेड़ का सेब उसकी भूख शान्त कर देता। जब कभी उसे प्यास लगती तो भी उसके लिये वहॉ सेब हाजिर था। जब उसे किसी अच्छे कपड़े पहनने की इच्छा होती तो वह भी उसको उस सेब से मिल जाता। अब वह दुनियॉ की सबसे ज़्यादा खुशकिस्मत लड़की थी।

एक दिन एक राजा उधर से अपने आदमियों के साथ गुजर रहा था कि उसने भी उस पेड़ से लटका हुआ वह सुनहरा सेब देखा। उसको देखते ही उसके मन में भी उस सेब को खाने की इच्छा जाग उठी। उसने अपने एक नौकर को बुलाया और कहा कि वह उस सेब को कुछ सोने के सिक्कों के बदले में खरीद लाये।

नौकर उस घर की ओर गया और उस घर का दरवाजा खटखटाया। मॉ ने दरवाजा खोला और पूछा — "क्या बात है? तुम्हें क्या चाहिये?"

नौकर बोला — "कोई खास चीज़ तो नहीं, बाहर एक राजा हैं वह यह जानना चाहते हैं कि उनको यह सेब इतने सोने के बदले में मिल सकता है या नहीं।"

मॉ बोली — "हॉ हॉ क्यों नहीं।"

नौकर ने उसको वह सोना दे दिया और वह सेब तोड़ने चल दिया। वह चढ़ा और चढ़ कर उसने डाल हिलायी मगर कोई फायदा नहीं हुआ। वह पेड़ पर भी चढ़ा पर फिर भी वह वहॉ तक नहीं पहुँच सका और वह वह सेब नहीं तोड़ सका।

नौकर राजा के पास वापस गया और बोला — "उस स्त्री ने वह सेब मुझे बेच तो दिया है मगर वह तो तारों से भी दूर लगता है। हाथ में ही नहीं आता।"

राजा ने एक और आदमी भेजा। वह आदमी मजबूत और लम्बा था मगर काफी कोशिशों के बाद वह भी उस सेब को नहीं तोड़ पाया। सो वह भी राजा के पास खाली हाथ वापस लौट आया। अब राजा खुद गया पर उसको भी वह सेब नहीं मिला और वह भी उसकी सुगन्ध मन में बसाये वापस चला गया।

घर आने के बाद भी राजा के मन से उस सेब को खाने की इच्छा नहीं निकली। वह उसी की बात करता, उसी के सपने देखता। जितना वह उससे दूर होता जाता उतनी ही उसकी उसको पाने की इच्छा बढ़ती जाती।

आखिर वह उदास रहने लगा और एक दिन बीमार पड़ गया।

फिर एक दिन उसने एक अक्लमन्द आदमी को बुलाया और उससे वह सेब लाने के लिये कहा। उसने राजा को आ कर बताया कि जिस स्त्री ने आपके नौकर को वह सेब बेचा था उस सेब को उस

स्त्री की केवल एक लड़की ही तोड़ सकती थी क्योंकि वह उसी लड़की का पेड़ था।

यह सुन कर राजा अपने आदमियों के साथ वहाँ गया और किस्टीन के घर पहुँचा। वहाँ उसे केवल उसकी माँ और दोनों बड़ी बहिनें ही मिलीं क्योंकि किस्टीन तो बतखें ले कर पहाड़ी पर गयी हुई थी।

राजा ने अपना टोप उतार कर झुक कर उनकी माँ को नमस्कार किया। उस अक्लमन्द आदमी ने किस्टीन की माँ से पूछा — "वह आपकी कौन सी लड़की है जिसका यह पेड़ है?"

राजा ने सोच रखा था कि अगर वह उस स्त्री की सबसे बड़ी वाली लड़की हुई तो सेब लेने के बाद वह उसे घर ले जायेगा और उससे शादी कर लेगा और अपनी रानी बना लेगा। इस काम में वह देर नहीं करेगा।

स्त्री बोली — "लेकिन क्या वह लड़की आपके और आपके सभी आदमियों के सामने उस पेड़ पर चढ़ेगी? नहीं नहीं, आप ऐसा कीजिये कि अभी तो आप अपने घर जाइये और वह लड़की सेब आपको बाद में आ कर दे जायेगी।"

राजा बोला — "ठीक है, मगर सेब ज़रा जल्दी भिजवाना।"

जैसे ही राजा गया वैसे ही उसने किस्टीन को बुलाया और कहा — "राजा ने यह सेब मँगवाया है। तुम यह सेब तोड़ कर अपनी बड़ी बहिन को दे दो वह यह सेब ले कर राजा के पास चली

जायेगी। अगर तुमने ऐसा नहीं किया तो मैं तुम्हें कुँए में फेंक दूँगी।"

क्रिस्टीन ने वह फल तोड़ कर अपनी बड़ी बहिन को दे दिया। उसकी बहिन ने उस सेब को एक रूमाल में लपेटा और उसको ले कर राजा के पास चल दी। वह बहुत खुश थी।

खट, खट, खट। वह दरवाजे पर सेब लिये खड़ी थी। उसको तुरन्त ही अन्दर बुला लिया गया। जैसे ही वह राजा के सामने आयी और उसने सेब देखने के लिये अपना रूमाल खोला तो मानो या न मानो उसमें सेब तो नहीं था बल्कि उसमें सेब की जगह एक गोल पत्थर रखा हुआ था।

जब राजा ने देखा कि वह उसके लिये सेब नहीं पत्थर ले कर आयी है तो उसको बहुत गुस्सा आया और उसने उसे घर से बाहर निकाल दिया।

राजा ने फिर अपना एक आदमी भेजा। उसने जा कर उन लड़कियों की माँ से पूछा — "क्या तुम्हारी कोई और लड़की भी है?"

"हाँ है। तुम घर चलो वह अभी तुम्हारे लिये सेब तोड़ कर लाती है।"

नौकर के जाने के बाद उसने फिर क्रिस्टीन को बुलाया और अपनी दूसरी बहिन के लिये सेब तोड़ने के लिये कहा।

क्रिस्टीन ने फिर एक सेब तोड़ा और अपनी दूसरी बहिन को दे दिया। वह भी जब राजा के पास पहुँची और उसको सेब देने के लिये अपना रूमाल खोला तो उसमें बजाय सेब के एक मुट्ठी कीचड़ निकली। राजा ने उसको भी अपने महल से भगा दिया।

नौकर फिर उनके घर आया और उनकी माँ से पूछा — "क्या तुम्हारे और भी कोई लड़की है?"

"हाँ है तो, मगर वह तो किसी काम की नहीं है। उसको तो केवल बतखों को पालने का काम आता है।"

"कोई बात नहीं। पर कहाँ है वह?"

"वह तो बतखों को ले कर पहाड़ी पर गयी है।"

उस लड़की को बुलाया गया। कुछ देर बाद वह आयी तो नौकर ने उससे पूछा — "क्या तुम राजा के लिये एक सेब तोड़ सकती हो?"

वह गयी और जंगली बेर की तरह वह सेब तोड़ कर ले आयी। नौकर ने अपना टोप उतार कर उसे झुक कर नमस्कार किया क्योंकि यही वह लड़की थी जिसको वे ढूँढ रहे थे।

उस नौकर ने उस लड़की को राजा के महल को चलने के लिये कहा। क्रिस्टीन ने वह सेब जेब में रख लिया और राजा के नौकर के साथ चल दी। और वह नौकर उसको ले कर राजा के महल की तरफ चल दिया।

राजा के घर में उस फटे हाल लड़की को देख कर सभी अपनी अपनी हथेलियॉ मुँह पर रख कर हँसने लगे। राजा ने पूछा — "क्या तुम सेब लायी हो?"

"जी हॉ।" किस्टीन ने अपनी जेब से सेब से निकाला और राजा की ओर बढ़ा दिया।

राजा ने उसको थोड़ा सा खाया और उसको लगा कि उसने ऐसा सेब पहले कभी नहीं खाया था। इसके अलावा उसने किस्टीन जैसी सुन्दर लड़की भी पहले कभी नहीं देखी थी।

ऐसा इसलिये था क्योंकि उसने सन्तोष का सेब खाया था।

राजा और किस्टीन की शादी हो गयी। उसकी मॉ और बहिनें भी वहॉ आयीं थीं। उन्होंने सोचा कि उनके पास तो उस सेब का पेड़ है पर उनका यह सोचना गलत था क्योंकि अगले दिन तो वह पेड़ किस्टीन के महल की खिड़की के सामने खड़ा था।

2 भिखारी और रोटी[4]

एक बार यूरोप में बहुत ज़ोर से बर्फ पड़ रही थी और बहुत तेज़ ठंडी हवाऐं चल रही थीं। ऐसे मौसम में एक बूढ़ा आदमी एक गॉव में आया।

उसके शरीर पर पूरे कपड़े भी नहीं थे और वह ठंड से थर थर कॉप रहा था। वह हर घर के दरवाजे पर जा कर यह आवाज लगा रहा था — "कोई मेहरबान है जो इस भूखे और सर्दी से ठिठुरते भिखारी को कुछ खाने को दे दे?"

पर सभी दरवाजे बन्द थे, सभी खिड़कियॉ बन्द थीं, कोई भी उस बूढ़े की पुकार नहीं सुन रहा था।

चलते चलते अन्त में वह एक बहुत बड़े घर के सामने रुक गया और उस घर का दरवाजा खटखटा कर आवाज लगायी — "मेरे ऊपर दया करो, मैं ठंड से सिकुड़ रहा हूॅ और बहुत भूखा हूॅ।"

दरवाजा खुला और उसमें से एक स्त्री ने झॉका। वह स्त्री खूब गर्म कपड़े पहने हुए थी। उसका रंग गुलाबी था तथा वह किसी बड़े घर की दिखायी देती थी। पर उसकी शक्ल से लगता था कि वह अच्छे स्वभाव की नहीं थी।

[4] The Beggar and Bread – a folktale from Europe

वह उस बूढ़े को झिड़कती हुई सी बोली — "तुम्हें क्या चाहिये? मुझे बहुत काम है।"

बूढ़े ने कहा — "मेरे ऊपर दया करो, मैं बहुत भूखा हूँ। मुझे रोटी की खुशबू आयी तो मैं इधर चला आया।"

स्त्री ने फिर बुरा सा मुँह बनाते हुए कहा — "तो क्या वह रोटी मैं तुम्हारे लिये बना रही हूँ? वे रोटियाँ तो केवल मेरे अपने घर के लिये ही काफी हैं इसलिये मैं वे तुम्हें नहीं दे सकती।" और वह दरवाजा बन्द कर के वहाँ से अन्दर चली गयी।

बूढ़ा कुछ पल तो वहाँ खड़ा रहा और फिर वह वहाँ से यह कहता हुआ चला गया — "मैं इस घर को याद रखूँगा।"

फिर वह यह कहता रास्ते पर चलने लगा — "कोई दयालु मेरे ऊपर दया करे, इस भूखे को खाना दे, मैं सर्दी से ठिठुर रहा हूँ।" पर ठंड बहुत थी इसलिये सभी घरों के दरवाजे बन्द थे, सभी खिड़कियाँ बन्द थीं।

आखिर उसने एक झोंपड़ी का दरवाजा खटखटाया। दरवाजा खुला और उसमें से एक स्त्री ने बाहर देखा। उसने फटे कपड़े पहने हुए थे और उसके पैर भी नंगे थे। लेकिन वह स्त्री बहुत दयालु लग रही थी।

जैसे ही उसने एक बूढ़े आदमी को ठंड से सिकुड़ते हुए देखा तो बोली — "अरे, तुम इस समय बाहर कैसे? आओ आओ, अन्दर

घर में आ जाओ और रसोई में बैठ कर थोड़े गर्म हो लो। बाहर तो बहुत ठंडा है।"

उसने उस अजनबी का हाथ पकड़ा और सहारा दे कर उसे रसोईघर में ले गयी। वहीं उसके तीन बच्चे रात का खाना खाने के लिये मेज पर बैठे हुए थे।

उसने बच्चों से कहा — "बच्चो, अजनबी को बैठने के लिये एक कुर्सी दो।" उसके तीनों बच्चे तुरन्त उठे और एक कुर्सी ला कर आग के पास रख दी।

वह बूढ़ा आदमी उस कुर्सी पर बैठ गया और अपने हाथ पॉव गर्म करने लगा। फिर बोला — "मैं बहुत भूखा हूँ। मुझे रोटी की खुशबू आयी तो मैं इधर चला आया।"

स्त्री ने एक लम्बी सॉस ले कर कहा — "अफसोस, मेरे पास यही एक रोटी है। अगर यह रोटी खत्म हो गयी तो हमारे घर में और कुछ खाने को नहीं है।"

बूढ़े आदमी ने फिर कहा — "मैं बहुत भूखा हूँ। मैंने कल रात भी खाना नहीं खाया और न सुबह नाश्ता किया।"

वह स्त्री ज़ोर से अपने बच्चों से बोली — "बच्चों, तुम लोग सुन रहे हो। यह बूढ़ा हमसे भी ज़्यादा भूखा है। हम लोगों ने कम से कम एक रोटी का एक टुकड़ा सुबहे नाश्ते में तो खाया था परन्तु इस बेचारे ने तो कल रात से कुछ भी नहीं खाया। क्या मैं इसको यह रोटी दे दूँ?"

मॉ की यह बात सुन कर बच्चों की ऑखों में ऑसू आ गये क्योंकि उन्होंने नाश्ते के बाद से कुछ नहीं खाया था और इस रोटी को इस अजनबी को देने बाद तो फिर उनके पास खाने के लिये कुछ भी नहीं बचेगा।

परन्तु तीनों बच्चों ने एक साथ कहा — "मॉ, यह रोटी तो इनको मिलनी ही चाहिये क्योंकि ये हमसे ज़्यादा भूखे हैं।"

मॉ ने वह रोटी एक तश्तरी में रखी और अजनबी के सामने रख दी। अजनबी बहुत भूखा था सो उसने वह रोटी तुरन्त ही खा ली। फिर उसने अपना फटा कोट अपने शरीर के चारों ओर कस कर लपेटा और बोला — "मैं इस घर को याद रखूँगा। आपने मेरी इस बुरे समय में बहुत सहायता की है मैं किस प्रकार आपकी सहायता करूँ?"

उस स्त्री ने जवाब दिया — "मेरे लिये आप भगवान से प्रार्थना करें कि मुझे कल कहीं काम मिल जाये क्योंकि जब तक मुझे कहीं काम नहीं मिलेगा मेरे बच्चों को रोटी नहीं मिलेगी।"

उस बूढ़े ने कहा — "मैं अभी आपके लिये प्रार्थना करता हूँ कि आप कल सुबह जो भी काम शुरू करेंगी वह काम आपका सारे दिन चलता रहेगा।" इतना कह कर वह बूढ़ा उठा और दरवाजा खोल कर बाहर चला गया।

अगली सुबह तीनों बच्चे जल्दी उठ गये और खाने के लिये कुछ मॉगने लगे। उस स्त्री ने एक आह भरी और बोली — "मेरे

प्यारे बच्चों, तुम्हें मालूम है कि घर में जो कुछ भी था वह सब कल रात मैंने उस अजनबी को दे दिया था अब तो घर में कुछ भी नहीं है।

पर हॉ, मेरी टोकरी में एक लाल रंग का कपड़ा पड़ा है। तुम वह ले आओ। उसे बेच कर मैं कुछ खाना खरीद कर लाती हूँ।"

तीनों बच्चे एक साथ बोले — "पर वह तो आपके नये कोट का कपड़ा है मॉ और आपके लिये इस ठंड में कोट बहुत जरूरी है।"

मॉ बोली — "कोई बात नहीं बच्चों, तुम चिन्ता न करो। अभी तो तुम लोग नापने के लिये गज ले आओ ताकि यह पता चल सके कि वह है कितना।"

एक बच्चा उठा और कपड़ा और गज दोनों ले आया और उस स्त्री ने उस कपड़े को नापना शुरू किया।

"एक गज, दो गज, तीन गज, चार गज, यह क्या? यह कपड़ा तो खत्म होने पर ही नहीं आ रहा और मुझे अच्छी तरह याद है कि यह कपड़ा तीन गज से ज़्यादा नहीं था। अभी कितना और है?

पॉच, छह, सात, आठ गज। यह क्या हो रहा है? नौ, दस, ग्यारह, बारह गज। हे भगवान, हम पर दया करो, यह कपड़ा तो खत्म ही नहीं हो रहा। तेरह गज, चौदह गज...।"

ऐसा लग रहा था कि जैसे वह कपड़ा अनगिनत गज लम्बा हो गया हो और खत्म होने पर ही न आ रहा हो। उसने सुबह यह काम शुरू किया था और दोपहर तक उसका वह छोटा सा कमरा उस लाल कपड़े के ढेर से भर गया।

बच्चे खुशी से बाहर भागे और पड़ोसियों को खबर दी। पड़ोसी भी इस जादू को देखने आये और कपड़े के ढेर को देख कर आश्चर्य से बोले — "अरे तुम्हें इतना कपड़ा कहॉ से मिला?"

स्त्री ने कोई जवाब नहीं दिया और उसके हाथ कपड़ा नापते रहे और नापते रहे। और यह काम सूरज डूबने तक चलता रहा और चलता रहा। उस समय तक उसकी छोटी सी झोंपड़ी उस खूबसूरत लाल कपड़े से भरी पड़ी थी।

अब वे लोग गरीब नहीं रहे। उस लाल कपड़े को बेच कर उन्होंने बहुत धन कमाया।

ऐसी बातें छिपी नहीं रहतीं। यह खबर उस बुरे स्वभाव वाली स्त्री के पास भी पहुॅची जिसने उस बूढ़े को उस रात दुतकार कर भगा दिया था।

उसने सोचा — "ओह, लगता है वह बूढ़ा आदमी कोई जादूगर था। अगर मैं उसे उस दिन न भगा देती तो वह मुझसे भी यही कहता कि कल सुबह तुम जो काम भी शुरू करोगी वह सारा दिन चलता रहेगा।

अगर अबकी बार वह इधर आया तो मैं उसे जितनी रोटी की जरूरत होगी उतनी दे दूँगी और फिर मैं देखती हूँ कि गॉव में सबसे अमीर कौन होता है।"

अब उसके दरवाजे और खिड़कियॉ हमेशा खुली रहतीं और वह भी सड़क पर हर आने जाने वाले पर नजर रखती। ठंड अभी भी बहुत थी पर धन के लोभ में वह अब अपने घर के दरवाजे खिड़कियॉ बन्द ही नहीं करती थी।

आखिरकार एक शाम उसको उस बूढ़े की आवाज सुनायी दी — "कोई दयालु है जो मेरे ऊपर दया करे, इस भूखे और सर्दी से ठिठुरते भिखारी को खाना दे।"

वह स्त्री तो इस ताक में ही बैठी थी कि कब वह भिखारी आये और कब वह उसको खाना खिलाये।

सो जैसे ही उसने उस भिखारी की आवाज सुनी उसने तुरन्त ही उसको बुलाया और कहा — "आओ आओ, अन्दर आ जाओ। इसे अपना ही घर समझो। यह लो इस कुर्सी पर बैठो और एक प्याला चाय पी कर थोड़ा गर्म हो लो। बोलो मैं तुम्हारी क्या सेवा कर सकती हूँ?"

वह बूढ़ा कुर्सी पर बैठ गया और चाय पीता हुआ बोला — "मैं बहुत भूखा हूँ रोटी की खुशबू आयी तो इधर चला आया।"

"अरे तुम भूखे हो? यह लो रोटी, सब्जी, दाल, चटनी आदि और जितना चाहे उतना खाओ। चाहे मैं भूखी रह जाऊँ परन्तु मैं तुम्हें रोटी जरूर खिलाऊँगी।"

उस रात बूढ़े ने बहुत अच्छा खाना खाया। खाना खा कर वह बोला — "बहुत बहुत धन्यवाद। मैं इस घर को याद रखूँगा।"

स्त्री ने उत्सुकता से कहा — "और क्या?"

बूढ़ा मुस्कुरा कर बोला — "मैं भगवान से प्रार्थना करता हूँ कि जो भी काम तुम कल सुबह शुरू करो वह सारा दिन चले।" यह कह कर वह बूढ़ा चला गया।

जब वह बूढ़ा चला गया तो वह स्त्री खुशी से चीख पड़ी — "ओह, अब मैं क्या करूँ? हाँ, मैं कल सुबह से पैसे गिनना शुरू करती हूँ ताकि मेरा वह काम शाम तक चलता रहे।

पर मैं इतने सारे पैसे रखूँगी कहाँ? मुझे उनको रखने के लिये पहले से ही कुछ थैले बना लेने चाहिये। मैं कुछ कपड़ा काट लूँ, रात भर में मैं उस कपड़े से कुछ थैले सिल लूँगी, और सुबह तक वे मेरे पैसे रखने के लिये तैयार हो जायेंगे।"

उसने एक कैंची ली और कुछ कपड़ा पास में रख लिया और थैले बनाने लगी। वह रात भर इसी काम में लगी रही। पहले वह थैले का कपड़ा काटती और फिर उसको सिलती। यह सब करते करते कब सुबह हो गयी उसको पता ही नहीं चला।

एकाएक उसको लगा कि उसकी कैंची तो रुक ही नहीं रही थी। वह उसे रख भी नहीं पा रही थी बल्कि एक प्रकार से कैंची उसके हाथ से कह रही थी कि मुझे चलाओ।

यह महसूस होते ही वह तो घबरा गयी — "ओह, यह क्या हो रहा है? यह तो मेजपोश कटा जा रहा है। कैंची, रुक जाओ।"

पर कैंची थी कि रुकने का नाम ही नहीं ले रही थी वह तो बस कपड़ा काटती ही जा रही थी, काटती ही जा रही थी।

वह स्त्री घबराहट में चिल्लायी — "ओ कैंची, रुक जाओ। अरे, मेरी कुर्सी की गद्दियॉ परदे चादर सभी कट गये हैं। अरे कालीन भी, तकिये के गिलाफ भी। हे भगवान, अब मैं क्या करूँ।"

पर कैंची थी कि रुकने का नाम ही नहीं ले रही थी और घर में जो कुछ भी था वह सब काटती जा रही थी। इतने में ऊपर से उसका पति आया तो कैंची ने उसका कोट भी काटना शुरू कर दिया।

वह अपनी पत्नी पर चिल्लाया — "यह सब तुम क्या कर रही हो? यह मेरा कोट क्यों काट रही हो? रखो कैंची नीचे।"

स्त्री रोती सी बोली — "मैं नहीं रख सकती। मुझसे यह कैंची रखी ही नहीं जा रही।"

खच खच खच, अब कैंची उसके पति की कमीज काट रही थी, फिर मोजे, फिर जूते। सुबह, दोपहर, शाम कैंची चलती रही और चलती रही और जब तक चलती रही जब तक रात नहीं हो गयी। और घर में जब सब कुछ कट गया तब कहीं जा कर वह कैंची रुकी।

दूर कहीं से उस स्त्री ने आवाज सुनी कोई बूढ़ा आवाज लगा रहा था — "कोई दयालु मेरे ऊपर दया करे, इस भूखे को खाना दे, मैं सर्दी से ठिठुर रहा हूँ।"

3 दो भाई और एक सफेद दाढ़ी वाला बूढ़ा[5]

एक बार यूरोप के एक शहर में दो भाई रहते थे। एक बार उन्होंने गॉव गॉव और शहर शहर जा कर खुशी ढूँढने का विचार किया। और वे खुशी ढूँढने चल दिये।

रास्ते में उन्हें एक बूढ़ा मिला जिसकी दाढ़ी बिल्कुल सफेद थी। वह बूढ़ा उन दोनों को देख कर रुक गया और उनसे पूछा कि वे लोग कहॉ जा रहे हैं। उन्होंने उस बूढ़े को बताया कि वे खुशी की खोज में इधर से उधर घूम रहे हैं।

बूढ़ा बोला — "मैं इस काम में तुम्हारी सहायता करना चाहता हूँ अगर तुम्हें कोई ऐतराज न हो तो।"

दोनों भाइयों को भला इसमें क्या ऐतराज हो सकता था सो उसने अपनी जेब से मुट्ठी भर सोने के सिक्के निकाले और उनसे पूछा — "तुम लोगों में से ये सिक्के किसको चाहिये ये?"

उन दोनों में से बड़ा भाई तुरन्त बोला — "मुझे चाहिये।"

उस बूढ़े आदमी ने फिर अपनी दूसरी जेब में हाथ डाला और सूरज की तरह चमकता हुआ एक बेशकीमती रत्न निकाला और फिर से दोनों से पूछा — "तुम लोगों में से किसको चाहिये यह रत्न?"

---

[5] Two Brothers and a White-Bearded Man - folktale from Europe . Adapted from the Web Site : http://www.worldoftales.com/European_folktales/European_folktale_1.html

जल्दी से बड़ा भाई फिर बोला — "मुझे चाहिये यह रत्न।" बूढ़े ने वह रत्न भी उस बड़े भाई को दे दिया।

उस बूढ़े के पास एक बड़ा सा थैला था जो उसकी कमर पर लदा था। उसने वह थैला उतार कर नीचे रखा और दोनों से पूछा — "तुममें से कौन यह थैला गॉव तक ले जाने में मेरी सहायता करेगा?"

इस बार बड़ा भाई तो चुप रहा पर छोटे भाई ने अपनी कमीज की बॉहें ऊपर कीं और उसका वह थैला उठाने के लिये झुका तो बूढ़ा हॅसा और बोला — "मेरे बेटे, इस थैले को और इसमें जो कुछ भी है वह भी सब तुम ले जाओ। वह सब तुम्हारा है।"

छोटा भाई बोला — "पर यह थैला तो मेरा नहीं है।"

बूढ़ा बोला — "ले जाओ, ले जाओ। यह थैला मेरी तरफ से तुम्हारे लिये एक भेंट है क्योंकि तुम मेरी सहायता के लिये तैयार हो गये।"

छोटे भाई ने वह थैला खोला तो वह क्या देखता है कि वह थैला तो बेशकीमती रत्नों से पूरा भरा हुआ है।

उसने उस बूढ़े आदमी को धन्यवाद देने के लिये अपना सिर उठाया पर उस बूढ़े आदमी का तो कहीं पता ही नहीं था। वह तो गायब हो गया था।

4 रफू करने वाली सुई[6]

एक समय की बात है कि एक रफू करने वाली सुई थी। वह बहुत चिकनी और बहुत बारीक थी इसलिये वह अपने आपको सबसे बढ़िया किस्म की सुई मानती थी।

जैसे ही उँगलियाँ उसे सिलाई की टोकरी से निकालतीं वह बोलती — "मुझे सँभाल कर रखना क्योंकि अगर मैं गिर गयी तो मैं फिर नहीं मिलूँगी। मैं इतनी बारीक हूँ कि दिखायी भी नहीं दूँगी।"

उँगलियाँ कहतीं — "अच्छा, तुम ऐसा सोचती हो?"

"अच्छा अच्छा, मुझे रास्ता तो दो। मेरे पीछे मेरी पोशाक भी आ रही है।" सुई ने घमंड से कहा और बड़ी शान से अपने पीछे लम्बे धागे को खींचती हुई आगे चल दी।

उँगलियों ने उस सुई को रसोइये के स्लिपर की ओर बढ़ाया क्योंकि वे टूट गये थे। सुई ने मुँह बनाते हुए कहा — "मुझ जैसी कोमल सुई से इतना भारी काम? इस चमड़े तो मैं कभी भी नहीं घुस सकती, मैं तो टूट जाऊँगी।"

और जैसे ही उँगलियों ने उसको उस स्लिपर में घुसाया तो वह तो सचमुच ही टूट गयी।

---

[6] Darning Needle – a folktale from Europe.
[My Note – Darning needle is a very thin and small needle.]

सुई चिल्लायी — "मैंने कहा था न कि मैं बहुत कोमल हूँ मैं टूट जाऊँगी।"

उँगलियों ने सोचा अब तो यह खत्म हो गयी लेकिन रसोइये ने उसके टूटे सिरे पर छोटा सा लाख का टुकड़ा चिपका दिया और उसे अपनी पोशाक में सामने की ओर घुसा लिया।

सुई फिर शान से बोली — "अहा, अब तो मैं ब्रूच[7] बन गयी। मैं जानती हूँ कि मैं हमेशा बड़े कामों के लिये इस्तेमाल की जाती हूँ।" वह रसोइये के सीने पर आराम से बैठी थी।

उसने अपनी पड़ोसन पिन से पूछा — "क्या तुम सोने की बनी हो? बड़ी सुन्दर लग रही हो और क्या तुम्हारा सिर भी अपना है, मगर है छोटा सा, शायद कुछ समय बाद बड़ा हो जाये। मुझे मालूम है कि हर एक के सिर पर लाख का मुकुट नहीं होता।"

और यह कहते कहते वह कुछ और घमंड में भर गयी और फिर उसने अपने आपको तान कर खींच लिया। पर यह क्या? जैसे ही उसने अपने आपको खींचा तो वह तो रसोइये की पोशाक से निकल कर रसोई के सिंक में जा गिरी क्योंकि रसोइया उस समय सिंक साफ कर रहा था।

"शायद मैं सफर कर रही हूँ। मुझे अपने ऊपर पूरा भरोसा है कि मैं खोऊँगी नहीं।" पर वह तो पहले ही खो चुकी थी।

[7] Brooch – a decorative piece to adorn the dress. See its picture above.

सिंक में से होती हुई वह गटर में पहुँच गयी। गटर में पहुँचते ही वह बोली — "मैं अच्छी तरह जानती हूँ कि मैं इस दुनियाँ के लिये कुछ ज़रा ज़्यादा ही कोमल हूँ।"

मगर वह घबरायी नहीं। बहुत सी चीज़ें उसके ऊपर से तैरती चली जा रहीं थीं, डंडियाँ, तिनके, पुराने अखबारों के टुकड़े।

"अरे ये सब चीज़ें कैसी तैरती हुई चली जा रही हैं। क्या ये जानती हैं कि इनके नीचे क्या है? शायद ये नहीं जानती होंगी कि मैं यहाँ बैठी हूँ। उस तिनके को देखो जो बराबर घूमे जा रहा है, घूमे जा रहा है, घूमे जा रहा है।

दोस्त, तुम अपने आप पर इतने खुश न हो, अभी तुम किसी पत्थर से भी टकरा सकते हो, और वह अखबार के टुकड़े, उन पर लिखे शब्द तो लोग कबके भुला चुके होंगे पर अखबार का यह टुकड़ा तो इस तरह फैला हुआ जा रहा है मानो अभी नयी ताजी खबर ले कर आया हो। मैं तो यहाँ शान्ति और धीरज से बैठी अच्छी।"

एक दिन उस सुई ने अपने पास कुछ चमकता हुआ देखा। उसको विश्वास था कि वह हीरा ही होगा लेकिन असल में वह टूटी हुई शीशी का एक काँच का टुकड़ा था लेकिन वह क्योंकि बहुत ज़ोर से चमक रहा था सो सुई अपने आपको उससे बात करने से न रोक सकी।

उसने उसको अपना परिचय बूच कह कर दिया और बोली — "तुम तो कोई हीरे लगते हो।"

"हॉ, हूँ तो मैं कुछ कुछ उसी जाति का।" सो दोनों के दिल में एक दूसरे के लिये इज़्ज़त बढ़ गयी।

उन्होंने आदमियों के बुरे बर्तावों पर बात करनी शुरू की। पहले सुई बोली — "एक बार मैं एक भली सी स्त्री की सिलाई की टोकरी में रहती थी। यह स्त्री रसोई बनाती थी। उसके दोनों हाथों में पॉच पॉच उँगलियॉ थीं। वही मेरी देखभाल करती थीं। वे कभी मुझे उठातीं, कभी मुझे फिर टोकरी में रख देतीं।"

कॉच के टुकड़े ने पूछा — "ये तो बताओ कि वे चमकती भी थीं कि नहीं?"

"नहीं, वे चमकती तो नहीं थीं पर वे पॉच बहिनें थीं और उनका पारिवारिक नाम[8] उँगलियॉ था। वे पास पास सीधी खड़ी रहती थीं। लेकिन उन सबकी लम्बाई एक दूसरे की लम्बाई से अलग थी।

उनमें से एक का नाम अँगूठा था। वह छोटी और मोटी थी। उसकी कमर में एक ही जोड़ था और वह केवल कमर से ही मुड़ सकती थी पर फिर भी उसका दावा था कि उसके बिना आदमी बेकार है और बिना उसके वह कभी सिपाही नहीं बन सकता।

[8] Family name or surname

दूसरी उँगली तर्जनी उँगली थी और वह हमेशा ही दूसरों के कामों में टाँग अड़ाती थी और उनकी तरफ इशारा किया करती थी। उसका कहना था कि अगर वह न हो तो कोई लिख ही नहीं सकता था।

बीच की उँगली मध्यमा उँगली थी। वह उन सब उँगलियों में सबसे लम्बी थी और इसका उसे बड़ा घमंड था। चौथी थी अनामिका। उसकी कमर में एक छल्ला पड़ा रहता था। तुम सोच सकते हो कि वह उस छल्ले को पहन कर कितनी शानदार लगती होगी।

पाँचवीं जो सबसे छोटी थी, वह सुबह से शाम तक कोई काम नहीं करती थी पर फिर भी वह चाहती थी कि उसकी हर समय प्रशंसा की जाये।

मैं तो उनसे तंग आ गयी थी इसलिये मैंने उन्हें छोड़ने की ठान ली। मैंने अपने आपको एक सिंक में गिरा लिया और यहाँ आ गयी। और यहाँ देखो न हम दोनों ही चमक रहे हैं।"

इसी समय पानी का एक बहाव आया और वह काँच का टुकड़ा सुई की नजरों से ओझल हो गया। "अरे वह तो चला गया, कोई बात नहीं मैं यहाँ शान्ति से बैठूँगी।" कह कर सुई गहरे विचारों में डूब गयी।

"मैं इतनी सुन्दर हूँ कि मुझे तो सूरज की किरन से पैदा होना चाहिये था। मैंने यह अक्सर देखा है कि मैं कहीं भी हूँ सूरज की

किरनें मुझे किसी न किसी तरह ढूँढ ही लेती हैं जबकि मेरी माँ मुझे नहीं खोज सकती।"

एक दिन सड़क से कुछ आदमी गटर में झाँक रहे थे। कभी उन्हें कोई पुरानी कील मिल जाती तो कभी कोई खोया हुआ सिक्का।

एक बोला — "ओह, यह सुई देखो, कितनी गन्दी और पुरानी।"

"मैं गन्दी और पुरानी नहीं सुन्दर और चिकनी हूँ।" सुई ने हालाँकि यह बहुत ज़ोर से कहा था पर किसी ने सुना ही नहीं। उसका लाख का मुकुट कहीं खो गया था और वहाँ अब उसका काला सिरा निकल आया था।

एक लड़का चिल्लाया — "वह देखो, अंडे का एक खोल बहता चला आ रहा है।"

उसने वह सुई ली और उसकी नोक को उस खोल में डाल कर उस खोल को उठा लिया। सुई फुसफुसायी — "ये सफेद दीवारें मेरे काले शरीर को चमकाने के लिये बहुत ठीक हैं। मुझे विश्वास है कि मुझे समुद्री बीमारी नहीं होगी नहीं तो मैं तो टूट ही जाऊँगी।"

मगर न तो उसे कोई समुद्री बीमारी हुई और न वह टूटी। "यही तो फायदा है लोहे के पेट का। अब मैं ठीक हूँ। वही ज़्यादा कोमल है जो ज़्यादा दिन तक ज़िन्दा रह सकता है।

फड़ाक, अंडे का खोल चिल्ला कर टूट गया क्योंकि उसके ऊपर से एक भारी गाड़ी गुजर गयी थी।

"उफ़, कितना भारी वजन था इस अंडे के ऊपर। इस वजन से तो मुझे लगता है कि मैं तो बीमार हो जाऊँगी और या फिर टूट जाऊँगी।" लेकिन उतने भारी वजन से भी वह सुई न तो टूटी और न ही वह बीमार पड़ी। वह वहीं लेटी रही।

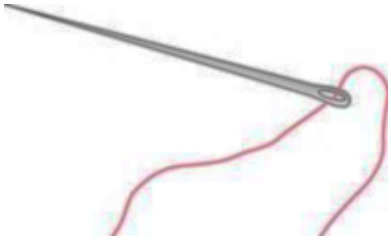

5 गरुड़ों का वायदा[9]

बहुत ज़ोर की ठंड पड़ रही थी। ऐसी सर्दी में कोई भी जीव पहाड़ों पर नहीं रह सकता था। सभी चट्टानों और पेड़ों पर घने कोहरे की पर्त जमी पड़ी थी। इसलिये पहाड़ों पर रहने वाले सभी जानवर, जंगली बिल्ला, भालू आदि पहाड़ों से नीचे आ गये थे।

इन्हीं जानवरों में एक मादा गरुड़[10] भी थी जो घाटी में खरगोशों के पास मदद माँगने आ पहुँची। उसने खरगोशों के घर के पास खड़े हो कर पूछा — "प्यारे खरगोश भाइयों, बाहर बहुत सर्दी है, क्या मैं अन्दर आ सकती हूँ?"

सबसे बूढ़े खरगोश ने अपना सिर बाहर निकाला तो सामने एक अजनबी को खड़ा देखा। उसने गरुड़ को पहले कभी नहीं देखा था। वह बोला — "ओ अजनबी, हम तुमको इस ठंड से छुटकारा तो दिला सकते हैं अगर तुम यह वायदा करो कि तुम हमें कभी कोई नुकसान नहीं पहुँचाओगे।"

मादा गरुड़ ने कसम खायी कि वह हमेशा उनके प्रति वफादार रहेगी और उनको कभी कोई नुकसान नहीं पहुँचायेगी। सो खरगोश

[9] Promise of Eagles – a folktale of Europe

[10] Translated for the word "Eagle". See its picture above.

ने उसको अन्दर बुला लिया और उस गरुड़ ने सारी सर्दियॉ आराम से खरगोश के घर में गुजारीं।

उसी समय एक नर गरुड़ भी पहाड़ों से उतर कर नीचे आया और उसने मुर्गियों के घर के दरवाजे पर खड़े हो कर कहा — "प्यारी मुर्गियों, बाहर बहुत सर्दी है, क्या मैं सर्दी से बचने के लिये अन्दर आ सकता हूँ?"

सबसे बड़े मुर्गे ने अपना सिर बाहर निकाला और एक अजनबी को खड़ा देखा और क्योंकि उसने भी गरुड़ को पहले कभी नहीं देखा था बोला — "ओ अजनबी, हम तुमको इस ठंड से छुटकारा तो दिला सकते हैं अगर तुम यह वायदा करो कि तुम हमें कभी कोई नुकसान नहीं पहुँचाओगे।"

नर गरुड़ ने भी इस बात की कसम खायी कि वह हमेशा उनके प्रति वफादार रहेगा और वह उनको कभी भी कोई भी नुकसान नहीं पहुँचायेगा। सो उस मुर्गे ने उसको अन्दर बुला लिया और उस नर गरुड़ ने भी सारी सर्दियॉ आराम से उन मुर्गों के घर में गुजारीं।

कुछ समय बाद सर्दियॉ खत्म हो गयीं और वसन्त आ गया और सूरज फिर सोने की तरह चमकने लगा तो नर गरुड़ उड़ गया। सभी मुर्गे मुर्गियॉ उसके पंखों की फड़फड़ाहट से डर गये।

मगर नर गरुड़ ने ऊपर से ही कहा — "प्यारी मुर्गियों, मैं तुम्हारे इस उपकार को कभी नहीं भूलूँगा और अपने वायदे के अनुसार

हमेशा ही तुम्हारा दोस्त रहूँगा।" और तब से सच में ही वह उनका दोस्त रहा। इस बीच में उसने केवल खरगोशों का शिकार किया।

उसी समय जब वसन्त आया और सूरज फिर सोने की तरह चमकने लगा तो मादा गरुड़ भी उड़ गयी। सारे खरगोश उसके पंखों की फड़फड़ाहट से डर गये मगर मादा गरुड़ ने भी ऊपर से ही कहा — "प्यारे खरगोश भाइयो, मैं तुम्हारे इस उपकार को कभी नहीं भूलूँगी और अपने वायदे के अनुसार हमेशा ही तुम्हारी दोस्त बनी रहूँगी।"

और तब से सच में ही वह उनकी दोस्त बनी रही। इस बीच में उसने केवल मुर्गियों का ही शिकार किया।

अब मादा गरुड़ बहुत सुन्दर हो गयी थी। पहाड़ के सारे नर गरुड़ उससे शादी करने को इच्छुक थे। वे उसके लिये स्वादिष्ट मुर्गियों का मॉस लाते थे परन्तु वह तो मुर्गियॉ खा खा कर ऊब चुकी थी इसलिये उसने भूख हड़ताल कर दी और पहाड़ की और ज़्यादा ऊँची चोटियों पर चली गयी।

और जब इस कहानी के नायक नर गरुड़ को उस मादा गरुड़ के बारे में पता चला तो वह उसको खुश करने के लिये खरगोश ले आया।

आश्चर्य, उसकी खोयी हुई भूख वापस आ गयी। उसने तुरन्त ही उससे खरगोश ले लिया और दोनों ने मिल कर अपना घर बसाया

और करीब करीब एक सप्ताह तक वह नर गरुड़ अपनी पत्नी को स्वादिष्ट खरगोश खिलाता रहा।

हफ्ते भर तक मादा गरुड़ ने देखा कि उसका पति बेमन से खाना खाता था तो एक दिन उसने अपने पति से पूछा — 'प्रिये, क्या बात है, क्या तुम्हें ठंड लग रही है? ऐसा करते हैं कि आज खाना लाने मैं जाती हूँ और तुम घर में आराम करो।"

ऐसा कह कर मादा गरुड़ तुरन्त ही घाटी से एक मुर्गी मार कर ले आयी जिसे उसने और उसके पति दोनों ने बड़े प्रेम से खाया क्योंकि वह खुद भी कई दिनों से खरगोश खा खा कर ऊब चुकी थी।

अब क्या था घर में कभी खरगोश आता तो कभी मुर्गी। दोनों ने इस तरह का खाना पहले कभी नहीं खाया था। वे लोग खाने का पूरा आनन्द ले रहे थे।

इस तरह न तो मुर्गियॉ ही शिकायत कर सकीं कि नर गरुड़ ने अपना वायदा नहीं निभाया और न खरगोश ही कुछ कह सके कि मादा गरुड़ ने अपना वायदा नहीं निभाया। दोनों गरुड़ों ने अपने अपने वायदे को निभाया।

6 राजकुमारी और मटर का दाना[11]

बहुत पुरानी बात है कि यूरोप के एक देश का राजकुमार एक असली राजकुमारी से शादी करना चाहता था सो वह उसकी खोज में दुनियॉ भर में घूमता रहा।

अब दुनियॉ में राजकुमारियों की क्या कमी पर यह कहना बहुत मुश्किल था कि उनमें से असली राजकुमारी कौन सी है।

हर बार राजकुमार को यही लगता कि उसे असली राजकुमारी मिल गयी है परन्तु हर बार वह गलती पर होता। जब वह असली राजकुमारी न पा सका तो वह घर लौट गया।

कुछ समय बीत गया तो एक रात बहुत ज़ोर का तूफान आया, बादल गरजे, बिजली चमकी और मूसलाधार बारिश होने लगी। यकायक शहर के दरवाजे पर खटखट हुई तो राजा खुद ही दरवाजा खोलने नीचे गया।

दरवाजे के बाहर एक राजकुमारी खड़ी थी मगर उसकी हालत बहुत खराब थी। उसके कपड़े भीग गये थे, बालों से पानी टपक रहा था, जूतों से भी पानी टपक टपक कर बाहर आ रहा था।

[11] The Princess and the Pea – a folktale from Europe.

हालॉकि देखने में तो ऐसा नहीं लगता था कि वह कोई राजकुमारी है परन्तु फिर भी वह यही कहे जा रही थी कि वह एक राजकुमारी है।

राजा उसको ऊपर ले आया तो रानी ने कहा कि यह हम खुद पता लगा लेंगे कि वह सच बोल रही है या झूठ।

रानी ने किसी से कुछ नहीं कहा और उस राजकुमारी को सीधी मेहमानों के कमरे में ले गयी और वहॉ बिस्तर के सारे गद्दे हटा कर उनके नीचे मटर का एक छोटा सा दाना रख दिया।

फिर उसने उसके ऊपर बीस गद्दे लगा दिये और उन बीस गद्दों के ऊपर बीस मोटी मुलायम चादरें बिछा दीं। ऐसा कर के वह राजकुमारी को बुला लायी और उसको उस बिस्तर पर सुला दिया।

सुबह रानी ने राजकुमारी से पूछा — "बेटी, क्या तुमको रात को नींद ठीक से आयी? क्या तुम आराम से सो पायीं?"

राजकुमारी ज़ोर से बोली — "सोयी? मुझे तो झपकी भी नहीं लगी। मैं रात भर अपनी ऑखें ही बन्द नहीं कर सकी। भगवान जाने मेरे बिस्तर में क्या था कि मुझे सारी रात यही लगता रहा कि मैं पत्थरों पर सोयी हुई हूॅ। मैं सिर से पैर तक नीली पड़ गयी हूॅ। मेरी रात तो बहुत ही बुरी कटी।"

रानी के लिये उसके राजकुमारी होने का यह सबूत काफी था। अब वे सब जान गये कि यह असली राजकुमारी है नहीं तो वह बीस

गद्दों और बीस मोटी चादरों के नीचे मटर का दाना कैसे पहचान पाती।

अब राजकुमार को असली राजकुमारी मिल गयी थी सो उसकी शादी उस राजकुमारी से कर दी गयी और वे दोनों सुख से रहने लगे।

मटर का वह दाना एक शीशे के बक्से में बन्द कर राज घराने के अजायबघर में रख दिया गया। वह अभी भी शायद वहीं होगा अगर उसे किसी ने उसे चुरा न लिया हो तो।

7 राजकुमार और सेब[12]

बहुत पुरानी बात है कि यूरोप का एक राजकुमार किसी ऐसी लड़की से शादी करना चाहता था जिसके सेब जैसे लाल लाल गाल हों। सेब के बीज जैसी कत्थई ऑखें हों और सेब के रस जैसा मीठा स्वभाव हो।

लेकिन ऐसी लड़की उसको अपने राज्य में कोई मिली ही नहीं इसलिये वह ऐसी ही एक लड़की की खोज में दूसरे देश को चल दिया।

वह घोड़े पर सवार था। तीन दिन और तीन रात की लगातार सवारी के बाद वह एक ऐसी जगह पहुॅचा जहॉ छोटी छोटी झाड़ियों की एक कतार लगी थी।

उस कतार में एक झाड़ी के नीचे एक बालों वाली टॉग बाहर निकली हुई थी। वह वहॉ रुक गया। तभी उसने एक आवाज सुनी — "उफ़ मेरी बदकिस्मती, मैं यहॉ चिपक गया हूॅ।"

राजकुमार ने पूछा — "तुम कौन हो?"

वही आवाज फिर बोली — "मेरी टॉग खींचो तभी तुमको पता चलेगा कि मैं "मैं" हूॅ।"

[12] A Prince and the Apple – a folktale from Western Europe

"अच्छा" कह कर राजकुमार ने ज़ोर लगा कर उसकी वह टॉग खींची तो एक छोटा आदमी जिसका शरीर गोल था और वह लाल और हरे रंग के कपड़े पहने था बाहर निकल आया। उसने राजकुमार को अपने को बाहर निकालने के लिये धन्यवाद दिया।

राजकुमार ने पूछा — "मुझे तुम्हारी सहायता कर के बड़ी खुशी हुई पर तुम इन झाड़ियों में क्यों पड़े थे, यह तो बताओ।"

वह आदमी बोला — "एक राक्षस ने मेरी बेटी को चुरा लिया है। जैसे ही उसने मेरी बेटी को यहॉ आ कर पकड़ा, तो मैं यहॉ आ कर छिप गया।"

राजकुमार ने पूछा — "तो क्या वह तुम्हारी बेटी को यहॉ से उठा कर ले गया है?"

"हॉ, उसने उसको अपनी एक उॅगली और अॅगूठे के बीच में दबाया और ले उड़ा। मैं तो बिल्कुल गूॅगा सा हो गया और खॉस भी न सका।"

"यह तो बड़ा बुरा हुआ। वह उसे किस तरफ ले गया है?"

"वह उसे भूखे कुत्ते, थकी हुई जादूगरनी और खाई के पार बने दरवाजे के उस पार ले गया है।"

ऐसा उस छोटे आदमी ने राजकुमार को बताया।

राजकुमार ने दोहराया — "भूखे कुत्ते, थकी हुई जादूगरनी और खाई के पार बने दरवाजे के उस पार। मैं तुरन्त ही जाता हूँ और तुम्हारी बेटी को ले कर आता हूँ। मगर वह देखने में है कैसी?"

उस आदमी ने जवाब दिया — "गाल उसके सेब जैसे लाल हैं, आँखें उसकी सेब के बीज जैसी कत्थई हैं और स्वभाव उसका सेब के रस जैसा मीठा है। अगर तुम....।"

यह सुनते ही राजकुमार को इन्तजार कहाँ? इसी लड़की की तो तलाश थी उसको। सो वह तो यह जा और वह जा। वह तुरन्त ही अपने घोड़े पर सवार हो गया और दौड़ चला।

वह हवा की गति से भागा जा रहा था कि एक कुत्ते का घर आया। कुत्ता अपने घर से निकल कर भौंकने लगा — "राजकुमार, राजकुमार, तुम कहाँ जा रहे हो?"

राजकुमार बोला — "मैं राक्षस के किले को जा रहा हूँ जहाँ सेब जैसे सुर्ख गाल वाली, सेब के बीज जैसी कत्थई रंग की आँख वाली और सेब के रस जैसे मीठे स्वभाव वाली लड़की कैद है।"

कुत्ता बोला — "मैं बहुत भूखा हूँ। पहले मुझे हड्डी दो तभी मैं तुमको जाने दूँगा।"

राजकुमार बोला — "तुम भूखे हो तो मेरे पास हड्डी तो नहीं है पर मेरा खाना तुम ले सकते हो। यह लो कुछ रोटियाँ और इन्हें खा

कर अपनी भूख मिटाओ।" कह कर राजकुमार ने उसे अपनी सारी रोटियॉ दे दीं।

कुत्ते ने खुशी से वह रोटियॉ खाईं और राजकुमार से बोला — "जाओ राजकुमार, भगवान करे कि तुम उस लड़की को छुड़ाने में कामयाब हो मगर याद रखना अगर तुम्हें वह लड़की कहीं दिखायी न दे तो वहॉ एक सेब रखा होगा वह सेब उठा लेना।"

राजकुमार फिर अपने घोड़े पर चढ़ा और कुत्ते के ऊपर से छलॉग लगा दी। हवा की गति से अपने घोड़े को दौड़ाता हुआ वह जादूगरनी के घर के पास आया।

जादूगरनी ने पूछा — "राजकुमार, तुम कहॉ जा रहे हो?"

राजकुमार ने जवाब दिया — "मैं राक्षस के किले को जा रहा हूॅ जहॉ सेब जैसे सुर्ख गाल वाली, सेब के बीज जैसी कत्थई रंग की ऑख वाली और सेब के रस जैसे मीठे स्वभाव वाली लड़की कैद है।"

जादूगरनी ने कहा — "मुझे सोने के लिये एक कम्बल चाहिये। जब तुम मुझे एक कम्बल दोगे तभी मैं तुम्हें जाने दूॅगी।"

राजकुमार बोला — "तुम थकी हुई हो। मेरे पास कम्बल तो नहीं है पर मेरे पास यह मखमली कोट है यह तुम ले सकती हो, यह लो।" यह कह कर राजकुमार ने उसे अपना लम्बा मखमली कोट उसे दे दिया।

जादूगरनी ने वह लम्बा कोट अपने शरीर के चारों तरफ लपेट लिया और बोली — "अब तुम जा सकते हो राजकुमार। भगवान करे कि तुम उस लड़की को छुड़ाने में कामयाब हो। पर हॉ याद रखना अगर तुम्हें वह लड़की न मिले तो वहॉ एक सेब रखा होगा उसको जरूर उठा लेना।"

राजकुमार जादूगरनी के मकान के ऊपर से छलॉग लगाता हवा की सी तेज़ी के साथ फिर उस लड़की की खोज में चल दिया। और अब आया वह खाई के पार एक बड़े दरवाजे के पास।

"चीं चीं, राजकुमार तुम कहॉ जा रहे हो?" दरवाजे ने पूछा।

"मैं? मैं राक्षस के किले को जा रहा हूँ जहॉ सेब जैसे सुर्ख गाल वाली, सेब के बीज जैसी कत्थई रंग की ऑख वाली और सेब के रस जैसे मीठे स्वभाव वाली लड़की कैद है।" राजकुमार ने कहा।

"चीं चीं, पहले मेरे जोड़ों[13] में तेल लगाओ तभी मैं तुम्हें यहॉ से जाने दूँगा।" दरवाजे ने कहा।

राजकुमार बोला — "ओह, तुम्हारे जोड़ों में तो बहुत जंग लगी है। मेरे पास कोई तेल तो नहीं है, हॉ थोड़ा साबुन है, वही ले लो।" कह कर उसने दरवाजे के जोड़ों में थोड़ा सा साबुन लगा दिया।

[13] Translated for the word "Hinges". See its picture above.

दरवाजा खुश हो कर बोला — "जाओ राजकुमार जाओ। भगवान करे कि तुम उस लड़की को छुड़ाने में कामयाब हो पर एक बात याद रखना अगर तुम्हें वहॉ वह लड़की दिखायी न दे तो वहॉ एक सेब रखा होगा उसको जरूर उठा लेना।"

राजकुमार ने दरवाजे के ऊपर से छलॉग लगायी और फिर घोड़ा नचाता चला गया। आखिर वह राक्षस के किले पर पहुँचा। वह सीधा घोड़े को सीढ़ियॉ चढ़ाता सामने वाले दरवाजे पर पहुँचा।

वह किले के पीछे पहुँचा पर उसे न तो वहॉ कोई राक्षस दिखायी दिया और न ही वह लड़की। वह आगे वाले कमरे में गया पर वहॉ भी उसको कोई दिखायी नहीं दिया।

वह रसोई में गया वहॉ भी उसे न राक्षस दिखायी दिया न वह लड़की। अब वह उस राक्षस के सोने के कमरे में पहुँचा।

वहॉ उसने खर्राटों की आवाज सुनी। उसने अन्दर झॉक कर देखा तो राक्षस गहरी नींद सो रहा था और पास ही एक तश्तरी में एक सेब रखा हुआ था।

तभी राजकुमार को याद आया कि सभी ने उससे क्या कहा था। "हॉ, हॉ अगर तुम्हें वह लड़की वहॉ दिखायी न दे तो वहॉ एक सेब रखा होगा उसको जरूर उठा लेना।"

सो उसने हाथ बढ़ा कर वह सेब उठा लेना चाहा पर उसके छूने से पहले ही वह सेब एक लड़की में बदल गया जिसके गाल सेब की तरह सुर्ख थे और ऑखें सेब के बीजों की तरह कत्थई रंग की थीं।

लड़की ने रो कर कहा — "राजकुमार, मुझे बचा लो।"

राजकुमार बोला — "आओ चलें, मेरा घोड़ा नीचे खड़ा है।" और वे दोनों वहॉ से भाग लिये। राजकुमार ने लड़की को घोड़े पर बिठाया और दौड़ चला।

तभी राक्षस की ऑख खुल गयी। वह वहीं से चिल्लाया — "दरवाजे, दरवाजे, रोको उसे।"

दरवाजा बोला — "मैं नहीं रोकूँगा उसको, उसने मेरे जोड़ों में साबुन लगाया है। राजकुमार, तुम जाओ।" और राजकुमार उस लड़की को ले कर दरवाजे के ऊपर से निकल गया।

अब राक्षस उनके पीछे भागा और चिल्लाया — "जादूगरनी जादूगरनी, उसे रोको, देखो वह जाने न पाये।"

जादूगरनी बोली — "मैं नहीं रोकूँगी उसे, उसने मुझे सोने के लिये मखमली कोट दिया है। राजकुमार, तुम जाओ। भाग जाओ यहॉ से।"

और राजकुमार अपना घोड़ा दौड़ाता हुआ वहॉ से चला गया।

राक्षस अपनी पूरी गति से भाग रहा था। वह फिर चिल्ला कर बोला — "ओ कुत्ते, रोक ले उसको, जाने नहीं देना।"

कुत्ता बोला — "मैं नहीं रोकूँगा उसको। उसने मुझे खाना दिया है। जाओ राजकुमार जाओ।" और राजकुमार आगे बढ़ गया।

जब राक्षस पीछे से आया तो कुत्ते ने उसके पैर में काट लिया और फिर पकड़ लिया।

राजकुमार भागता ही गया और भागता ही गया जब तक कि वह झाड़ियों की कतार नहीं आ गयी जहाँ उस लड़की का पिता छिपा हुआ था।

घोड़े की टाप की आवाज सुन कर वह आदमी फिर से वहीं छिप गया था। राजकुमार ने फिर उसकी टाँग पकड़ कर उसको बाहर निकाला। असल में वह आदमी घोड़े की टाप की आवाज सुन कर डर गया था और फिर से झाड़ियों में छिप गया था।

उसे अपनी बेटी पा कर बड़ी खुशी हुई और राजकुमार के कहने पर उसने अपनी बेटी की शादी राजकुमार से कर दी।

राजकुमार को अपनी मन पसन्द पत्नी मिल गयी थी। वह उसको ले कर खुशी खुशी घर वापस आ गया और उससे शादी कर के आराम से रहने लगा।

8 आधा मुर्गा[14]

यह मज़ेदार लोक कथा यूरोप महाद्वीप के अल्बेनिया देश की लोक कथाओं से ली गयी है।

बुढ़िया चिल्लायी — "ओ आलसी बुड्ढे, अगर तुम इतने आलसी नहीं होते तो शायद हम लोग किसी अच्छे घर में रह रहे होते और हमारे पास बहुत सारा खाना होता। मैं गरीब होने से तो तंग हूँ ही और साथ में तुमसे भी।"

उधर वह बूढ़ा भी अपने आपको आलसी सुनते सुनते तंग आ गया था। असल में तो वह अपने आपको केवल आलसी सुनते सुनते ही नहीं बल्कि अपनी पत्नी की आवाज से ही तंग आ गया था।

सो वह अपनी पत्नी से बोला — "अगर तुम मुझसे इतनी ही तंग हो तो हमारे पास जो कुछ भी है उसका आधा आधा बॉट लो और यहॉ से खिसको।"

बुढ़िया चिल्ला कर बोली — "वाह, यह तो बहुत ही अच्छा विचार है। यह तो आज तुमने सालों में पहली बार कोई काम की बात की है।"

---

[14] Half Rooster – a folktale from Albania, Europe. Adapted from the Web Site : http://www.themuralman.com/albania/albania_folktale.htm
Collected and retold by Phillip Martin

उन बूढ़े और बुढ़िया के लिये घर की चीज़ों को आधा आधा बॉटना कोई मुश्किल काम नहीं था। उनके पास एक बिल्ला था और एक मुर्गा था। बुढ़िया ने बिल्ला उठाया और दरवाजे में से तूफान की तरह से बाहर निकल गयी।

उसने सोचा — "कम से कम यह बिल्ला मेरे लिये चिड़ियें तो पकड़ेगा और मैं कुछ पका पाऊँगी। यह मुर्गा तो न कुछ पकड़ सकता है और न ही अंडे दे सकता है।"

इस मामले में वह बुढ़िया ठीक सोचती थी। बुढ़िया के जाने के बाद तो अब उसके पति के पास तो खाने के लिये कुछ भी नहीं बचा था।

एक दिन पति इतना ज़्यादा भूखा था कि उसको अपने मुर्गे से कहना पड़ा — "मेरे दोस्त, मुझे बहुत अफसोस है पर मेरे पास अब और कोई चारा नहीं है और मुझे आज तुमको खाना पड़ रहा है।"

मुर्गा बोला कि वह समझ गया। पर बूढ़े की बात उसको बिल्कुल भी अच्छा नहीं लगी पर वह क्या करता। उसका मालिक तो वह बूढ़ा ही था न। सो बूढ़े ने अपनी कुल्हाड़ी से मुर्गे को बीच में से काट दिया।

अब उसने आधा मुर्गा तो पका कर खा लिया और दूसरा आधा अपने पालतू की तरह से रखा रहने दिया। उस दिन से लोग उसको आधा मुर्गा पुकारने लगे।

उस आधे मुर्गे के लिये एक टॉग पर इधर से उधर कूदते रहना कोई मुश्किल काम नहीं था। पर वह इतना जरूर जान गया था कि अगर वह इस भूखे बूढ़े के साथ रहा था तो एक दिन वह फिर भूखा हो जायेगा और उस बचे हुए आधे को भी खा जायेगा।

सो उसने सोचा कि अब उसको दुनियॉ में कहीं बाहर जा कर अपनी किस्मत आजमानी चाहिये। उसने यह भी सोचा जब मैं काफी सोना कमा लूँगा तब मैं अपने घर फिर वापस आ जाऊँगा।

सो यही सोच कर वह घर से बाहर निकल गया और कूद कूद कर एक तालाब के किनारे पहुँच गया। वहॉ उसने देखा कि उसका दोस्त मेंढक लिली के एक पत्ते पर बैठा हुआ है

वह उससे चिल्ला कर बोला — "मैं अपनी किस्मत आजमाने निकला हूँ। मुझे मशहूर होना है। और तुम क्योंकि मेरे दोस्त हो तो तुम भी वैसा ही क्यों नहीं करते हो?"

मेंढक को दोबारा कहने की जरूरत नहीं पड़ी वह बोला — "चलो चलो यह तो बड़ा अच्छा है। दोनों मिल कर दुनियॉ देखते हैं। दोनों थोड़ा आनन्द लेते हैं। दो दोस्तों का साथ साथ यात्रा करना एक आदमी के अकेले यात्रा करने से ज़्यादा अच्छा है।"

यह कह कर मेंढक अपने लिली के पत्ते से कूद कर पानी में तैरता हुआ किनारे पर आ गया। वह मुर्गे के पंख के नीचे और उसके पेट के ऊपर आराम से बैठ गया।

आधे मुर्गे ने अपनी यात्रा जारी रखी। कूदते कूदते मुर्गे को एक लोमड़ा मिला। हालॉकि लोमड़ा काफी ऊपर एक चट्टान पर बैठा हुआ था फिर भी उसने मुर्गे के पंख में से बाहर निकलती एक हरे रंग की टॉग देख ली।

लोमड़ा बोला — "क्या यह मेंढक है जो तुम्हारे पंख के नीचे छिपा बैठा है? तुम लोग क्या करने जा रहे हो?"

आधे मुर्गे ने चट्टान के ऊपर बैठे लोमड़े को देखा और कुकड़ूकू की आवाज लगायी — "मैं अपनी किस्मत बनाने चला हूॅ लोमड़े भाई। मैं दुनियॉ में मशहूर होने चला हूॅ। तुम मेरे दोस्त हो तुम भी वैसा ही क्यों नहीं करते, आओ न?"

उस आधे मुर्गे को लोमड़े को भी दोबारा पूछने की जरूरत नहीं पड़ी। लोमड़ा बोला — "चलो हम सब दुनियॉ देखते हैं। थोड़ा आनन्द लेते हैं। तीन दोस्तों का साथ साथ यात्रा करना एक आदमी के अकेले यात्रा करने से ज़्यादा अच्छा है।"

सो लोमड़ा भी अपनी चट्टान से कूद कर एक आराम वाली जगह में बैठ गया – मुर्गे के पंख के नीचे और उसके पेट के ऊपर।

आधे मुर्गे ने फिर अपनी यात्रा शुरू कर दी। चलते चलते वह एक गुफा के पास आ गया। वहॉ उसने देखा कि पीली ऑखों की एक जोड़ी उसको घूर रही है।

वे ऑखें किसी को भी डरा सकती थी पर आधे मुर्गे को नहीं। वे ऑखें उसके दोस्त भेड़िये की थीं। उस गहरी गुफा में अपने घर

से भेड़िये ने देखा कि आधे मुर्गे के पंखों में से हरे और लाल रंग का मॉस झॉक रहा है।

यह देख कर भेड़िया मुस्कुरा दिया और मुर्गे से पूछा — "अरे ओ आधे मुर्गे, तुम ये लोमड़े और मेंढक को अपने पंखों में छिपाये क्या कर रहे हो?"

आधे मुर्गे ने गुफा के अँधेरे में झॉका और बोला — "कुकडूँ कू ओ भेड़िये भाई, मैं अपनी किस्मत बनाने चला हूँ। मैं दुनियॉ में मशहूर होने चला हूँ। तुम मेरे दोस्त हो तुम भी वैसा ही क्यों नहीं करते?"

भेड़िये को भी दोबारा कहने की जरूरत नहीं पड़ी। वह भी अपनी गुफा से बाहर निकल आया और बोला — "चलो हम सब दुनियॉ देखते हैं। थोड़ा आनन्द लेते हैं। चार दोस्तों का साथ साथ यात्रा करना एक आदमी के अकेले यात्रा करने से ज़्यादा अच्छा है।"

उसकी पीली ऑखें दिन के उजाले में इतनी भयानक दिखायी नहीं दे रहीं थीं जितनी कि उस गुफा के अँधेरे में। सो भेड़िया भी अपनी गुफा से निकल कर एक आराम वाली जगह में बैठ गया – आधे मुर्गे के पंख के नीचे और उसके पेट के ऊपर।

आधा मुर्गा फिर कूदता हुआ अपने अमीर बनने और मशहूर होने की यात्रा पर आगे चला। अब वह एक जानवर रखने के बाड़े के पास आ गया।

वहॉ उसने एक गुलाबी नाक भूसे में से बाहर निकली हुई देखी। वह पहचान गया कि वह नाक उसके प्यारे दोस्त चूहे की है।

चूहा उस भूसे के ढेर में से बाहर निकल कर आया और आधे मुर्गे के फूले हुए पंखों की तरफ घूरा और बोला — "अगर मैं गलत नहीं हूॅ तो तुम्हारे पंखों के नीचे मेंढक, लोमड़ा और भेड़िया हैं। तुम सब यहॉ क्या कर रहे हो भाई लोगों?"

आधे मुर्गे ने भूसे से निकले हुए अपने दोस्त चूहे की तरफ देखा और बोला — "कुॅकडू कू प्यारे चूहे, मैं अपनी किस्मत बनाने चला हूॅ। मैं दुनियॉ में मशहूर होने चला हूॅ। तुम मेरे दोस्त हो तुम भी वैसा ही क्यों नहीं करते?"

चूहे को भी दोबारा कहने की जरूरत नहीं पड़ी। उसने अपने बाड़े में भूसा छोड़ा और बोला — "चलो हम सब दुनियॉ देखते हैं। थोड़ा आनन्द लेते हैं। पॉच दोस्तों का साथ साथ यात्रा करना एक आदमी के अकेले यात्रा करने से ज़्यादा अच्छा है।"

वह भी आराम से एक जगह में बैठ गया – आधे मुर्गे के पंख के नीचे और उसके पेट के ऊपर। पर अब वहॉ उस पंख के नीचे किसी और दोस्त के लिये कोई जगह नहीं थी।

आधा मुर्गा फिर कूदता हुआ अपने अमीर बनने और मशहूर होने की यात्रा पर आगे चला।

एक दिन दोस्तों की यह मंडली एक सब्जी के बागीचे से गुजरी। सब सब्जियॉ तोड़ने लायक थीं और आधे मुर्गे को भूख लगी थी। वह चिल्लाया – "कुकडूँ कू। देखो कितना सारा खाना और यह सब केवल मेरे लिये है।"

पर उस बगीचे का मालिक तो वैसा नहीं सोचता था और उस बगीचे का मालिक था वहॉ का राजा। राजा ने अपने नौकरों को उस मुर्गे को पकड़ने का हुक्म दे दिया। उसने अपने नौकरों से कहा कि वह आधा मुर्गा जरूर है पर देखने में बड़ा स्वादिष्ट लगता है।

नौकर उस मुर्गे को पकड़ने दौड़े और वह मुर्गा उनसे बचने के लिये भागा। इस भाग दौड़ में राजा के बहुत सारे बढ़िया टमाटर कुचल गये।

नौकरों के भारी जूतों के नीचे आ कर राजा की स्ट्रौबैरी[15] की क्यारियॉ की क्यारियॉ बर्बाद हो गयीं।

जब बन्द गोभी का आखिरी पौधा कट गया तभी कहीं जा कर वह मुर्गा पकड़ा जा सका। राजा ने चिल्ला कर कहा — "इस मुर्गे को सूप बनाने वाले बर्तन में डाल दो। और उसमें कुछ टमाटर और एक बन्द गोभी डालना मत भूलना।"

[15] Strawberry – berry is a kind of wild fruit, normally without seed. There are several types of berries – strawberries, blue berries, black berries, cranberries etc. See its picture above.

आधे मुर्गे को पता चल गया कि वह तो बड़ी भारी मुसीबत में फॅस गया है। नीचे आग की लपटें उठ रही थीं और बर्तन का पानी बहुत ज़ोर से गर्म होता जा रहा था।

आधे मुर्गे ने मेंढक की तरफ देखा और चिल्लाया — "कुकड़ूकू। अगर कभी मुझे दोस्त की जरूरत थी तो वह अब है। मेंढक, मेरे दोस्त, क्या तुम मेरी कुछ सहायता कर सकते हो?"

मेंढक को मालूम था कि उसे क्या करना है। उसने उस बर्तन का सारा पानी पी लिया और बाकी जो कुछ उसमें बचा उसे उसने बर्तन उलटा कर के आग के ऊपर डाल दिया जिससे वह आग पूरी तरीके से बुझ गयी।

गीला सा मुर्गा उस बर्तन में से बाहर निकल आया और कूद कर बाहर भाग गया।

पर वह राजा को नौकरों से बच नहीं सका। वे उसके लिये बहुत तेज़ थे। उन्होंने तुरन्त ही उस मुर्गे को फिर से पकड़ लिया और अबकी बार उसे मुर्गे के बाड़े में फेंक दिया।

यहॉ भी आधा मुर्गा मुसीबत में था। यहॉ की मुर्गियॉ बहुत अच्छे स्वभाव की नहीं थीं। वे कभी भी उसको चोंच मार सकती थीं। और अगर एक बार उन्होंने उसको चोंच मारना शुरू कर दिया तो बस फिर तो वे उसको मार कर ही छोड़तीं।

सो मुर्गे ने लोमड़े की तरफ देखा और बोला — "कुकडूँ कूँ। अगर कभी मुझे दोस्त की जरूरत थी तो वह अब है। ओ लोमड़े, मेरे दोस्त, क्या तुम मेरी कुछ सहायता कर सकते हो?"

लोमड़े को मालूम था कि उसे क्या करना है। उसने अपने होठ चाटे और उन मुर्गियों की तरफ देख कर मुस्कुराया। पर वे मुर्गियॉ भी बेवकूफ नहीं थीं। उनको मालूम था कि लोमड़े को मुर्गियॉ खाना कितना पसन्द था।

इससे पहले कि लोमड़े की मुर्गियों की दावत हो मुर्गियों ने बाड़े की चहारदीवारी में एक बड़ा सा छेद बना लिया जिसमें से वे सब निकल कर भाग गयीं और साथ में आधा मुर्गा भी।

पर एक बार राजा के नौकरों ने आधे मुर्गे को फिर से पकड़ लिया। इस बार उन्होंने उसे राजा के घोड़ों के अस्तबल में फेंक दिया। उन्होंने सोचा कि ये घोड़े इसको अच्छा सबक सिखायेंगे।

एक बार फिर मुर्गे को पता चल गया कि वह बहुत बड़ी मुसीबत में फॅस गया है। घोड़ों के खुर उसके पास आते जा रहे थे। किसी भी समय वे उसको कुचल कर मार सकते थे।

इस बार उसने भेड़िये की तरफ देखा और बोला — "कुकडूँ कूँ। अगर कभी मुझे दोस्त की जरूरत थी तो वह अब है। भेड़िये, मेरे दोस्त, क्या तुम मेरी कुछ सहायता कर सकते हो?"

भेड़िये को मालूम था कि उसको क्या करना है। वह तो उसकी सहायता करने के लिये बड़ी खुशी से तैयार था। उसका तो मजा

आ गया था। वह तुरन्त अस्तबल में घुसा और घोड़ों के ऊपर टूट पड़ा।

पर कोई भी घोड़ा भेड़िये का शिकार नहीं होना चाहता था सो उन्होंने अपने अस्तबल के चारों तरफ लगी बाड़ तोड़ी और निकल कर भाग गये। और उनके साथ साथ भाग गया आधा मुर्गा भी।

पर राजा के नौकर भी उसको छोड़ नहीं रहे थे। एक बार फिर उन्होंने उस मुर्गे को पकड़ लिया पर इस बार वे यह नहीं सोच पाये कि वह इस मुर्गे का क्या करें।

सो राजा ने उनको सलाह दी कि वे उसको उस बक्से में बन्द कर दें जिसमें सोना रखा था। वह बोला — "ज़रा ध्यान रखना कि वह बक्सा सबसे ज़्यादा मजबूत हो।" सो उसके नौकरों ने यही किया।

मुर्गा एक बार फिर से बड़ी भारी मुसीबत में फॅस गया था। अगर वह इस बक्से में से समय से बाहर नहीं निकला तो वहॉ तो वह भूखा ही मर जायेगा। और वह जानता था कि राजा उसको उस बक्से में वहॉ बहुत देर तक रखने वाला था।

सो उसने चूहे की तरफ देखा और बोला — "कुकड़ूँ कूँ। अगर कभी मुझे दोस्त की जरूरत थी तो वह अब है। ओ चूहे, मेरे दोस्त, क्या तुम मेरी कुछ सहायता कर सकते हो?"

और चूहे को भी पता था कि उसको क्या करना था। वह बोला — "मुझे इस बक्से में इधर उधर घूमने के लिये थोड़ी सी जगह चाहिये। क्या तुम इसमें से थोड़ा सा सोना निगल सकते हो?"

आधा मुर्गा जानता था कि वह यह काम कर सकता था। वह चूहे की सहायता करना चाहता था। सो उसने उस बक्से का करीब करीब सारा सोना निगल लिया।

अब चूहे ने लकड़ी के बक्से को काटना शुरू कर दिया और कुछ ही देर में उसने उस बक्से में इतना बड़ा छेद कर दिया जिसमें से वे दोनों भाग सकते थे।

इस समय वहॉ पर कोई नौकर नहीं था। क्योंकि किसी को यह उम्मीद ही नहीं थी कि मुर्गा उस बक्से में से निकल जायेगा सो किसी ने उसकी पहरेदारी करने की भी कोशिश नहीं की।

आधे मुर्गे ने ज़रा सा भी समय बरबाद नहीं किया। उसने सोने के बचे हुए टुकड़े इकट्ठे किये और कूद कर उस बक्से में से निकल कर भाग गया।

इस भागने में उसका कुछ सोना रास्ते में गिर गया पर उसकी चिन्ता करने का उसके पास समय नहीं था। उसको तो बस राजा से बचना था और अपने घर पहुॅचना था।

जब वह घर पहुॅच गया तो उसको मालूम था कि उसके अब घूमने के दिन गये। वह अपने मालिक की तरफ दौड़ा और उससे

लिपटने के लिये अपने पंख फैला दिये। वह बूढ़ा अपने पुराने दोस्त को वापस आया देख कर बहुत खुश हुआ।

वह और भी खुश हुआ जब उसने सोने के कुछ टुकड़े आधे मुर्गे के पंखों के नीचे देखे।

"ये तुमको कहाँ से मिले?" उसने पूछा।

आधा मुर्गा मुस्कुरा कर बोला — "यह एक लम्बी कहानी है।"

बूढ़ा बोला — "चलो, ये हमारे कुछ दिन के खाने के लिये काफी हैं। मैं अभी बाजार जाता हूँ और हमारे लिये खाना खरीद कर लाता हूँ।"

मुर्गा बोला — "जब तक तुम यह सब करते हो तब तक तुम मुझे कुछ भूसा दे दो ताकि मैं उस पर आराम से सो सकूँ। मैं बहुत थक गया हूँ।"

"जो तुम चाहो, ओ आधे मुर्गे।"

जब उस बूढ़े ने सारा सोना खर्च कर दिया तो आधे मुर्गे ने उससे कहा कि वह चिन्ता न करे। अगर वह उसको झाड़ू से मारेगा, बहुत ज़ोर से मारने की जरूरत नहीं है केवल धीरे से ही मारने की जरूरत थी तो वह सोने का एक टुकड़ा उगल देगा जो उन लोगों के कई दिन के खाने के लिये काफी होगा।

और फिर यही हुआ। जब भी उनकी रसोई की आलमारियॉ खाली होतीं तो वह बूढ़ा अपनी झाड़ू उठाता, मुर्गे को मारता और कुछ सोना निकाल लेता।

अब आधे मुर्गे के पास भी खाने के लिये खूब सारा खाना था और सोने के लिये आरामदेह बिस्तर। अब बूढ़े की ज़िन्दगी भी बहुत अच्छी हो गयी थी।

वे अपने घर में खुश थे और अक्सर अपने दोस्तों को शाम को खाने पर बुलाते थे जिनमें मेंढक, लोमड़ा, भेड़िया और चूहा भी शामिल थे।

पर कहानी के आखीर में सारे लोग खुश नहीं थे। बुढ़िया इस सबसे बहुत गुस्सा थी। वह केवल गुस्सा ही नहीं थी वह बूढ़े से जल भी रही थी। वह रो रही थी — "मैंने बिल्ले को क्यों लिया, मुर्गे को क्यों नहीं? यह सब सोना तो मेरे पास होना चाहिये था।"

और फिर एक दिन उसने एक प्लान बनाया। उसने अपनी झाड़ू उठायी और बिल्ले को घर से बाहर निकाल दिया — "ओ आलसी जीव, जा दुनियॉ में बाहर जा और सोना ढूँढ कर ला। और तब तक वापस मत आना जब तक हमारे पास खाने के लिये काफी न हो जाये। तू सुन रहा है न?"

बिल्ले ने ठीक सुना और बाहर चल दिया। रास्ते में उसको सोने का एक टुकड़ा मिल गया जो आधे मुर्गे से आते समय गिर गया

था। उसने उसको तुरन्त ही निगल लिया पर उसको और सोना कहीं नहीं मिला।

सो उसने अपना पेट सॉप, चुहिया, बालों वाले मकड़े आदि जानवरों से भर लिया। जब वह उन्हें और नहीं निगल सका तो वह घर वापस आ गया।

बुढ़िया अपने बिल्ले के देख कर बहुत खुश हुई — "अरे तू तो अपना पेट भर कर बड़ी जल्दी वापस आ गया। मैं अपनी झाड़ू ले आऊॅ।"

वह जल्दी जल्दी अन्दर गयी और झाड़ू ले कर आयी और उससे बिल्ले को जरूरत से भी ज़्यादा ज़ोर से मारने लगी। फिर भी बिल्ले ने सोने का एक टुकड़ा उगल दिया। सोना देख कर वह बहुत खुश हुई पर एक टुकड़ा तो उसके लिये काफी नहीं था सो उसने बिल्ले को दूसरी बार मारा।

दूसरी बार के मारने से उसमें से एक सॉप लहराता हुआ निकल आया और उस बुढ़िया के जूते की तरफ भागा। वह चिल्लायी और उसने बिल्ले को और ज़ोर से मारा। फिर तो उसके पेट से चुहिया और बालों वाले मकड़े निकल पड़े।

वह चिल्लायी — "यह सब क्या है? यह तूने क्या किया?"

जितनी बार वह गुस्से से बिल्ले को मारती गयी उतनी ही बार वह बिल्ला जानवर उगलता गया। इस तरह कमरे में बहुत सारे जानवर इकट्ठा हो गये।

जब उस बुढ़िया ने उस बिल्ले को आखिरी बार मारा तो बड़े बालों वाला एक बहुत बड़ा मकड़ा निकल आया। वह बहुत ही गुस्सा था सो वह उस बुढ़िया की तरफ दौड़ा। वह बुढ़िया को जंगल तक खदेड़ कर ले गया और फिर किसी ने उन दोनों के बारे में कभी कुछ नहीं सुना।

अगर तुममें से किसी को उन दोनों के बारे में पता चल जाये तो उनसे सावधान रहना क्योंकि दोनों ही बहुत खतरनाक हैं।

बिल्ला बूढ़े और मुर्गे के पास वापस आ गया और बाकी ज़िन्दगी भर आराम से रहा।

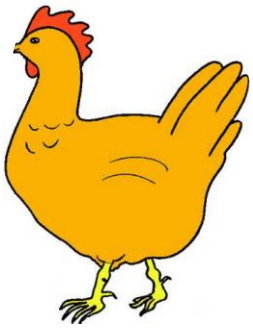

9 गाने वाला गुलाब[16]

यूरोप की लोक कथाओं के इस संग्रह में यह लोक कथा आस्ट्रिया देश की लोक कथाओं से ली गयी है।

एक बार की बात है कि एक राजा था जिसके तीन बेटियॉ थीं। उसकी तीनों बेटियॉ बहुत सुन्दर थीं। उसकी तीनों बेटियॉ सोलह साल से ऊपर की थीं। राजा अपनी उन तीनों बेटियों में से एक बेटी को अपने राज्य की रानी बनाना चाहता था पर वह यह नहीं जानता था कि वह उन तीनों में से किसको रानी बनाये।

तो एक दिन उसने अपनी तीनों बेटियों को बुलाया और उनसे कहा — "मेरी प्यारी बेटियों। मैं अब बूढ़ा और कमजोर हो चुका हूॅ। हर नया दिन मेरे लिये एक भेंट के समान है। इससे पहले कि मैं मर जाऊॅ मैं अपने राज्य की हर चीज़ को ठीक कर के रखना चाहता हूॅ और तुममें से एक को अपने राज्य का वारिस बना जाना चाहता हूॅ।

तुम सब बाहर की दुनियॉ में जाओ और तुममें से जो कोई भी गाने वाला गुलाब ले कर आयेगा उसी को मेरी राजगद्दी मिलेगी और वही मेरे सारे राज्य की रानी होगी।"

---

[16] The Singing Rose – a folktale from Austria, Europe. Taken from the Web Site: http://www.pitt.edu/~dash/type0425c.html#russia
The story is entitled "Die Singende Rose" written by Ignaz and Joseph Zingerle in the book "Kinder- und Hausmarchen". 1852. Translated by Dr AL Ashliman.

उन लड़कियों ने जब यह सुना तो ऑखों में ऑसू भर कर उन्होंने अपने बूढ़े पिता से विदा ली।

अपनी अपनी किस्मत पर भरोसा कर के वे दूर विदेश यात्रा के लिये चल दीं। तीनों ने तीन अलग अलग रास्ते चुने।

अब ऐसा हुआ कि उनमें से तीसरी और सबसे छोटी बेटी को जो उन सबमें सुन्दर थी एक अँधेरे पाइन के जंगल से हो कर गुजरना पड़ा। वहॉ बहुत सारी चिड़ियें एक साथ गा रही थीं। उनका गाना उसको बहुत अच्छा लग रहा था।

धीरे धीरे अँधेरा होने लगा तो चिड़ियें अपने अपने घोंसलों में वापस आने लगीं। और बस फिर कुछ देर बाद सब चूहे की तरह से शान्त हो गया।

तब अचानक एक मीठी सी पर तेज़ आवाज सुनायी दी। ऐसी आवाज तो राजकुमारी ने पहले कभी नहीं सुनी थी – न तो किसी चिड़िया की और ना ही किसी आदमी की। तुरन्त ही उसके दिमाग में आया कि हो न हो यह आवाज गाने वाले गुलाब की ही है।

वह तुरन्त ही उस तरफ चल दी जिस तरफ से यह आवाज आ रही थी। वह ज़्यादा दूर नहीं जा पायी थी तो उसने देखा कि उसके सामने पहाड़ की एक चोटी पर एक पुराने फैशन का बड़ा सा किला खड़ा हुआ था।

वह बड़ी उत्सुकता से उस पहाड़ी पर चढ़ गयी और उसके ताले को कई बार खींचा। आखीर में दरवाजा चीं चीं की आवाज करता

खुल गया और एक सफेद दाढ़ी वाले बूढ़े ने दरवाजे के अन्दर से झॉका। उसने कुछ नाखुश सी आवाज में उस लड़की से पूछा — "तुम्हें क्या चाहिये?"

राजकुमारी बोली — "मुझे गाने वाला गुलाब चाहिये। क्या आपके बागीचे में वह है?"

बूढ़ा बोला — "हॉ है।"

राजकुमारी ने पूछा — "आप उसे मुझे देने का क्या लेंगे?"

बूढ़ा बोला — "गाने वाले गुलाब के लिये अभी तुम्हें कुछ भी नहीं देना होगा। तुम उसे आज ही ले सकती हो पर उसकी कीमत लेने के लिये मैं तुम्हारे पास सात साल बाद आऊॅगा और उस समय तुमको अपने साथ इस किले में यहॉ ले आऊॅगा।"

राजकुमारी खुशी से चिल्ला कर बोली — "जल्दी से बस मुझे वह गाने वाला गुलाब दे दो।" क्योंकि उस समय उसके दिमाग में गाने वाले गुलाब और राजगद्दी के अलावा कुछ और था ही नहीं। वह यह सोच ही नहीं रही थी कि सात साल के बाद उसके साथ क्या होने वाला है।

यह कह कर बूढ़ा किले के अन्दर गया और तुरन्त ही एक पूरा खिला हुआ चमकता हुआ गुलाब ले कर आ गया। वह इतना मीठा गा रहा था कि राजकुमारी का दिल खुशी से नाच उठा। उसने बड़ी उत्सुकता से हाथ बढ़ा कर वह गुलाब उस बूढ़े से ले लिया और जैसे

ही उसने उसे अपने हाथ में लिया वह एक हिरनी की तरह उस पहाड़ी से नीचे की तरफ भाग ली।

बूढ़ा उसके पीछ बहुत ही गम्भीर आवाज में चिल्लाया — "ध्यान रहे मैं तुमसे सात साल बाद मिलता हूँ।"

राजकुमारी बेचारी गाने वाले गुलाब को अपने हाथ में लिये सारी रात उस जंगल में घूमती रही। उसको इस गाने वाले फूल के मिलने और फिर राज्य के मिलने की खुशी ने सब कुछ भुला दिया था।

गुलाब भी सारे रास्ते बराबर गाता रहा। जैसे जैसे राजकुमारी अपने घर की तरफ तेज़ी से बढ़ी चली जा रही थी वैसे ही वह भी और ज़्यादा ज़ोर से और और भी अच्छी तरह से गाता रहा।

आखिर वह घर आ पहुँची और उसने आ कर अपने पिता को सारा हाल बताया। गुलाब ने भी बहुत मीठा गाया। सारे महल में खुशी की लहर दौड़ गयी। राजा ने कई दिन तक इस बात का उत्सव मनाया।

जल्दी ही उसकी दोनों बहिनें भी लौट आयीं। उनको क्योंकि कुछ नहीं मिला था सो वे खाली हाथ ही लौटी थीं। अब सबसे छोटी राजकुमारी जो गाने वाला गुलाब ले कर लौटी थी रानी बन गयी। हालॉकि बूढ़ा पिता अभी भी अपना राज काज देख रहा था।

शाही परिवार बड़ी खुशी से और बड़े आराम से रह रहा था। दिन पर दिन साल पर साल गुजरते चले गये।

आखिर सात साल पूरे होने को आये। आठवॉ साल लगते ही उसके पहले दिन उस किले का बूढ़ा महल में राजा के सामने आया और उसने राजा की उस एक बेटी को मॉगा जो उसके यहॉ से गाने वाला गुलाब ले कर आयी थी।

राजा ने उसको अपनी सबसे बड़ी बेटी दी पर बूढ़े ने उसको गुर्राते हुए लेने से मना कर दिया कि "यह वह लड़की नहीं है।"

जब राजा ने देखा कि वह उसको धोखा नहीं दे सकता तो उसने दुखते दिल से अपनी तीनों बेटियों में से अपनी सबसे प्यारी और सबसे छोटी बेटी को उसे दे दिया। राजकुमारी को उस सफेद दाढ़ी वाले बूढ़े के साथ उसके किले जाना ही पड़ा जहॉ से एक बार उसने गाने वाला गुलाब लिया था।

सुन्दर राजकुमारी बहुत दुखी थी क्योंकि उस किले में उसके बूढ़े मालिक के सिवा और कोई नहीं था। रोज ब रोज वह अपने पिता और बहिनों को याद कर कर के रोती रही।

किले में मौज मस्ती के साधनों की कोई कमी नहीं थी पर उन सबसे उसको कोई आराम नहीं मिलता था क्योंकि वहॉ उससे उसका कोई प्यारा ऐसा नहीं था जिससे वह बात कर सके।

वह हमेशा अपने घर के बारे में ही सोचती रहती। इसके अलावा उस किले में सारे दरवाजे और आलमारियॉ आदि बन्द थे और वह बूढ़ा उसको एक भी चाभी नहीं लेने देता था।

एक दिन पता नहीं कहॉ से उसको पता लगा कि उसकी सबसे बड़ी बहिन की शादी पड़ोसी देश के एक राजकुमार से हो रही थी। और वह भी कुछ ही दिनों में होने वाली है सो वह उस बूढ़े के पास गयी और उससे अपनी बहिन की शादी में जाने की इजाज़त मॉगी।

बूढ़ा गुर्रा कर बोला "तो जाओ। पर मैं तुम्हें पहले से यह बता देना चाहता हूँ कि शादी के दिन सारा दिन तुम एक बार भी हॅसना नहीं। अगर तुमने मेरा हुक्म नहीं माना तो मैं तुम्हें हजार टुकड़ों में तोड़ कर रख दूँगा।

मैं जब तब तुम्हारे साथ ही रहूँगा। अगर तुमने हॅसने के लिये ज़रा सा भी मुॅह खोला तो बस उसके बाद के लिये तुम खुद जिम्मेदार होगी। ध्यान रखना।"

राजकुमारी ने सोचा कि इस बात को मानना क्या मुश्किल काम है। शादी के दिन वह उस सफेद दाढ़ी वाले बूढ़े के साथ अपनी बहिन की शादी में आयी।

जब लोगों ने देखा कि बहुत दिनों की गयी हुई राजकुमारी इतने दिनों बाद घर आयी है तो राजा के किले में खुशियॉ छा गयीं। वह खुद भी बहुत खुश थी सो उसने इस मौके का पूरा फायदा उठाया। पर वह बूढ़े के हुक्म को नहीं भूली और उसने हॅसने के लिये एक बार भी अपना मुॅह नहीं खोला।

उसी शाम उसे अपने प्रिय लोगों से बिछड़ कर वापस आना पड़ा और वह अपने बूढ़े साथी के साथ फिर अपने किले वापस लौट आयी।

उसका अकेलेपन का समय फिर से शुरू हो गया था। हर दिन शाम को बेचारी राजकुमारी चैन की सॉस लेती कि चलो एक दिन खत्म हुआ।

कुछ समय बाद उसने फिर उड़ती उड़ती खबर सुनी कि उसकी दूसरी बहिन की शादी हो रही है। तो वह फिर से उस बूढ़े के पास गयी और उससे अपनी दूसरी बहिन की शादी में जाने की इजाज़त मॉगी।

बूढ़े ने फिर उसे गुर्रा कर जवाब दिया "तो जाओ। पर इस बार तुमको सारा दिन बोलने की बिल्कुल इजाज़त नहीं है। मैं फिर से तुम्हारे साथ जाऊॅगा और तुम्हारे ऊपर कड़ी नजर रखूॅगा।"

राजकुमारी ने सोचा कि यह बात भी मानना कोई मुश्किल काम नहीं होगा। सो शादी के दिन वह अपने बूढ़े साथी के साथ अपने घर गयी।

अपनी रानी को आया देख कर राजा के किले में एक बार फिर से खुशियॉ छा गयीं। वे सब उससे मिलने के लिये आये। उन्होंने उसको नमस्ते की और उससे बहुत सारी बातों के बारे में पूछा पर उसने बहाना बनाया कि वह बोल नहीं सकती। उसने अपने सुन्दर होठों से एक शब्द भी बाहर नहीं निकाला।

पहली बार तो वह अपने हॅसने पर काबू कर गयी थी पर इस दिन बाद में वह अपनी हिम्मत हार बैठी और उस शाम को जब सब बात कर रहे थे तो बस एक मधुमक्खी के भिनभिनाने जितना तेज़ आवाज करने वाला एक शब्द उसके मुॅह से निकल गया।

यह देखते ही बूढ़ा कूद पड़ा उसका हाथ पकड़ा और उसको उस कमरे से निकाल कर अपने अकेले किले में ले गया।

अब यहॉ राजकुमारी के पास दूसरी चीज़ें तो बहुत सारी थीं पर अपने लोगों का साथ तो नहीं था न। उसकी ज़िन्दगी फिर से एक जैसी और उदास हो गयी थी।

एक दिन जब वह दुखी सी बागीचे में टहल रही थी जहॉ कभी गाने वाला गुलाब खिला रहता था और गाया करता था बूढ़ा उसके पास आया और चेहरे पर गम्भीरता ला कर बोला — "योर मैजेस्टी। अगर कल बारह बजे आप मेरा सिर तीन बार में धड़ से अलग कर दें तो जो कुछ भी इस किले में है वह सब आपका हो जायेगा और आप हमेशा के लिये आजाद हो जायेंगी।"

राजकुमारी ने उसकी ये बातें बड़े ध्यान से सुनी और अगले दिन इस खतरनाक काम को करने का फैसला कर लिया।

अगले दिन शनिवार का दिन था वह बूढ़ा बारह बजे से कुछ पहले ही उसके पास आ गया और आ कर अपनी गर्दन उसके आगे कर दी।

उसने अपने कमर से लटकी तलवार खींची और जैसे ही किले की घड़ी ने बारह के घंटों में से पहला घंटा बजाया उसने तुरन्त ही उसे तलवार से एक ही वार में काट दिया। फिर उसने दो बार तलवार और चलायी।

बूढ़े का सिर जमीन पर लुढ़कता चला गया। पर देखो खून की बजाय उसके सिर से निकली एक चाभी वहॉ पड़ी थी। उस चाभी से किले के सारे दरवाजे और आलमारियॉ खुल गये।

वहॉ राजकुमारी को बहुत सारे कीमती पत्थर और बहुत सारी दूसरी कीमती चीज़ें मिल गयीं। इस तरह वह हमेशा के लिये बहुत अमीर हो गयी और आजाद भी हो गयी।[17]

[17] [My Note: This story doesn't say about (1) what was the specialty of singing rose? (2) Who was the old man? Why did he ask the princess to cut his neck three times? (3) Did the king know that what were the consequences of bring the singing rose? etc.]

10 आदमी की उम्र अस्सी साल क्यों[18]

यह लोक कथा यूरोप महाद्वीप के बालकन क्षेत्र की लोक कथाओं से ली गयी है। बालकन कोई एक देश नहीं बल्कि एक क्षेत्र है जिसमें यूरोप के कई देश शामिल हैं।

जब दुनियॉ बनाने वाले ने दुनियॉ बनायी तो वह हर एक को **30** साल की उम्र देना चाहता था।

उसने सबसे पहले आदमी बनाया और उससे कहा — "तुम मेरे बनाये हर जीव पर राज करोगे। तुम हमेशा जवान, तन्दुरुस्त, सुन्दर, ताकतवर और अक्लमन्द रहोगे। तुम तीस साल तक ज़िन्दा रहोगे – उतने ही दिन जितने दिन और जानवर ज़िन्दा रहेंगे जिनके ऊपर तुम राज करोगे।"

आदमी को यह सुन कर तो बहुत अच्छा लगा कि वह भगवान के बनाये हर जीव पर राज करेगा पर वह अपनी केवल तीस साल की ज़िन्दगी से सन्तुष्ट नहीं था।

आदमी बनाने के बाद दुनियॉ बनाने वाले ने गधा बनाया और उसने उससे कहा — "गधे, तुम बहुत खराब खाना खाओगे और कभी सन्तुष्ट नहीं होगे। तुम आदमी के लिये काम करोगे और उस

[18] Why Man Lives Eighty Years? – a folktale from Balkan, Europe. Adapted from the Web Site : http://www.mikelockett.com/stories.php?action=view&id=192
Retold and written by Mike Lockett
Balkan is not a specific country but a region containing several countries of Europe – Hungary, Slovania, Romania, Serbia, Albania, Mecedonia, Bulgaria, Croatia…..

का बोझा ढोओगे। आदमी और जानवर दोनों ही तुम्हारा मजाक बनायेंगे।"

यह सुन कर गधा बोला — "मैं इतना ज़्यादा दुख सहना नहीं चाहता। क्या मैं केवल दस साल तक ज़िन्दा रह सकता हूँ?"

आदमी ने गधे को सुना तो उसने भगवान से पूछा — "भगवन, क्या गधे की ज़िन्दगी के बीस साल जो वह नहीं लेना चाहता मैं ले सकता हूँ?"

भगवान ने आदमी की प्रार्थना मान ली और आदमी से कहा — "ठीक है। गधे की उम्र के बीस साल तुम ले सकते हो। पर तुम इन बीस सालों को उसी तरह इस्तेमाल करोगे जैसे कि गधा इनको इस्तेमाल करता।"

यह सुन कर आदमी खुश हो गया कि अब उसको पचास साल रहने के लिये मिलेगा पर इसके बारे में तो उसने सोचा ही नहीं कि उन बीस सालों को वह गधा कैसे इस्तेमाल करता।

गधे के बाद भगवान ने कुत्ता बनाया और उससे कहा — "कुत्ते, तुम अपने चारों तरफ की चीज़ों को रखवाली करोगे। तुम हर खतरे को महसूस करोगे चाहे वह दूर ही क्यों न हो और उसको महसूस कर के भौंकोगे।

तुमको कभी काफी आराम नहीं मिलेगा। तुम जितना अपने लिये करते हो उससे कहीं ज़्यादा दूसरों के लिये करोगे। तुम हमेशा

आदमी को खुश रखना पसन्द करोगे जो तुमको बीस साल तक रखेगा।"

कुत्ता बोला — "भगवन, अगर मेरी ज़िन्दगी इतनी ही मुश्किल होगी तो आप मुझे केवल दस साल की ज़िन्दगी ही दें। मैं तीस साल ज़िन्दा रहना नहीं चाहता।"

आदमी भगवान और कुत्ते की बातचीत सुन रहा था सो भगवान से बोला — "भगवन, अगर कुत्ता अपनी ज़िन्दगी के बीस साल नहीं लेना चाहता तो उनको आप मुझे दे दें।"

भगवान ने उसकी प्रार्थना सुन ली मगर बोले — "तुमको कुत्ते की ज़िन्दगी के बीस साल भी दिये। पर तुमको वे बीस साल उसी तरह जीने होंगे जैसे कुत्ता उनको जीता।"

आदमी राजी हो गया क्योंकि अब वह बजाय पचास साल के सत्तर साल तक रह सकता था। पर वह फिर से यह सोचना भूल गया कि वे बीस साल कुत्ता कैसे बिताता। वह तो बस अपनी उम्र बढ़ाने में लगा हुआ था।

अब भगवान ने बन्दर पैदा किया और उससे कहा — "तुम आदमी की तरह से दिखायी दोगे पर आदमी की तरह से रहोगे नहीं। तुम पेड़ पर चढ़ोगे और एक शाख से दूसरी शाख पर कूदते रहोगे। तीस साल तक तुम अक्सर बेवकूफी के काम करोगे और दूसरों की नकल करोगे।"

बन्दर बोला — "भगवन, अगर मुझे सारी ज़िन्दगी ऐसे ही बेवकूफी के काम करने होंगे तो मैं तीस साल तक ज़िन्दा नहीं रहना चाहता। मेरे लिये केवल बीस साल ही काफी हैं।"

आदमी ने फिर से भगवान और बन्दर की यह बातचीत सुनी और बन्दर के दस साल ले लिये। भगवान ने उसको वे दस साल दे कर कहा — "पर तुम ये दस साल उसी तरह से गुजारोगे जैसे बन्दर गुजारता।"

आदमी बन्दर के दस साल पा कर बहुत खुश था। अब उसकी उम्र अस्सी साल हो गयी थी और अब वह ये अस्सी साल वैसे ही गुजार रहा है जैसे कि भगवान ने उससे कहा था।

पहले तीस साल में आदमी आदमी की तरह से जवान और सुन्दर रहता है। वह ताकतवर रहता है और भगवान की बनायी दुनियॉ पर राज करता है। यही समय होता है जब सारे लोग शादियॉ करते हैं और उनके बच्चे होते हैं।

फिर तीस साल से ले कर पचास साल तक, यानी अगले बीस सालों में वह अपने चारों तरफ सामान इकट्ठा करता है। वह गधे की तरह काम करता है और हमेशा उसको लगता है कि उसके पास काफी नहीं है।

फिर पचास साल से ले कर सत्तर साल तक, यानी अगले बीस सालों में आदमी कुत्ते की तरह से रहता है। उसने जो कुछ इकट्ठा किया होता है उसकी पहरेदारी करता है। वह ठीक से सोता भी

नहीं है और वह अपने चारों तरफ खतरा ही खतरा देखता रहता है।

कभी कभी वह बिना किसी वजह के भौंकता भी रहता है। वह हमेशा अपने आपको असुरक्षित महसूस करता है।

सत्तर साल से अस्सी साल की उम्र तक के दस साल में उसके हाथ कॉपते हैं, टॉगें मुड़ जाती हैं। उसका दिमाग काम नहीं करता और वह बन्दर की तरह से बेवकूफी के काम करता रहता है। वह बिना कोई वजह जाने कभी कभी दूसरों की नकल भी करता है।

11 दलिये का बर्तन[19]

यह मज़ेदार लोक कथा यूरोप के बेलजियम देश की लोक कथाओं से ली गयी है। वहॉ के बच्चे इसको बड़े शौक से कहते सुनते हैं। तो लो तुम भी पढ़ो बेलजियम की यह लोक कथा हिन्दी में और आनन्द लो उसका।

हर एक को उन बूढ़े और बुढ़िया के बारे में मालूम था। वे दोनों हमेशा ही लड़ते रहते थे और दोनों ही बहुत जिद्दी थे। किसी भी दिन उन दोनों में से एक भी आदमी दलिया बनाने को तैयार नहीं था।

बूढ़ा चिल्लाता — "मुझे भूख लगी है मेरे लिये दलिया बनाओ।"

बुढ़िया कहती — "मैं नहीं बनाती अपने आप बना लो।"

बूढ़ा कहता — "क्या? इसका क्या मतलब है कि तुम मेरे लिये दलिया नहीं बनातीं?"

बुढ़िया जवाब देती — "मेरा मतलब वही है जो मैंने कहा और अगर तुमको यह भी जानना है कि मैं क्यों नहीं बनाती तो मैं वह भी बता दूँगी।"

---

[19] The Porridge Pot - a folktale from Belgium, Europe. Adapted from the Web Site : http://www.themuralman.com/belgium/belgium_folk_tale.html
Collected and retold by Phillip Martin

बूढ़ा बुड़बुड़ाता — "मुझे नहीं याद मैंने कभी तुमसे यह पूछा कि तुम दलिया क्यों नहीं बनातीं।"

बुढ़िया बोली — "कोई बात नहीं तुमने नहीं पूछा तो न सही फिर भी मैं तुमको बता देती हूँ। मैं आज दलिया इसलिये नहीं बना रही क्योंकि मुझे दलिये का बर्तन कल साफ नहीं करना।"

बूढ़ा बोला — "वह तो मुझे भी नहीं करना।"

अब अगर तुम यह सोच रहे हो कि यह बूढ़े पति पत्नी उस दिन शायद खराब मूड में होंगे या केवल उसी दिन ही ऐसा कर रहे होंगे तो तुम गलत हो। ऐसा भी नहीं था।

यह तो उनका रोज का प्रोग्राम था और आज तो यह उनके अभी झगड़े की शुरूआत थी और हमेशा की तरह से यह बहुत देर तक चलती रही।

जब सब कुछ कहा सुना जा चुका तो उस बुढ़िया ने बूढ़े के लिये दलिया बनाया पर इसलिये नहीं कि उसको वह दलिया बूढ़े के लिये बनाना था बल्कि इसलिये कि उसको खुद को भूख लग रही थी।

अब दलिया बन तो गया पर दोनों में से किसी ने दलिये का बर्तन साफ नहीं किया। वह बर्तन ऐसे ही पड़ा रहा सो दलिया खाने के बाद फिर झगड़ा शुरू हो गया।

आखीर में यह निश्चय हुआ कि अब जो कोई पहले बोलेगा वही उस बर्तन को साफ करेगा। सो कोई आश्चर्य की बात नहीं कि

सारा दिन दोनों नहीं बोले और रात होने पर दोनों एक दूसरे को बिना गुड नाइट कहे ही सोने चले गये।

अगले दिन जब सुबह मुर्गा बोला तो बस वही बेचारा अकेला आवाज कर रहा था। दोनों पति पत्नी जागे तो पति ने देखा कि उसकी पत्नी उसकी तरफ देख रही थी। उसने भी अपनी पत्नी की तरफ देखा पर दोनों में किसी ने भी एक दूसरे को गुड मौर्निंग नहीं कहा।

गुड मौर्निंग ही नहीं बल्कि दोनों में से कोई अपने बिस्तर से भी नहीं उठा। सुबह के सात बज गये, आठ बज गये, और फिर नौ भी बज गये। और फिर नौ ही नहीं दोपहर के बारह भी बज गये, एक भी बज गया, दो भी बज गये।

उनके पड़ोसी उनका झगड़ा सारा दिन सुनने के आदी थे पर आज की यह शान्ति तो उनके लिये बहुत अजीब थी।

दोनों बूढ़े एक दूसरे की तरफ बिना कुछ बोले देखते रहे और उनके पड़ोसी उनके बारे में चिन्ता करने लगे।

उनके बराबर में रहने वाली पड़ोसन ने अपने पति से पूछा — "क्यों जी, ये लोग आज कुछ बीमार हैं क्या?"

पति बोला — "हो सकता है या फिर लगता है कि इन लोगों को कुछ हो गया है।"

पत्नी बोली — "मुझे तो ऐसा लगता है कि अगर ये लोग इतने शान्त हैं तो लगता है कि दोनों ने एक दूसरे को मार दिया है।"

पति बोला — "अच्छा हो कि हम जा कर उनको देख कर आयें।"

सो वे दोनों उनके घर गये और जा कर उनका दरवाजा खटखटाया पर अन्दर से किसी ने जवाब नहीं दिया। क्योंकि वे बूढ़े अगर आपस में बात नहीं कर रहे थे तो वे अपने पड़ोसियों से कैसे बात कर सकते थे।

पर उस घर की खामोशी बाहर खड़े पड़ोसी पति पत्नी को डरा रही थी। वे उन दोनों के बारे में इतने ज़्यादा चिन्तित हुए कि उन्होंने दरवाजा ही तोड़ दिया।

पर वहॉ भी जो कुछ उन्होंने अन्दर देखा उससे उनको शान्ति नहीं मिली। उन्होंने देखा कि दोनों पति पत्नी अभी भी बिस्तर में ही लेटे हुए हैं और एक दूसरे को घूर रहे हैं।

पड़ोसन ने पूछा — "अरे भाई अब तो उठने का भी समय हो गया और तुम लोग इतनी देर तक बिस्तर में पड़े हो। क्या बात है?" पर दोनों में से कोई भी पड़ोसी से नहीं बोला बस वे तो एक दूसरे की तरफ ही देखते रहे।

पड़ोसी फिर बोला — "हमें नहीं मालूम कि तुम्हारी क्या समस्या है पर मुझे लगता है कि हमें पादरी को बुलाना चाहिये। शायद तुममें से किसी को कनफैशन[20] करना हो।"

[20] A confession is a statement made by a person or a group of persons acknowledging some personal fact that the person (or the group) would ostensibly prefer to keep hidden. Normally it is done in a Church before some priest but hidden from the confessor, so both do not see each other.

पड़ोसन बोली — "और शायद अन्तिम संस्कार।"

फिर भी कोई नहीं बोला तो पादरी बुलवाया गया पर उसके आने से भी कोई फायदा नहीं हुआ क्योंकि उससे भी कोई कुछ नहीं बोला।

उन बूढ़े पति पत्नी ने न तो उस पादरी की तरफ देखा और न ही अपने पड़ोसियों की तरफ। वे तो बस एक दूसरे की तरफ ही देखते रहे।

पादरी बोला — "ठीक है, मैं बाद में दिन में इनको देखने के लिये फिर आऊँगा। तुम लोग ज़रा इन पर निगाह रखना।"

पड़ोसियों ने कहा "ठीक है।"

और वह पादरी वहाँ से चला गया।

बाद में जब वह पादरी उनको फिर से देखने आया तो भी कहानी वही थी। पड़ोसन ने बताया कि तब से वे लोग कुछ बोले ही नहीं हैं। सारे दिन वे बिस्तर में ही पड़े रहे और एक दूसरे को देखते रहे।

पादरी बोला — "यहाँ किसी को रहने की जरूरत है जो इनकी देखभाल कर सके। क्या तुम लोग ऐसा कर सकते हो?"

पड़ोसन बोली — "हाँ हम कर तो सकते हैं पर...."

पति आगे बोला — "पर हमको इसका पैसा मिलना चाहिये।"

पादरी बोला — "ठीक है। तुमको पैसा मिल जायेगा। इन बूढ़े पति पत्नी के पास पैसा तो ज़्यादा होगा नहीं पर मुझे मालूम है कि

इस बूढ़े की पत्नी के पास एक बहुत ही अच्छा कोट है। तुम उस कोट को बाजार में ले जा कर बेच दो और उससे जो पैसा मिले वह तुम रख लो।"

यह सुन कर पत्नी का ध्यान अब पादरी की तरफ गया। उसने अपने पति की तरफ देखना छोड़ा और अब अपने पड़ोसी की तरफ देखा और बोली — "तुम जा कर अपनी चीज़ें बाजार में बेचो पर मेरे कोट को हाथ भी नहीं लगाना। अगर किसी ने उसे छुआ भी तो मुझसे बुरा कोई न होगा।"

पड़ोसियों ने उसकी तरफ देखा तो उस बुढ़िया का पति भी अब बोल उठा — "आहा। मुझे मालूम था कि पहले तुम बोलोगी। अब उठो और जा कर दलिये का बर्तन साफ करो।"

वह बुढ़िया उठी और जा कर दलिये का बर्तन साफ करने लगी। पर जितनी देर में बुढ़िया ने वह बर्तन साफ किया उतनी देर में बूढ़े ने पड़ोसी और पादरी को अपनी कहानी सुनायी – पर वह कनफैशन नहीं था।

12 लम्बू, चौड़ू और दूर का देखने वाला[21]

यह लोक कथा यूरोप महाद्वीप के बोहेमिया देश में कही सुनी जाती है।

एक बार की बात है कि एक बूढ़ा राजा था जिसके एक बेटा था। एक दिन उसने अपने बेटे को बुलाया और बोला — "बेटा, मैं अब बूढ़ा हो रहा हूँ किसी भी दिन मर जाऊँगा। उससे पहले मैं यह देखना चाहता हूँ कि तुम शादी कर के खुश रहो और तुम्हारी ज़िन्दगी में भी कोई तुम्हारा सुख दुख बाँटने वाला हो।"

फिर उसने अपनी जेब में से एक सोने की चाभी निकाली और अपने बेटे को दिखायी और बोला — "जाओ, तुम किले की मीनार पर चले जाओ और अपने लिये एक पत्नी ढूँढ लो।"

राजकुमार ने पिता से वह सोने की चाभी ली और तुरन्त ही किले की मीनार पर चला गया। उसे याद नहीं पड़ता था कि पहले कभी उसने किसी और को उस किले की ताला लगी मीनार पर जाते देखा हो। उसको तो यह भी नहीं पता था कि वहाँ था क्या।

उसने ऊपर जा कर दरवाजा खोल कर अन्दर जा कर देखा तो वहाँ दीवार पर बारह बड़ी बड़ी तस्वीरें लगी हुई थीं। उनमें से

[21] Long, Broad and Sharpsighted – a folktale from Bohemia, Europe. Adapted from the Web Site : http://www.mikelockett.com/stories.php?action=view&id=116
Retold by Mike Lockett

ग्यारह तस्वीरें बहुत सुन्दर स्त्रियों की थीं। हर स्त्री के सिर पर ताज था और वे सब अलग अलग पोशाकें पहने हुए थीं।

उसने एक एक कर के सब तस्वीरों को देखा तो उसको ऐसा लगा जैसे वे सब उसकी तरफ देख रही हों। हर दूसरी तस्वीर पहली तस्वीर से ज़्यादा सुन्दर थी।

बारहवीं तस्वीर एक सफेद कपड़े से ढकी हुई थी। राजकुमार ने उसका वह कपड़ा हटाया तो देखा कि वह तस्वीर तो सबसे सुन्दर लड़की की थी। उसने सफेद पोशाक पहन रखी थी और सफेद मोतियों का ताज पहन रखा था।

राजकुमार उसको देख कर मुस्कुराया और बोला — "अगर मेरी पसन्द पूछी जाये तो यही लड़की मेरी पत्नी होगी। मैं इसी से शादी करूँगा।"

जैसे ही उसने ये शब्द कहे उस लड़की ने अपना सिर झुका लिया और दुख भरी नजर से उसको देखा। बस उसी पल सारी तस्वीरें गायब हो गयीं।

राजकुमार नीचे उतर कर अपने पिता के पास गया और बोला — "पिता जी, मैंने अपनी पत्नी चुन ली है और मुझे पूरा विश्वास है कि वह मुझे खुश रखेगी।" फिर उसने राजा को यह भी बताया कि उसने अपने लिये कौन सी पत्नी चुनी है।

राजा उसकी बात सुन कर उदास हो गया और बोला — "बेटे, तुमने अपने लिये एक ऐसी राजकुमारी चुन ली है जो तुमको मिलनी नामुमकिन है।

वह राजकुमारी एक बहुत ही बुरे जादूगर के फन्दे में फॅसी है। वह एक लोहे के किले में कैद है। जो भी उसको उस जादूगर की कैद से आजाद कराने गया वह फिर कभी लौट कर नहीं आया।

पर अगर तुम उसी लड़की से शादी करना चाहते हो तो जाओ, मेरी दुआएँ तुम्हारे साथ हैं। तुम कामयाब हो कर सुरक्षित घर लौटो।"

सो राजकुमार अपनी पत्नी की खोज में चल दिया। उसने चार घोड़े लिये – एक सवारी के लिये और तीन आराम करने के लिये और चल दिया।

उसने जंगल पार किये, पहाड़ पार किये, वह दिन रात चलता रहा। चलते चलते उसको एक आदमी पैदल जाता मिला। यह आदमी बहुत लम्बा था। उसके हाथ और पैर भी बहुत लम्बे थे।

वह आदमी चिल्लाया — "रुको, मुझे भी अपने साथ ले लो।"

राजकुमार ने पूछा — "कौन हो तुम?"

आदमी बोला — "मेरा नाम लम्बू है। मैं अपने हाथ पैर बहुत दूर तक ले जा सकता हूँ। तुम उस पाइन के पेड़ पर वह घोंसला देख रहे हो न?"

कह कर उसने अपना हाथ बढ़ाया तो वह खुद पाइन के पेड़ जितना लम्बा हो गया। फिर उसने उस घोंसले को छुआ और अपने हाथ को वापस ले आया।

राजकुमार बोला — "वाह, आओ, आ जाओ मेरे साथ।"

सो वह लम्बू उसके तीन घोड़ों में से एक घोड़े पर बैठ गया और दोनों दो घोड़ों पर सवार हो कर फिर अपने सफर पर चल दिये।

जब वे जा रहे थे तो उनको एक और आदमी मिला। यह आदमी बहुत ही छोटा और भारी था और उसका पेट बैरल[22] की तरह आगे निकला हुआ था। उस आदमी ने भी राजकुमार से कहा — "रुको, मुझे भी अपने साथ ले लो न।"

राजकुमार ने उससे पूछा — "तुम कौन हो?"

वह बोला — "मेरा नाम चौड़ू है। मैं अपने आपको कितना भी चौड़ा कर सकता हूँ। तुम मुझसे थोड़ा दूर हट जाओ तो फिर मैं तुमको दिखाता हूँ कि मैं क्या कर सकता हूँ।"

जब राजकुमार और लम्बू कुछ दूर चले गये तो चौड़ू ने एक लम्बी साँस ली और अपना पेट और बाँया और दाँया हिस्सा बढ़ाना

[22] A barrel, cask, or tun is a hollow cylindrical container, traditionally made of wooden staves bound by wooden or metal hoops. See its picture above.

शुरू किया और वह सब इतना बढ़ा दिया कि वह एक पहाड़ जैसा लगने लगा जिसको किसी ने दबा कर चौरस कर दिया हो।

बाद में जब वह अपने पुराने साइज में आ गया तो राजकुमार ने उसे भी एक घोड़ा दे दिया और वह भी उनके साथ हो लिया। अब तीनों घोड़ों पर सवार हो कर चलने लगे।

कुछ दूर जाने पर उनको एक और आदमी मिला। उसने अपनी ऑखों पर पट्टी बॉध रखी थी। वह आदमी भी राजकुमार से बोला — "रुक जाओ और मुझे भी साथ ले लो।"

राजकुमार को उसकी बात सुन कर बड़ा आश्चर्य हुआ। यह उसकी समझ में ही नहीं आया कि वह अपनी ऑखों पर पट्टी बॉध कर उसको कैसे देख सका? उसने उससे पूछा — "तुम कौन हो और तुम ऑख पर पट्टी बॉध कर कैसे देख सकते हो?"

वह आदमी बोला — "मेरा नाम तेज़ देखने वाला है और मैं अपनी ऑख पर पट्टी बॉध कर भी ऐसे ही देख सकता हूॅ जैसे तुम लोग अपनी ऑख खोल कर देखते हो।

अगर में अपनी ऑख की पट्टी खोल दूॅ तो मैं उन चीज़ों के अन्दर तक झॉक कर देख सकता हूॅ जिनको तुम लोग पास से भी नहीं देख सकते।

और अगर मैं किसी को घूर दूॅ तब तो उसमें आग ही लग जायेगी। और जो कुछ जल नहीं पायेगा वह फट कर टुकड़े टुकड़े हो जायेगा।"

फिर उसने एक बड़ी चट्टान की तरफ घूर कर देखा तो वह चटकने लगी। कुछ ही पलों ही वह टूट कर बिखर गयी और वहॉ रेत का ढेर पड़ा रह गया।

राजकुमार ने उसको भी अपने साथ ले लिया और अब चारों चारों घोड़ों पर सवार हो कर चल दिये।

थोड़ी देर बाद ही वे सब उस बुरे जादूगर के लोहे के किले के पास पहुॅच गये। उन लोगों ने किले की खाई के ऊपर का पुल पार किया और उस किले में घुस गये।

अन्दर जा कर उन्होंने अपने घोड़े अस्तबल में बॉध दिये। ऐसा लग रहा था जैसे वह अस्तबल उन्हीं के लिये ही तैयार किया गया हो क्योंकि उसमें जानवरों के लिये दाना पानी भी रखा था।

ऑगन में चारों तरफ लोहे की मूर्त्तियॉ खड़ी हुई थीं। पर वे मूर्त्तियॉ ज़िन्दा लोगों की सी लग रहीं थीं। राजकुमार और उसके नये साथी सब लोग दरवाजे में से हो कर उस किले के अन्दर घुस गये।

दरवाजे से हो कर वह जिस कमरे में पहुॅचे वह बहुत चमकीली रोशनी से भरा हुआ था और उसमें एक खाने की मेज लगी थी जिस पर चार आदमियों के लिये कई तरह के खाने और शराब रखी थी।

सो चारों उस मेज पर बैठ गये और वहॉ उन्होंने डट के खाना खाया। खाने के बाद वे किले को देखने के लिये उठे। जैसे ही वे उठे किले का मालिक जादूगर एक दरवाजे से अन्दर आया।

वह एक लम्बी हल्के सलेटी रंग की पोशाक पहने था जो फर्श को छू रही थी। और एक लम्बा नुकीला टोप पहने था जो ऊपर से कुछ मुड़ा हुआ था। उसकी आधी सफेद दाढ़ी करीब करीब उसकी कमर तक आ रही थी।

उसके हाथ में एक रस्सी थी और वह रस्सी से उस लड़की को बॉधे हुए था जिसको राजकुमार ने अपने किले की मीनार की तस्वीर में देखा था।

राजकुमारी को देखते ही राजकुमार उसकी तरफ दौड़ा पर इससे पहले कि वह कुछ बोलता जादूगर बोला — "मुझे मालूम है कि तुम यहॉ क्यों आये हो। तुम यहॉ इस लड़की को लेने के लिये आये हो न। ले लो इसको अगर तुम ले सकते हो तो।

मैं यहॉ इसको तीन दिनों के लिये यहॉ छोड़ कर जा रहा हूँ। इसकी तुम तीन दिन तक रखवाली करना। तीन दिनों में अगर यह गायब हो गयी तो मैं तुम्हें और तुम्हारे दोस्तों सबको लोहे की मूर्त्तियों में बदल दूँगा जैसे मैंने और दूसरे लोगों को बदल कर रखा है जो तुमसे पहले यहॉ इस राजकुमारी को छुड़ाने के लिये आये थे।"

फिर उसने राजकुमारी को एक कुर्सी पर बैठने का इशारा किया और खुद वहॉ से गायब हो गया।

राजकुमार की ऑख उस सुन्दर राजकुमारी से हट ही नहीं पा रही थी। उसने उससे बात करने की कोशिश की पर वह कुछ नहीं बोली। ऐसा लग रहा था जैसे वह कोई मूर्त्ति हो।

उसकी ऑखें राजकुमारी पर ही लगी रहीं और उसने सोच लिया कि वह सोयेगा नहीं। वह नहीं चाहता था कि राजकुमारी वहॉ से गायब हो जाये सो वह उसकी तीन दिनों तक रखवाली करेगा।

लम्बू ने अपनी ऑखें और हाथ पैर कमरे की दीवार तक फैला लिये ताकि अगर कोई उस कमरे में आये तो उसको पता चल जाये।

चौड़ू ने अपने आपको इतना फैला लिया कि उसने कमरे का दरवाजा ही रोक लिया ताकि कमरे में न तो कोई अन्दर आ सके और न ही उसमें से कोई बाहर जा सके।

तेज़ नजर वाला कमरे के बीच में खड़ा हो गया और चारों तरफ अपनी निगाह रखने लगा ताकि अगर कोई आये जाये तो वह उसको देख सके।

पर अपनी पूरी कोशिशों के बावजूद वे सब सो गये और रात भर सोते रहे।

अगली सुबह राजकुमार और लोगों से पहले जाग गया। उसने तुरन्त अपनी राजकुमारी की तरफ देखा तो उसका तो दिल बैठ गया। वह वहॉ नहीं थी। वह तो गायब हो चुकी थी।

उसने अपने साथियों को जगाया तो वे भी उतने ही परेशान हुए जितना कि राजकुमार खुद परेशान था।

उसी समय तेज़ नजर वाले ने इधर उधर देखना शुरू किया और बोला — "चिन्ता न करो। मैंने उसको देख लिया है। वह यहॉ से सौ मील दूर है। एक जंगल के बीच में एक ऊॅचा सा ओक का पेड़ है और उस पेड़ पर ओक की गिरी[23] लगी है, वह उस गिरी में छिपी हुई है।"

लम्बू तेज़ नजर वाले के ऊपर बैठ गया ताकि वह उसको बता सके कि वह राजकुमारी कहॉ है। लम्बू ने हर दस मील पर एक कदम रख कर अपने पैर फैलाने शुरू किये।

कुछ पलों में ही वह उस ओक के पेड़ से वह गिरी तोड़ लाया और ला कर राजकुमार को दे दी। राजकुमार ने वह गिरी अपनी पास वाली कुर्सी पर अपने पास ही रख ली। राजकुमारी वहॉ तुरन्त ही प्रगट हो गयी।

उसी समय कमरे का दरवाजा धड़ाम से खुला और गुस्से से भरा जादूगर वहॉ आया। उसने तो यह उम्मीद ही नहीं की थी कि राजकुमारी वहॉ उस कमरे में होगी।

वह बोला — "तुम्हारी राजकुमारी आज फिर यहॉ इस कमरे में रहेगी और तुम फिर इसकी पहरेदारी करना। मुझे शक है आज रात भी तुम लोग इसकी इतनी ही अच्छी तरह से पहरेदारी कर सकोगे जितनी कि तुम सबने कल की थी।"

---

[23] Acorn – nut of the Oak tree. See the picture of acorn above.

यह कह कर उस जादूगर ने उस राजकुमारी के कन्धे पर हाथ रखा और दोनों गायब हो गये।

दिन तो जल्दी ही गुजर गया। जब रात हुई तो वह जादूगर राजकुमारी को ले कर फिर उसी दरवाजे से अन्दर आया और बोला — "इसकी पहरेदारी कर सकते हो तो करो। अगर यह सुबह तक चली गयी तो तुम सब भी मेरी उन पत्थरों की मूर्त्तियों की लाइन मे लग जाओगे।"

राजकुमार और उसके दोस्तों ने फिर सारी रात जागने की कोशिश की पर उस जादूगर के जादू ने उन सबको फिर सुला दिया। राजकुमारी दोबारा गायब हो चुकी थी।

अगले दिन फिर से राजकुमार सुबह सबसे पहले जागा और देखा कि राजकुमारी तो वहॉ नहीं थी।

राजकुमार ने अपने दोस्तों से कहा — "दोस्तों मुझे तुम्हारी सहायता की फिर से जरूरत है। राजकुमारी को ढूँढने में मेरी सहायता करो।"

तेज़ देखने वाले ने अपनी ऑखें मलीं और बोला — "मुझे राजकुमारी दिखायी दे रही है। दो सौ मील दूर एक पहाड़ है। उस पहाड़ में एक चट्टान है और उस चट्टान में एक कीमती पत्थर है। राजकुमारी उस कीमती पत्थर के अन्दर है।"

लम्बू ने फिर से अपने हाथ पैर फैलाये और तेज़ नजर वाले की सहायता से उस पहाड़ तक पहुँच गया।

तेज़ नजर वाले ने अपनी ऑख से पट्टी उतारी और उस पहाड़ को जो घूर कर देखा तो वह पहाड़ टूट गया। उस पहाड़ में से वह चट्टान निकल आयी जिसमें वह कीमती पत्थर था।

फिर उसने उस चट्टान को घूरा तो उसमें से वह कीमती पत्थर निकल आया जिसके अन्दर राजकुमारी थी। लम्बू ने वह कीमती पत्थर उठाया और वह कीमती पत्थर ला कर उसने राजकुमार को दे दिया।

राजकुमार ने जैसे ही वह कीमती पत्थर कुर्सी पर रखा तो एक बार फिर वह राजकुमारी उस पत्थर में से बाहर आ गयी।

तभी कमरे का दरवाजा धड़ाम से खुला और वह जादूगर उस कमरे में घुसा। राजकुमारी को वहॉ उस कमरे में देख कर उसकी ऑखें गुस्से से जली जा रही थीं।

आ कर वह बोला — "मैं देख रहा हूँ कि तुम लोगों ने एक बार फिर राजकुमारी की ठीक से निगरानी की है। पर कल यह कहानी कुछ और ही होगी। कल यह राजकुमारी तुमसे खो जायेगी और फिर तुम सब मेरी पत्थर की सेना में शामिल हो जाओगे।"

कह कर उस जादूगर ने उस राजकुमारी के कन्धे पर हाथ रखा और वे दोनों एक बार फिर गायब हो गये।

दिन तो जल्दी ही बीत गया। जब रात हुई तो वह जादूगर उस राजकुमारी को ले कर फिर वहॉ आया और बोला — "अपनी ज़िन्दगी की आज की आखिरी रात तुम और खुशी मना लो क्योंकि

अबकी बार तुम राजकुमारी की निगरानी करने में सफल नहीं हो पाओगे और तुम सब पत्थरों में बदल जाओगे।"

यह कह कर वह राजकुमारी को वहीं छोड़ कर वहॉ से चला गया। उसके जादू से वे चारों फिर से सो गये और राजकुमारी वहॉ से फिर गायब हो गयी।

अगले दिन सुबह को राजकुमार सबसे पहले उठा। जब उसने राजकुमारी को वहॉ नहीं देखा तो उसने तेज़ देखने वाले को उठाया।

वह उठा और इधर उधर देख कर बोला — "हॉ मुझे दिखायी दे रहा है। राजकुमारी यहॉ से तीन सौ मील दूर समुद्र की तली में है। समुद्र में एक सीपी है। सीपी में एक सोने की अॅगूठी है और वह राजकुमारी उस अॅगूठी में है।"

चौड़ू बोला — "लम्बू को मुझे और तेज़ देखने वाले दोनों को साथ ले कर वहॉ चलना चाहिये।"

सो लम्बू ने अपना शरीर बढ़ाया और चौड़ू को और तेज़ देखने वाले को अपने कन्धों पर बिठाया और लम्बे लम्बे कदम रखता हुआ समुद्र की तरफ चल दिया।

तेज़ देखने वाले ने लम्बू को बता दिया था कि उसको उन्हें कहॉ ले कर जाना था। लम्बू ने समुद्र के पास पहुॅच कर देखा कि वह तो सीपी तक पहुॅच ही नहीं पा रहा है।

सो जब लम्बू उस सीपी तक नहीं पहुँच सका जिसमें राजकुमारी बैठी थी तो चौड़ू बोला — "तुम लोग हटो अब मेरा काम करने का समय है।"

सबको हटा कर वह अपने पेट के बल समुद्र के किनारे पर लेट गया और अपने आपको उसने बहुत चौड़ा कर के समुद्र का पानी पीना शुरू कर दिया।

कुछ ही पलों में समुद्र का पानी इतना अधिक नीचे गिर गया कि लम्बू उसमें चलने और अपनी बॉह फैलाने लायक हो गया। उसने तुरन्त ही वह सीपी उठा ली। सीपी को खोल कर उसने उसमें से अँगूठी निकाली और सब लोग वापस किले की तरफ दौड़ पड़े।

चौड़ू ने समुद्र का इतना सारा पानी पी लिया था कि वह बहुत भारी हो गया था सो लम्बू ने उसको अपने कन्धे पर से उतार दिया। चौड़ू के नीचे गिरते ही उसके मुँह में से काफी सारा पानी निकल कर घाटी में फैल गया जिससे उन तीनों को वहॉ से बाहर नकलने में बहुत परेशानी हुई।

इधर किले में राजकुमार बहुत परेशान हो रहा था। सूरज उग आया था और उसके लोग अभी तक नहीं लौटे थे। तभी वह जादूगर कमरे में धम धम करता आ पहुँचा।

उसने देखा कि राजकुमारी तो कमरे में नहीं थी सो उसने अपनी जादू की छड़ी उठायी और राजकुमार और उसके दोस्तों पर उनको

पत्थर का बनाने के लिये अपना जादू फेंकने ही वाला था कि तेज़ नजर वाले ने उसको यह करते देख लिया।

उसने तुरन्त ही लम्बू को यह बताया तो लम्बू ने अपनी बॉह सबसे ज़्यादा लम्बी फैलायी और समुद्र से लायी हुई अंगूठी को कुर्सी पर रख दिया।

अॅगूठी कुर्सी पर रखते ही अॅगूठी में से राजकुमारी निकल आयी। राजकुमारी को देखते ही जादूगर गुस्से से भुनभुनाया और एक रैवन बन कर खिड़की में से बाहर उड़ गया।

उस सुन्दर राजकुमारी ने राजकुमार की तरफ देख कर उसको बार बार धन्यवाद दिया। उधर जैसे ही जादूगर रैवन बन कर उड़ा तो किले में रखी सारी पत्थर की मूर्तियॉ ज़िन्दा हो उठीं।

राजकुमार ने राजकुमारी से शादी करने की इच्छा प्रगट की तो राजकुमारी भी मान गयी। जल्दी ही दोनों की शादी हो गयी। राजकुमार का पिता अपने बेटे की शादी उसकी पसन्द की राजकुमारी से होते देख कर बहुत खुश था।

बाद में उसने राजकुमार के तीनों दोस्तों – लम्बू चौड़ू और तेज़ देखने वाले को आदर दिया। सभी लोग उस राजकुमार के राज्य में बहुत सालों तक खुशी खुशी रहे।

13 होशियार राजकुमारी[24]

यह लोक कथा यूरोप महाद्वीप के ऐस्टोनिया देश में कही सुनी जाती है।

यह बात वहॉ के राजा को ही नहीं बल्कि हर एक आदमी को मालूम थी कि राजा की बेटी बहुत सुन्दर थी।

और राजा को ही नहीं बल्कि हर एक आदमी को यह भी मालूम था कि राजकुमारी हाजिर जवाब और बोलने में बहुत ही चतुर थी। वह अपनी बातों से किसी को भी नहीं बल्कि राजा को भी चुप कर सकती थी।

यह सब देखते हुए यह जाहिर था कि राजा को उससे बहुत परेशानी थी। और वह परेशानी यह थी कि उसकी बेटी से कोई शादी नहीं कर सकता था जब तक कि उसकी बेटी की ज़बान काबू में न हो।

सो राजा ने वह सब कुछ किया जो वह उन हालात में कर सकता था। इस सिलसिले में उसने एक ऐलान कर दिया कि वह अपनी बेटी की शादी उसी से करेगा जो उसको बहस में हरायेगा।

[24] The Clever Princess - a folktale from Estonia, Europe. Adapted from the Web Site : http://www.themuralman.com/estonia/estonia_folk_tale.html
Collected and retold by Phillip Martin

यह सब आसान तो नहीं था पर फिर भी बहुत से राजकुमार वहॉ अपनी अपनी किस्मत आजमाने आये। और इतने सारे राजकुमार वहॉ आये कि लोग देख कर दंग रह गये।

जैसे ही एक उम्मीदवार हार कर महल छोड़ कर जाता था दो और आ जाते थे।

जब इतने सारे राजकुमार राजकुमारी का हाथ मॉगने आ रहे थे तो राजकुमारी की दासी को जैसे वह पहले बनाया करती थी राजकुमारी के बालों को वैसे ही बाल बनाने का समय ही नहीं मिल पा रहा था।

राजा की इस घोषणा से पहले राजकुमारी के बाल बहुत सुन्दर थे। पर अब समय न मिलने की वजह से उनकी खूबसूरती कम होती जा रही थी।

और जबसे यह बातचीत शुरू हुई थी तबसे, क्योंकि राजकुमार बहुत सारे थे इसलिये यह बातचीत दिन के साथ रात में भी चलती थी, तो राजकुमारी को पूरा आराम भी नहीं मिल पाता था इसलिये उसकी ऑखों के नीचे गहरे गड्ढे भी पड़ गये थे।

बातचीत में हर एक के साथ वह जीत जाती इसलिये हर राजकुमार को महल छोड़ कर जाना ही पड़ जाता। इस चक्कर में महल के रोजाना के काम काज में रुकावट आने लगी क्योंकि महल में रोज बहुत सारे आदमी आते।

हालत इतनी खराब हो गयी कि राजा को एक और ऐलान करवाना पड़ा — "कोई भी नौजवान जो राजकुमारी से शादी की इच्छा से महल में आता है वह अगर राजकुमारी से बहस में हार गया तो उसको कड़ी से कड़ी सजा दी जायेगी।"

राजा की इस नयी घोषणा से आने वाले नौजवानों की गिनती में एकदम से बहुत उतार आ गया। पहली बार राजकुमारी बहुत दिनों के बाद मुस्कुरायी। बहुत दिनों के बाद उसने अपने बाल अपने तरीके से बनवाये। पर राजा के चेहरे पर मुस्कुराहट नहीं थी।

वह सोचने लगा — "अगर मेरी बेटी को कोई नहीं हरा सका तो मेरी बेटी तो कुँआरी ही रह जायेगी।"

उसी समय कुछ ऐसा हुआ कि एक नौजवान भिखारी ने राजा का यह ऐलान सुना तो उसने सोचा "मैं राजकुमारी से बहस में अच्छा क्यों नहीं हो सकता। अगर मैं जीत गया तो मुझे महल में रहने को मिल जायेगा और अगर मैं हार गया तो देखता हूँ कि राजा मुझे क्या सजा देता है।"

यह सोच कर वह भिखारी राजा के महल की तरफ चल दिया। जब वह जा रहा था तो रास्ते में उसने एक मरा हुआ कौआ देखा। उसने उसको देख कर मजा लेते हुए सोचा "क्या पता यह किस काम आ जाये।" और उसने वह कौआ अपनी जेब में रख लिया।

वह फिर महल की तरफ चल दिया। आगे जा कर उसको बीच सड़क पर पड़ा एक पुराना टब मिला।

उसको देख कर उसे याद आयी कि उसकी माँ ने कहा था कि कोई भी चीज़ बर्बाद नहीं करनी चाहिये चाहे वह टूटा हुआ टब ही क्यों न हो, क्या पता यह कब काम आ जाये। यही सोच कर उसने वह टब उठा कर अपनी पोटली में रख लिया और फिर आगे चल दिया।

महल जाते समय उसको कई और चीज़ें भी मिलीं सो उसने वे सब चीज़ें अपनी पोटली में उठा कर रख लीं और महल की तरफ चलता रहा।

फिर उसको एक डंडा मिला, एक हूप[25] मिला और बूढ़े बकरे का एक सींग मिला। हर चीज़ को उठाते हुए उसने यही सोचा कि पता नहीं कौन सी चीज़ कब काम आ जाये इसलिये उसने वे सब चीज़ें उठा कर अपनी पोटली में रख लीं।

सो जब तक वह महल पहुँचा उसकी पोटली कई चीज़ों से भर गयी थी। जब वह महल के दरवाजे पर पहुँचा तो वहाँ खड़े दरबान ने उससे पूछा — "तुम यहाँ क्या कर रहे हो?"

उस नौजवान ने जवाब दिया — "मैं यहाँ राजकुमारी जी से मिलने और उनसे शादी करने आया हूँ। क्या तुम अभी भी मुझसे बदतमीजी से बात करोगे जबकि मैं तुम्हारा होने वाला राजकुमार हूँ?"

[25] Hoop – a large ring which is normally used to put on waist and turn it around it fast.

यह सुन कर तो वह नौकर बहुत ज़ोर से हॅस पड़ा और बोला — "हमारी इतनी सुन्दर राजकुमारी तुमसे शादी क्यों करने लगी? इससे पहले कि राजा के सिपाही तुमको देख लें तुम यहॉ से भाग जाओ।"

पर वह नौजवान भिखारी तो वहॉ उस नौकर की ना सुनने के लिये नहीं आया था। सो उसने उससे प्रार्थना की कि वह कम से कम राजकुमारी को यह तो बता दे कि कोई उससे शादी करने की इच्छा से खड़ा है।

काफी मिन्नतों के बाद वह नौकर उसको अन्दर ले जाने के लिये राजी हो गया। राजकुमारी को भी कई हफ्ते बीत गये थे किसी से बहस किये सो उसने उस नौजवान की प्रार्थना मान ली और उसको अन्दर बुला भेजा।

जैसे ही उस नौजवान ने राजकुमारी को देखा तो बोला — "सलाम, ओ मेरी राजकुमारी जिसके हाथ और दिल दोनों बर्फ के हैं।"

राजकुमारी ने तुरन्त ही उसको काटा — "मेरे दिल के साथ कोई गड़बड़ नहीं है। और जहॉ तक मेरे हाथों का सवाल है वे इतने गर्म हैं कि किसी कौए को भी भून सकते हैं।"

राजकुमारी ने सोचा कि उसकी यह बात उस नौजवान को चुप कर देगी पर उसको तो यह पता ही नहीं था कि वह नौजवान कितना होशियार है या फिर उसकी पोटली के अन्दर क्या है।

उस नौजवान ने आश्चर्य से पूछा — "क्या कहा? एक कौए को भूनने के लिये आपके हाथ काफी गर्म हैं? यह तो अच्छा है एक कौआ मेरे पास भी है। देखते हैं कि आपके हाथ इस कौए को भून सकते हैं या नहीं।"

राजकुमारी भी इतनी बेवकूफ नहीं थी। उसको आश्चर्य तो बहुत हुआ कि उसके पास कौआ कहॉ से आया पर उसने उसको अपने चेहरे पर झलकने नहीं दिया। वह हार मानने वाली भी नहीं थी।

वह बोली — "हम उसको अभी और यहीं भूनेंगें अगर हमारे पास कोई टब हो जिसमें हम उस चिड़िया को रख कर भून सकें।"

नौजवान भिखारी ने पूछा — "तो आपको टब चाहिये? इत्तफाक की बात है कि मेरे पास टब भी है। अरे वह यहीं तो था कहॉ गया।" कह कर वह अपनी पोटली में टब ढूँढने लगा।

जब वह भिखारी अपनी पोटली में टब ढूँढ रहा था तब भी वह राजकुमारी शान्त बैठी थी।

जब भिखारी ने वह टब निकाला तो राजकुमारी ने उसमें एक दरार देख ली तो वह हॅस कर बोली — "तुम क्या सोचते हो कि किसी टूटे बर्तन में चिड़िया पकेगी? यह तो शाह की बेइज़्ज़ती है।"

वह नौजवान मुस्कुराया और बोला — "ओ मेरी राजकुमारी, इस दरार को बन्द करने के लिये मेरे पास एक हूप और एक डंडा है।"

यह सुन कर राजकुमारी की बॉयी ऑख फड़कने लगी और फिर तो वह फड़कनी रुकी ही नहीं।

राजकुमारी के पेट में हलचल सी होने लगी। उसने सोचा इस भिखारी के पास तो सब चीज़ों का जवाब है पर वह इस बात को अभी भी मानना नहीं चाहती थी।

वह बोली — "ओ भिखारी, तुम तो बड़े चिकने हो। तुम मेरे शब्दों को टेढ़ा कर देते हो और तुम किसी भी तरह फॉसे नहीं जाते।"

भिखारी मुस्कुराया — "चिकना और साथ में टेढ़ा भी। ओ राजकुमारी शायद ऐसा कुछ मेरी पोटली में भी है। हॉ यह है न वह। देखिये बकरे का यह टूटा हुआ सींग चिकना भी है फिर भी यह कितनी सुन्दरता से मुड़ा हुआ है। है न राजकुमारी जी?"

भिखारी अपने सवाल के जवाब का इन्तजार कर रहा था पर वहॉ तो कोई जवाब नहीं था। राजकुमारी इसके आगे कुछ नहीं कह सकी।

राजा के साथ सारे लोग आश्चर्य में पड़ गये। राजा ने अपने ऐलान के मुताबिक अपनी बेटी की शादी उस भिखारी से कर दी। सब उस शाही शादी में शामिल हुए।

और फिर उसके बाद तो किसी को कुछ याद ही नहीं रहा। शादी के बाद जब मेहमान जाने लगे तो राजा ने एक और ऐलान किया —

"मेरे मेहमानों, अपने दामाद से मैंने एक सबक सीखा है कि कभी यह मत कहो कि तुम अपना उद्देश्य हासिल नहीं कर सकते और अपने सपने पूरे नहीं कर सकते। अगर तुम अपनी अक्लमन्दी इस्तेमाल करो तो तुम सब कुछ हासिल कर सकते हो।"

14 सिपाही और शैतान[26]

यह लोक कथा भी यूरोप के ऐस्टोनिया देश की लोक कथाओं से ली गयी है।

एक बार की बात है कि एक शैतान को शहर से बाहर एक सिपाही मिल गया। उसने सिपाही से कहा — "मुझे ज़रा शहर घुमा दो क्योंकि मैं वहॉ अकेला नहीं जा सकता।

हालॉकि वहॉ अकेले जाने में मुझे बहुत अच्छा लगता पर ये दो ऑखों वाले कुत्ते मुझे हर सड़क पर घेर लेते हैं। और फिर जैसे ही मैं शहर में घुसता हूँ तो वे मुझ पर हमला कर देते हैं।"

सिपाही बोला — "मैं तुम्हें खुशी से वहॉ ले चलूँगा पर तुम्हें मालूम है कि बिजनैस तो बिजनैस है वह बिना पैसे के नहीं होता।"

शैतान बोला — "तुम्हें क्या चाहिये?"

सिपाही बोला — "कुछ ज़्यादा नहीं क्योंकि तुम्हारे पास तो बहुत सारे पैसे हैं। अगर तुम मेरा यह लम्बी बॉहों वाला दस्ताना पैसों से भर दोगे तो बस मेरे लिये वही काफी है।"

शैतान बोला "ओह इतना तो मेरी जेब में ही है।" और उसने उसका वह लम्बी बॉहों वाला दस्ताना ऊपर तक भर दिया।

---

[26] The Soldier and the Devil – a folktale from Estonia, Europe. Adapted from the Web Site : http://www.sacred-texts.com/neu/hoe/hoe2-27.htm by Jannsen.
Taken from the book "The Hero of Esthonia", by William Forsell Kirby. London, 1895. 2 vols. This tale is in Vol 2.

उसके बाद सिपाही बोला "मैं नहीं जानता कि मैं तुमको कहॉ रखूँ। पर ज़रा रुको। तुम ऐसा करो कि तुम मेरे इस कन्धे पर लटकाने वाले थैले में बैठ जाओ। तुम यहॉ और किसी भी जगह से ज़्यादा सुरक्षित रहोगे।"

"यह ठीक है पर तुम्हारे इस थैले में तो तीन रस्सियॉ हैं। इस तीसरी वाली रस्सी को मत बॉधना वरना वह मेरे लिये ठीक नहीं होगा।"

"ठीक है। तुम बैठो तो।"

सो वह शैतान उसके उस थैले में बैठ गया। पर वह सिपाही उन लोगों में से था जो अपना वायदा नहीं निभाते। जैसे ही वह शैतान उस थैले में बैठा उसने तीनों रस्सियों को कस कर बॉध दिया।

और यह कहता हुआ शहर की तरफ चल दिया कि किसी सिपाही को शहर में किसी खुली रस्सी के साथ नहीं जाना चाहिये। तुम क्या सोचते हो कि अगर मेरा कौरपोरल मुझे इस तरह गन्दे तरीके से देखेगा तो क्या वह तुम्हारी वजह से मुझे माफ कर देगा।

सिपाही का एक दोस्त लोहार था जो शहर के दूसर कोने में रहता था। वह उस शैतान को अपने थैले मे ले कर सीधा उसी के पास चला गया।

वहॉ जा कर वह उससे बोला — "दोस्त ज़रा मेरे थैले को अपने लोहा पीटने की जगह पर रख कर पीट कर मुलायम कर दो।

मेरा कोरपोरल हमेशा ही यह कहता है कि मेरा थैला सूखे चमड़े के जूते की तरह सख्त है।"

"ठीक है। इसको यहाँ रख दो।" कह कर उसने उसको इशारे से अपना लोहा पीटने की जगह दिखा दी। सिपाही ने अपना थैला वहाँ रख दिया और उस लोहार ने उस थैले को हथौड़े से मारना शुरू कर दिया।

फिर वह उसे तब तक मारता रहा जब तक उस चमड़े में से बाल नहीं निकलने लगे।

कुछ देर बाद उसने पूछा — "अब ठीक है?"

सिपाही बोला — "हाँ अब ठीक है।" कह कर उसने अपना थैला अपने कन्धे पर डाला और सीधा शहर चला गया। वहाँ पहुँच कर उसने शैतान को बीच सड़क पर बाहर निकाल दिया।

लोहार के मारने से वह शैतान तो अब मुशरूम की तरह से बिल्कुल चौरस हो गया था। वह अपने पैरों पर भी बड़ी मुश्किल से खड़ा हो पा रहा था। उसके साथ इतना बुरा पहले कभी नहीं हुआ था।

पर सिपाही के पास तो बहुत पैसा था उसके अपने लिये भी और उसके बच्चों के लिये भी। सो वह ज़िन्दगी भर खूब आराम से रहा।

जब वह सिपाही मर गया और वह दूसरी दुनियाँ में पहुँचा तो वह नरक में पहुँचा। उसने जा कर वहाँ का दरवाजा खटखटाया।

शैतान ने यह देखने के लिये बाहर झॉका कि वह कौन था जो उसका दरवाजा खटखटा रहा था।

उसको देखते ही वह चिल्लाया "ओह तुम, नीच तुम? तुम्हारी यहॉ कोई जरूरत नहीं है। तुम जहॉ जाना चाहो वहॉ जाओ पर तुम यहॉ अन्दर नहीं आ सकते।"

और यह कह कर अपना दरवाजा ज़ोर से बन्द कर दिया। सो वह सिपाही सीधा भगवान के पास गया और जा कर उन्हें बताया कि उसके साथ क्या हुआ था।

भगवान बोले "कोई बात नहीं तुम यहॉ ठहर सकते हो। सिपाहियों के लिये यहॉ बहुत जगह है।"

उसके बाद से शैतान ने कभी किसी सिपाही को नरक में नहीं घुसने दिया और इस तरह अब सिपाही नरक नहीं जाते।

15 एक अनाथ लड़का और नरक के कुत्ते[27]

एक बार की बात है कि एक जगह एक गरीब मजदूर और उसकी पत्नी रहते थे। वह बेचारा अपनी गरीबी की ज़िन्दगी को रोज किसी तरह खींच रहा था। उनके तीन बच्चे हुए पर उन तीनों में से केवल एक सबसे छोटा वाला बच्चा ही बचा था।

यह लड़का भी जब केवल नौ साल का ही था जब उसने पहले अपने पिता को और फिर अपनी मॉ को दफ़न किया। अब उसके पास सिवाय भीख मॉगने के अपने खाने का और कोई साधन नहीं था सो वह घर घर जा कर भीख मॉगा करता था।

एक साल बाद कुछ ऐसा हुआ कि वह एक अमीर किसान के घर ऐसे मौके पर आया जब उनको एक गड़रिये की जरूरत थी। किसान तो बर्ताव में इतना बुरा आदमी नहीं था पर परेशानी यह थी कि घर के सारा मामलात उसकी पत्नी के हाथ में थे। और वह बहुत निर्दयी थी।

इसको अच्छी तरह से सोचा जा सकता है कि वह इस स्त्री के हाथों कैसे कैसे दर्द सहता होगा। वह उसको दिन में तीन बार काफी

[27] The Orphan Boy and the Hell-Hounds – a folktale from Estonia, Europe. Taken from the Web Site: http://www.gutenberg.org/files/19438/19438-h/volume1.html#Page_207
Taken from the book “The Hero of Esthonia”, by William Forsell Kirby. London, 1895. 2 vols. This tale is in Vol 2.

काफी मारती पर खाने को रोटी कभी काफी नहीं देती। पर वह तो बेचारा अनाथ था सो इसके आगे वह और सोचता भी क्या।

वह बेचारा अपने इन दुखों को सहता ही रहता।

एक दिन उसकी परेशानियों में एक और जुड़ गयी। एक दिन उससे एक गाय खो गयी। वह जंगल में चारों तरफ ऊपर से ले कर नीचे तक घूमता रहा पर उसकी गाय नहीं मिली।

हालॉकि उसको पता था कि घर जा कर क्या होने वाला था पर फिर भी वह क्या करता शाम को उसने अपने सारे जानवर इकट्ठे किये और खोयी हुई गाय को लिये बिना ही घर चल दिया।

अभी सूरज पूरी तरह से डूबा नहीं था कि उसने अपनी मालकिन की आवाज सुनी — "अरे ओ आलसी कुत्ते। तू अभी तक जानवरों के साथ कहॉ घूमता फिर रहा था।"

वह और ज़्यादा इन्तजार नहीं कर सका और घर जल्दी पहुॅचने पर मजबूर हो गया। जब वह घर के दरवाजे पर पहुॅचा तो शाम का धुॅधलका छा गया था पर मालकिन की तेज़ ऑखों ने देख लिया कि आज एक गाय कम है।

बिना एक भी शब्द कहे उसने अपने मकान की बाड़ का पहला डंडा उखाड़ा और लड़के को उससे पीटना शुरू कर दिया। ऐसा लगता था जैसे कि वह मार मार कर उसकी जैली[28] बना देगी।

[28] Jelly is made of fruit juice by condensing it into spreadable material on a toast

उस समय उसको इतना गुस्सा आ रहा था कि लगता था कि वह उसको वहीं जान से मार देगी या फिर ज़िन्दगी भर के लिये अपाहिज कर देगी। वह तो यह कहो कि उसकी चीख चिल्लाहट सुन कर किसान वहॉ आ गया और उसने उसे बचा लिया।

पर क्योंकि उसको अपनी गुस्सैल पत्नी का स्वभाव मालूम था इसलिये वह सीधे सीधे तो बीच में बोल नहीं सकता था पर किसी तरह से उसने उसको मना कर लड़के को बचा लिया — "बच्चा है इसको इतनी ज़ोर से मत पीटो नहीं तो वह तुम्हारी खोयी हुई गाय ढूँढ कर भी कैसे लायेगा। अगर तुम इसे मारोगी नहीं तो हमें इससे बहुत फायदा होने वाला है।"

किसान की पत्नी बोली "यह तो तुम ठीक कह रहे हो। इसका तो सड़ा हुआ मॉस भी किसी गाय के अच्छे मॉस के बराबर नहीं होगा।" फिर उसने उसको दो–चार बार और मार कर कहा कि वह अब जाये और गाय ढूँढ कर लाये।

लड़का बेचारा रोता हुआ दरवाजे से तुरन्त ही बाहर निकल गया और जंगल में उसी जगह चला गया जहॉ वह दिन में गायें चराने गया था। वहॉ वह वह सारी रात गाय ढूँढता रहा पर उसे कहीं उसका नामो निशान तक भी नहीं मिला।

पर अगले दिन जब सूरज उगा तो उसने अपने मन में तय कर लिया कि उसे क्या करना है – "अब चाहे कुछ भी हो मैं घर वापस

नहीं जाऊँगा।" यह सोच कर वह वहाँ से वह सीधा बहुत ज़ोर से भाग गया जब तक कि वह घर से बहुत दूर नहीं पहुँच गया।

उसको खुद भी नहीं पता था कि वह घर से कितनी दूर भाग आया है जब तक कि वह थक कर चूर नहीं हो गया। तब तक दोपहर हो गयी थी वह आराम करने के लिये बैठ गया और सो गया।

काफी देर बाद जब वह सो कर उठा तो उसे अपने मुँह में कुछ ठंडा जाता हुआ महसूस हुआ। उसने आँखें खोल कर देखा तो एक छोटा सा बूढ़ा जिसकी लम्बी सफेद दाढ़ी थी अपना चमचा दूध के डिब्बे की तरफ वापस ले जा रहा था।

लड़का बोला — "मेहरबानी कर के मुझे थोड़ा सा और दीजिये।"

बूढ़ा बोला — "इतना तुम्हारे लिये आज के लिये काफी है। अगर मैं इत्तफाक से इधर से न गुजर रहा होता तब तुम अपनी यह आखिरी नींद सो रहे होते। क्योंकि जब मैंने तुम्हें देखा तब तुम बिल्कुल अधमरे हो रहे थे।"

इसके बाद बूढ़े ने लड़के से पूछा कि वह कहाँ से आया था और किधर जा रहा था। लड़के ने जहाँ तक उसे याद था उसे वह सब कुछ बता दिया जो भी उसके साथ हुआ था।

बूढ़े ने उसकी कहानी बिना कुछ बीच में बोले ध्यान से सुनी। फिर थोड़ी देर बाद बोला — "बच्चे। उन दूसरे लोगों की तुलना में

जिनके दोस्त और रक्षा करने वाले जमीन के नीचे सोते हैं न तो तुमने कुछ बहुत अच्छा किया है और न ही खराब किया है। अब क्योंकि तुम भाग आये हो तो तुम्हें अपनी किस्मत दुनियॉ में कहीं और आजमानी चाहिये।

पर क्योंकि मेरे पास न तो कोई घर ही है और न ही कोई खेत न मेरे पास कोई पत्नी है और न ही कोई बच्चा तो मैं ऐसे तो तुम्हारी कोई सहायता नहीं कर सकता पर मैं तुम्हें एक अच्छी सलाह जरूर दे सकता हूँ।

आज की रात तो तुम यहीं सोओ। पर कल सुबह देखना कि सूरज किस जगह उगता है। जिस दिशा में वह उगता है तुम उसी दिशा में चले जाना ताकि जाते समय हर सुबह सूरज तुम्हारे सामने रहे और हर शाम सूरज तुम्हारी पीठ के पीछे रहे।

हर दिन तुम अपने आपको ज़्यादा ताकतवर पाओगे। हर सात साल बाद तुम्हें अपने सामने एक पहाड़ मिलेगा। वह पहाड़ इतना ऊँचा होगा कि कि उसकी चोटियॉ बादलों को छू रही होंगी। वहॉ तुमको अपना भविष्य बनाने को मिलेगा।

तुम मेरा यह थैला और यह थरमस ले जाओ। इनमें तुम्हें जितना चाहोगे खाने पीने के लिये मिल जायेगा। लेकिन हमेशा ही एक टुकड़ा खाने का और एक बूँद पानी बिना छुआ छोड़ देना नहीं तो इसके खाने और पीने का खजाना खाली हो जायेगा।

तुम किसी भी भूखी चिड़िया को आराम से खिला सकते हो या किसी भी प्यासे जानवर को पानी पिला सकते हो क्योंकि भगवान उन लोगों से खुश रहता है जो उसके बनाये दूसरे प्राणियों की सहायता करते हैं।

इस थैले की तली में तुमको प्लान्टेन[29] का एक मुड़ा हुआ पत्ता मिलेगा। उसकी तुमको बहुत अच्छे से देखभाल करनी है। जब तुम अपनी यात्रा में किसी नदी या झील के पास आओ तो उस पत्ते को उसके ऊपर बिछा देना तो वह तुरन्त ही एक नाव बन जायेगी जो तुम्हे उस नदी या झील के उस पार उतार देगी। उसके बाद उस पत्ते को फिर से मोड़ कर अपने थैले में रख लेना।"

इस तरह से उसको बताने के बाद उसने अपना थैला और थरमस दोनों उसको दे दिये और बोला "भगवान तुम्हारी रक्षा करे।" यह कह कर वह वहॉ से गायब हो गया।

लड़के को मान लेना चाहिये था कि यह सब सपना था अगर उसके हाथ में वह थैला और थरमस नहीं होता तो। वह उसको विश्वास दिला रही थी कि वह सपना नहीं बल्कि सच था।

तब उसने वह थैला देखा तो उसमें आधी डबलरोटी रखी हुई थी थोड़ी से नमकीन मछली रखी थी कुछ मक्खन और एक टुकड़ा सूअर के मॉस का रख हुआ था।

[29] Plantain is like banana but much bigger than it. Its tree is similsr to banana tree.

जब लड़के का खा कर पेट भर गया तो वह सोने के लिये लेट गया। थैला और थरमस उसने अपने सिर के नीचे रख लिया ताकि कोई चोर उससे उन्हें न ले सके।

अगली सुबह जब वह उठा तो सूरज निकल आया था। उसने अपना नाश्ता पानी किया और फिर अपनी यात्रा पर चल दिया। यह बड़ी अजीब सी बात थी कि उसको थकान बिल्कुल भी नहीं लग रही थी। केवल भूख प्यास से ही उसे पता चला कि अब दोपहर हो गयी है।

उसने खाना खाया और उसे वह अच्छा भी लगा। फिर वह थोड़ी सी देर के लिये आराम करने के लिये लेट गया। जब वह सो कर उठा तो फिर अपनी यात्रा पर चल दिया। जब सूरज ठीक उसके पीछे डूबा तो उसे पता चल गया कि वह ठीक रास्ते पर ही चला जा रहा था।

उसी दिशा में वह बहुत दिनों तक चलता रहा। चलते चलते वह एक छोटी सी झील के पास आया। अब उसके पास मौका था कि वह उस पत्ते के गुणों को परखे। जैसा कि बूढ़े ने कहा था उसी कहना हुआ।

जैसे ही उसने प्लान्टेन का पत्ता पानी के ऊपर रखा तो वह एक छोटी सी नाव में बदल गया। उसने कुछ बार ही उसकी पतवार चलायी होगी कि वह झील के उस पार पहुँच गया। वहाँ पहुँच कर

नाव फिर से पत्ते में बदल गयी। लड़के ने पत्ता मोड़ कर अपने थैले में रख लिया और आगे चल दिया।

इस तरह लड़का कई साल तक चलता रहा। उसको थैले में से खाना मिलता रहा और थरमस से शराब मिलती रही। उसको घूमते घूमते सात साल हो गये थे अब तो वह एक नौजवान आदमी भी बन गया था।

कि एक दिन उसे अपने सामने एक बहुत बड़ा पहाड़ दिखायी दिया। लग रहा था कि उसकी चोटियॉ आसमान को छू रही थीं। पर उसको उसकी तली तक पहुँचने में भी एक हफ्ता लग गया। वहॉ जा कर वह थोड़ा आराम करने बैठ गया और सोचने लगा कि उस बूढ़े की भविष्यवाणी सही होगी या नहीं।

उसको वहॉ बैठे बहुत देर नहीं हुई थी कि एक अजीब तरह कै हिस्स्स्स उसको सुनायी दी। तुरन्त बाद ही एक बहुत बड़ा सॉप उसके सामने था। वह करीब करीब बारह फ़ैथम[30] लम्बा था और उसके सामने खड़ा था।

उसको देख कर वह तो डर के मारे वहीं बैठा का बैठा रह गया हिल भी नहीं सका। पर सॉप पल भर में ही उसके पास से गुजर गया। फिर कुछ देर के लिये बिल्कुल शान्त हो गया।

[30] 1 Fathom = 1.82 meters. So 12 Fathom = 12 x 1.82 = 21.84 meters

फिर कुछ देर बाद में उसको लगा जैसे कोई धीरे धीरे कूदता हुआ उसके पास आ रहा हो। यह एक बड़ा सा मेंढक निकला। यह मेंढक भी किसी घोड़े के दो साल के बच्चे के बराबर था। यह भद्दा सा दिखायी देने वाला जानवर भी उसकी तरफ बिना देखे उसके पास से निकल गया।

उसके बाद उसको लगा जैसे कोई उसके ऊपर से चला गया हो जैसे कोई तूफान आ गया हो। उसने ऊपर देखा तो वह तो एक बहुत बड़ा गरुड़ था जो उसके ऊपर से उड़ गया। वह भी उड़ता हुआ उसी दिशा में ही चला गया था जिसमें सॉप और मेंढक गये थे।

नौजवान ने सोचा कि क्या ऐसी चीज़ें मेरे लिये खुशकिस्मती ले कर आयेंगी। अचानक उसने देखा कि आदमी काले घोड़े पर सवार हो कर आ रहा है। घोड़े के खुरों में पंख लगे दिखायी दे रहे थे क्योंकि वह हवा की तरह से उड़ता हुआ आ रहा था।

जब आदमी ने एक नौजवान को पहाड़ की तलहटी में बैठे देखा तो उसने अपने घोड़े को लगाम दे कर उस नौजवान से पूछा — "यहॉ से कौन कौन गया?"

नौजवान बोला — "पहले तो यहॉ से एक सॉप गया जो करीब करीब बारह फ़ैथम लम्बा था। फिर एक मेंढक गया जो एक दो साल के घोड़े के बच्चे जितना बड़ा था। और फिर मेरे सिर के ऊपर

से एक गरुड़ गया। मैं उसका साइज़ तो नहीं देख सका पर उसके पंखों की आवाज किसी तूफान की आवाज से कम नहीं थी।"

अजनबी बोला — "तुमने ठीक देखा। ये मेरे सबसे बड़े दुश्मन थे। मैं इस समय इन्हीं का पीछा कर रहा था। अगर तुम्हारे पास इससे ज़्यादा अच्छा करने के लिये कुछ नहीं है तो मैं तुम्हें अपनी सेवा में ले सकता हूँ।

तुम पहाड़ पर आ जाओ वहीं मेरा मकान है। अगर तुमसे जल्दी नहीं तो उस समय तक मैं भी वहाँ पहुँच जाऊँगा जिस समय तुम वहाँ पहुँचोगे।"

नौजवान ने वहाँ आने का वायदा किया और वह अजनबी फिर से हवा की चाल से उड़ता हुआ चला गया।

वह पहाड़ चढ़ना नौजवान के लिये कोई आसान काम नहीं था। पहाड़ पर चढ़ने के लिये उसे तीन दिन लगे फिर उसके दूसरी तरफ की तलहटी की तरफ पहुँचने में उसको तीन दिन और लग गये।

जब वह उस अजनबी के घर पहुँचा तो उसका नया साथी अपने घर के सामने ही बैठा हुआ था। उसने नौजवान को बताया कि उसने साँप और मेंढक को तो मार दिया है पर गरुड़ का अभी पता नहीं चला है।

तब उस अजनबी ने नौजवान से पूछा कि क्या वह उसका नौकर बनना पसन्द करेगा। उसने कहा — "तुमको जितना चाहिये और जितना अच्छा खाना चाहिये रोज तुमको उतना ही अच्छा खाना

खाने को मिलेगा। अगर तुम मेरा काम वफादारी से करोगे तो मैं तुम्हें बहुत सारी तनख्वाह भी दूँगा।"

नौजवान को यह सौदा मंजूर था। मालिक अपने नौकर को घर के अन्दर ले गया। उसने उसको दिखाया कि उसको क्या करना था।

वहाँ एक चट्टान में से एक कमरा काटा गया था जिसमे तीन लोहे के दरवाजे लगे हुए थे। उसने बताया कि मेरे जंगली कुत्ते यहाँ बँधे रहते हैं और तुमको इस बात का ध्यान रखना है कि यहाँ से ये अपने पंजों से दरवाजे के नीचे की जमीन खोद कर कहीं बाहर न निकल जायें।

क्योंकि तुम एक बात जान लो कि अगर इनमें से एक कुत्ता भी यहाँ से छूट कर बाहर चला गया तो बचे हुए कुत्तों को यहाँ पकड़ कर रखना नामुमकिन है क्योंकि हर एक कुत्ता दूसरे के पीछे भागेगा और फिर बाहर निकल कर जो कुछ भी दुनियाँ में है सब चीज़ों का नाश करेगा। जब आखिरी कुत्ता छूटेगा तो समझो कि दुनियाँ ही खत्म हो जायेगी। सूरज आखिरी बार चमकेगा।"

फिर वह अपने नौकर को एक पहाड़ी पर ले गया जो भगवान की बनायी नहीं थी बल्कि आदमियों ने बड़े बड़े पत्थर एक जगह रख कर बना दी थी।

मालिक ने कहा — "ये पत्थर यहाँ ला कर इकट्ठा किये गये हैं ताकि एक नया पत्थर हमेशा ही इसके ऊपर रखा जा सके जब कभी

भी कोई कुत्ता गड्ढा खोदे। आओ अब तुम्हें मैं एक बैलों के घर में रखे हुए वे बैल दिखाता हूँ जो ये पत्थर खींचते हैं और फिर दूसरी बातें समझाता हूँ जो तुम्हें करनी हैं।"

उस बैल रखने की जगह में करीब सौ काले बैल थे। जिनमें से हर एक के सात सींग थे। वे सब इतने बड़े बैल थे जितने कि यूकेन[31] का कोई भी सबसे बड़ा बैल हो सकता है।

एक वैगन के आगे छह बैल लगते हैं तब कहीं जा कर वे एक पत्थर को आसानी से खींच पाते हैं। मैं तुम्हें एक कोबार दूँगा। जब तुम उससे किसी पत्थर को छुओगे तो वह पत्थर लुढ़क कर अपने आप ही वैगन में चला जायेगा।

तुम देखोगे कि तुम्हारा काम में कोई ज़्यादा मेहनत नहीं है पर उसमें तुम्हारी पहरेदारी की बहुत ज़्यादा जरूरत है। तुमको दरवाजे की तरफ कम से कम तीन बार दिन में देखना पड़ेगा और एक बार रात में। कहीं ऐसा न हो कि कहीं कोई गड़बड़ न हो जाये। क्योंकि उस गड़बड़ का जवाब तुम्हें मुझे देना बहुत भारी पड़ेगा।"

नौजवान ने अपना काम सब बहुत अच्छी तरह से समझ लिया। यह काम उसकी पसन्द का भी था। रोज उसको सबसे अच्छा खाना पीना मिलता जिसकी कोई आदमी इच्छा कर सकता था।

[31] Ukraine – here it may mean from urus which has been extinct species

दो–तीन महीने बाद एक कुत्ते ने दरवाजे के नीचे कुछ खुरच लिया – इतना बड़ा कि उसमें उनकी पूँछ आ सकती थी। पर एक पत्थर तुरन्त ही नीचे गिर पड़ा जिससे कुत्तों को अपना काम फिर से शुरू करना पड़ता।

इस तरह से बहुत साल गुजर गये। नौजवान के पास अब बहुत सारा पैसा हो गया था। अब एक दिन उसकी इच्छा हुई कि वह दूसरे लोगों के साथ मिले जुले क्योंकि कई सालों से उसने अपने मालिक के अलावा किसी दूसरे आदमी को देखा तक नहीं था।

हालॉकि उसका मालिक बहुत दयालु था फिर भी नौजवान को इस बात की इजाज़त लेने में बहुत दिन लग गये क्योंकि अब उसके मालिक को बहुत देर तक सोने की आदत पड़ गयी थी। अपनी लम्बी नींद लेने के लिये वह कभी कभी सात सात हफ्ते तक सोता था। इस बीच वह जागता भी नहीं था और बाहर भी नहीं निकलता था।

एक बार ऐसा हुआ कि मालिक अपनी गहरी नींद में सो रहा था कि एक दिन एक बहुत बड़ा गरुड़ उस पत्थरों वाली पहाड़ी पर आ कर बैठ गया और बोला — "क्या तुम बहुत बड़े बेवकूफ नहीं हो कि तम अपनी ज़िन्दगी के आनन्द को अच्छी तरह ज़िन्दगी बिताने के लिये कुर्बान कर रहे हो।

यह जो पैसा तुमने कमाया है यह बिल्कुल बेकार है क्योंकि यहॉ कोई आदमी ऐसा नहीं जिसे इसकी जरूरत हो। तुम अपने मालिक

की घुड़साल से उसका सबसे तेज़ भागने वाला घोड़ा निकालो अपने पैसे का थैला उसकी गर्दन से बॉधो और उस दिशा में भाग जाओ जिसमें सूरज डूबता है। कुछ हफ्ते बाद तुम दूसरे आदमियों को देख पाओगे।

पर तुम उस घोड़े को लोहे की जंजीरों से बॉध कर रखना कि कहीं वह भाग न जाये। नहीं तो वह अपने पुराने मालिक के पास आ जायेगा और फिर तुम्हारा पुराना मालिक तुमको ढूँढ लेगा और तुमसे आ कर लड़ेगा। पर अगर उसके पास घोड़ा नहीं है तब वह तुमको नहीं ढूँढ पायेगा।"

नौजवान ने तुरन्त पूछा — "मेरा मालिक तो सोया हुआ है। अगर में उसके सोते में चला गया तो फिर मालिक के कुत्तों की पहरेदारी कौन करेगा।"

गरुड़ बोला — "तुम बेवकूफ हो और बेवकूफ ही रहोगे। क्या तुम्हें अभी तक पता नहीं चला कि भगवान ने उसे नरक के कुत्तों की पहरेदारी के लिये बनाया है। यह केवल उसका आलस है कि वह सात सात हफ्ते तक सोता है। जब उसके पास कोई काम करने वाला नहीं होगा तो वह अपना काम अपने आप ही करेगा।"

यह सलाह तो नौजवान को बड़ी अच्छी लगी। उसने उसकी सलाह मानने का फैसला कर लिया। उसने मालिक का तेज़ दौड़ने वाला घोड़ा निकाला अपना पैसा एक थैले में भर कर उसकी गर्दन में बॉधा उस पर कूद कर सवार हुआ और दौड़ चला।

अभी वह पहाड़ से कुछ ज़्यादा दूर नहीं गया था कि उसने अपने मालिक की आवाज सुनी — "अपना पैसा तो लेते जाओ भगवान के नाम पर। फिर चले जाना। और मेरा घोड़ा तो मेरे पास छोड़ते जाओ।"

पर नौजवान ने उसकी तरफ कोई ध्यान नहीं दिया सीधा उस पर दौड़ा चला गया। कुछ हफ्तों बाद वह अपनी दुनियॉ में आ गया था।

दुनियॉ में आ कर उसने एक बहुत बढ़िया घर बनवाया एक सुन्दर सी लड़की से शादी की और एक अमीर आदमी की तरह से शान से रहा।

अगर वह मरा नहीं है तो वह अभी भी हॅसी खुशी रह रहा होगा। हॉ उसका घोड़ा तो बहुत दिन हुए मर गया।

16 शाही गड़रिया[32]

एक बार की बात है कि एक राजा था जो अपनी प्रजा पर इतना दयालु और नम्र था कि उसके राज्य में कोई ऐसा नहीं था जो उसको दुआ न देता हो। उसकी लम्बी ज़िन्दगी के लिये भगवान से प्रार्थना न करता हो।

राजा अपनी पत्नी के साथ हॅसी खुशी कई साल तक रहा पर अभी तक उसके कोई बच्चा नहीं था। पर आखिर जब रानी ने एक बच्चे को जन्म दिया तो राज्य भर में बहुत खुशियॉ मनायी गयीं।

पर उनकी यह खुशी बहुत ही कम समय तक रही। राजकुमार के जन्म के तीन दिन बाद ही रानी अपने पति और बेटे को इस तरह अकेला छोड़ कर चल बसी।

राजा के दुख का कोई अन्त नहीं था। वह अपनी पत्नी के दुख में बहुत दुखी था। सारा राज्य उसके दुख में दुखी था। कहीं कोई भी खुश चेहरा दिखायी नहीं देता था।

तीन साल बाद राजा ने अपनी प्रजा के कहने पर दूसरी शादी कर ली। पर उसक यह दूसरा चुनाव भी उसके लिये कुछ बहुत

---

[32] Royal Herd-Boy – a folktale from Estonia, Europe. Taken from the Web Site: http://www.gutenberg.org/files/19438/19438-h/volume1.html#Page_207
Taken from the book "The Hero of Esthonia", by William Forsell Kirby. London, 1895. 2 vols. This tale is in Vol 1.

अच्छा नहीं रहा। ऐसा था जैसे उसने एक फाख्ता को दफ़ना कर एक बाज से शादी कर ली हो।

बदकिस्मती से ऐसा बहुत लोगों के साथ होता है जो दूसरी शादी करते हैं। उसकी यह दूसरी पत्नी बहुत ही नीच किस्म की स्त्री थी। उसने राजा या प्रजा दोनों के साथ कभी कोई अच्छा व्यवहार नहीं किया।

वह पहली रानी के बच्चे को फूटी ऑख नहीं देख सकती थी। उसको लगता था कि राजकुमार की उन्नति उसको नीचे गिरा देगी। उधर सब उस राजकुमार को बहुत प्यार करते थे क्योंकि वही एक राजा का वारिस था और उसकी मॉ भी नहीं थी।

एक बार उसने बड़ी नीच योजना बनायी जिससे वह राजकुमार को वहॉ भेज दे जहॉ उसे राजा कभी ढूँढ न सके। क्योंकि उसके अन्दर इतनी हिम्मत नहीं थी कि वह उसको मार सके।

इसके लिये उसने एक दूसरी नीच स्त्री को बुलाया और उसको बहुत सारे पैसे दे कर यह काम सौंपा। उस नीच स्त्री ने रात को उसे बुलाया और बच्चे को उसे सौंप दिया और वह उस बच्चे को उन रास्तों से ले गयी जिन पर शायद ही कभी कोई आता जाता हो। बहुत दूर जा कर उसने उसे एक गरीब परिवार को पालने पोसने के लिये दे दिया।

जब वह उसको ले कर जा रही थी तो रास्ते में ही उसने उसके अच्छे कपड़े निकाल लिये और उसको फटे कपड़ों में लपेट दिया

ताकि कोई उसके धोखे को न जान सके। रानी ने उस स्त्री को कसम दे रखी थी कि वह यह बात किसी से नहीं कहेगी कि वह बच्चे को कहॉ छोड़ कर आयी थी।

बच्चे को चुराने वाली यह काम दिन में नहीं कर सकती थी क्योंकि लोग उसका पीछा कर सकते थे इसलिये यह काम करने के लिये उस काफी दिन लग गये। उसने उस किसान परिवार को बच्चे को पालने के लिये सौ रूबल[33] भी दिये।

यह राजकुमार की खुशकिस्मती थी कि वह एक अच्छे परिवार में पहुॅच गया था। वे लोग उसकी इतनी अच्छी देखभाल करते थे जैसे वे अपने बच्चे की देखभाल कर रहे हों।

राजकुमार अपनी बातों से उनको बहुत हॅसाता खास कर के जब वह यह कहता कि वह एक राजकुमार है। उनको बच्चे के पालने के लिये इतना पैसा मिल रहा था कि उनको जल्दी ही यह पता चल गया कि वह बच्चा किसी सामान्य आदमी का नहीं है।

वह अपने माता या पिता के परिवार की तरफ से किसी कुलीन परिवार का होना चाहिये। पर इतना ऊॅचा विचार उनके दिमाग में कभी नहीं आया कि बच्चा सच कह रहा था।

इस बात को तो केवल सोचा ही जा सकता है कि महल में क्या हल्ला गुल्ला हुआ होगा जब राजकुमार के गायब होने की बात लोगों को पता चली होगी। और वह भी कुछ इस तरह कि किसी को कुछ

[33] Rouble – currency of the country

पता ही न चले। और चोर ने भी अपनी चोरी का कोई छोटे से छोटा सुराग न छोड़ा हो।

राजा कई दिनों तक अपने बेटे के लिये बहुत रोता रहा। वह उसको उसकी मॉ की याद में बहुत प्यार करता था। इसके अलावा वह अपनी नयी पत्नी से भी बहुत नाखुश था। हर जगह उसकी खोज की गयी पर उसका कहीं नामोनिशान भी नहीं मिला।

जो उसको ढूँढ कर लायेगा उसको भारी इनाम की भी घोषणा की गयी पर सारी कोशिशें बेकार गयीं। ऐसा लग रहा था जैसे बच्चा कहीं हवा में उड़ गया हो। कोई जंगल की उस अकेली झोंपड़ी तक नहीं पहुँच सका जिसमें राजकुमार पल रहा था।

जब कोई भी इस भेद को नहीं खोल सका तो लोग सोचने लगे कि राजकुमार को या तो कोई बुरी आत्मा उठा कर ले गयी है या फिर किसी ने उस पर कोई जादू कर दिया है।

महल में तो यह सोचा जा रहा था कि राजकुमार मर गया था जबकि राजकुमार तो जंगल में पल रहा था और आराम से रह रहा था। समय बीतता गया तो अब वह इतना बड़ा हो गया था कि कुछ काम कर सकता।

इस बीच लड़का अक्लमन्द भी बहुत हो गया था। इतना कि उसके किसान माता पिता यह सोचने लगे था कि अंडा मुर्गी से ज़्यादा होशियार था।

इस तरह राजकुमार को वहॉ रहते रहते दस साल से भी ज़्यादा हो गये। अब उसकी यह इच्छा होने लगी कि वह किसी और के साथ भी बैठे उठे। सो एक दिन उसने अपने किसान माता पिता से विनती की कि वे उसको अपने आप रोटी कमाने दें।

उसने कहा कि "अब मैं खूब ताकतवर हूँ और बिना आपकी सहायता के रह सकता हूँ। मुझे यहॉ अकेले रहने में समय बहुत लम्बा लम्बा लगता है। पहले तो किसान और उसकी पत्नी ने इस बात को नहीं माना मगर फिर आखिर उनको हॉ कहनी ही पड़ी।

उसकी नौकरी ढूँढने में सहायता करने के लिये किसान खुद भी उसके साथ गया। उसको गॉव में एक अमीर किसान मिल गया जिसको एक लड़का चाहिये था जो उसके जानवर चरा लाता। उधर उसके बेटे को कोई भी काम चाहिये था सो दोनों राजी हो गये।

यह सौदा एक साल के लिये हो गया। पर साथ में तय यह भी हुआ कि लड़का जब चाहे नौकरी छोड़ सकता है और अपने किसान माता पिता के पास आ सकता है। साथ में यह भी तय हुआ कि अगर किसान उसके काम से सन्तुष्ट नहीं होगा तो वह भी कभी भी उसको काम से निकाल देगा। पर उसके किसान माता पिता को बता कर ही।

अब यह लड़का जहॉ काम करता था वहॉ से राजमार्ग[34] पास ही था। उस पर से हजारों लोग रोज आते जाते थे – बड़े लोग भी और छोटे लोग भी।

अब यह शाही गड़रिया अक्सर सड़क के पास बैठ जाता और आते जाते लोगों से बात करता। उन लोगों से उसने बहुत कुछ सीखा जिसके बिना वह उन चीज़ों से अनजान रह जाता।

एक दिन क्या हुआ कि एक सफेद बाल और सफेद दाढ़ी वाला बूढ़ा उधर से गुजरा। राजकुमार उस समय एक पत्थर पर बैठा हुआ था और बॉसुरी बजा रहा था। उसके जानवर उसके आस पास चर रहे थे। अगर कोई जानवर दूर चला जाता तो लड़के का कुत्ता उसको फिर वापस ले आता।

वह बूढ़ा पहले तो लड़के और उसके जानवरों की तरफ देखता रहा फिर कुछ कदम उसकी तरफ बढ़ कर उससे बोला — "तुम जन्म से गड़रिया तो नहीं लगते।"

लड़का बोला — "हो सकता है। मैं तो बस इतना जानता हूॅ कि मैं राज करने के लिये पैदा हुआ हूॅ और पहले मैंने राज करने के नियम सीखे थे। पर अभी अगर में ये चार पैर वाले चराता हूॅ तो यही ठीक है। बाद में मैं अपनी किस्मत दो पैर वालों के साथ आजमाऊॅगा।"

[34] Translated for the Word "Highway"

बूढ़े ने आश्चर्य से अपना सिर ना में हिलाया और अपने रास्ते चला गया।

एक दूसरे दिन एक बहुत ही सुन्दर गाड़ी आयी जिसमें एक स्त्री और दो बच्चे बैठे हुए थे। उसका कोचमैन आगे बैठा था और नौकर पीछे खड़ा था। उस दिन राजकुमार के पास ताजा तोड़ी हुई स्ट्रौबैरी से भरी हुई एक टोकरी रखी थी। उसको देख कर उस गाड़ी में बैठी स्त्री का मन ललचा गया।

उसने कोचमैन को रुकने के लिये कहा और गाड़ी की खिड़की में से बोली — "ए गॅवार[35] लड़के इधर आ। और यह स्ट्रौबैरीज़ मेरे पास ले कर आ। मैं तुझे इनके लिये कुछ कोपैक्स[36] दूँगी जिससे तू गेंहू की रोटी खरीद सकता है।"

शाही गड़रिये ने ऐसा दिखाया जैसे उसने सुना ही न हो। उसको यह अन्दाजा भी नहीं हुआ कि वह हुक्म उसी के लिये था। उस स्त्री ने उसे दोबारा बुलाया तिबारा बुलाया पर ऐसा लग रहा था जैसे वह हवा से बात कर रही थी।

तब उसने अपने पीछे खड़े हुए नौकर को बुलाया और उससे उस लड़के को उसके गाल पर एक चॉटा मार कर यह सिखाने के लिये कहा कि कैसे सुना जाता है।

---

[35] Translated for the word "Lout"

[36] Copeck is 1/100th part of Rouble.

नौकर तुरन्त ही गाड़ी से कूद कर उसका हुक्म पालन करने के लिये गया। पर उसके वहॉ पहुॅचने से पहले ही गड़रिया कूद कर खड़ा हो गया।

उसने पास में पड़ी एक मोटी सी डंडी उठा ली और नौकर से बोला — "अगर तुम अपना सिर तुड़वाना नहीं चाहते तो एक कदम भी आगे नहीं बढ़ाना नहीं तो मैं तुम्हारा मुॅह कुचल कर रख दूॅगा।"

नौकर यह सुन कर वापस चला गया और यह बात उस स्त्री को बतायी। यह सुन कर स्त्री को गुस्सा आ गया वह चिल्लायी — "क्या ओ गधे। तुम इस छोटे से बच्चे से डर गये। जाओ जा कर उसकी टोकरी छीन लो। मैं उसे बताती हूॅ कि मैं कौन हूॅ। और मैं उसके माता पिता को भी सजा दूॅगी जिन्होंने उसे ठीक से बड़ा नहीं किया।"

गड़रिया जिसने स्त्री का यह हुक्म सुन लिया था बोला — "ओहो। जब तक मेरे शरीर में जान है तब तक कोई भी मेरी किसी भी चीज़ को जबरदस्ती हाथ नहीं लगा सकता। जो कोई मेरी स्ट्रौबैरीज़ को हाथ भी लगायेगा मैं उसी को मारूॅगा।"

यह कह कर उसने अपने हाथ पर थूका और उसको अपने सिर के चारों तरफ घुमाया जब तक उसमें से सीटी की सी आवाज नहीं निकलने लगी।

नौकर ने जब यह देखा तो उसकी यह बिल्कुल भी इच्छा नहीं हुई कि वह उससे स्ट्राबैरीज़ छीने पर वह स्त्री गुस्से के मारे उसको

बार बार लड़के की तरफ धकेलती रही। वह कहती रही कि वह अपनी यह बेइज़्ज़ती को बिल्कुल सहन नहीं करेगी और उसको सजा जरूर देगी।

दूसरे बच्चे गड़रिये जो दूर से ही यह तमाशा देख रहे थे शाम को यह किस्सा उन्होंने अपने साथियों को बताया। यह सुन कर सारे लोग डर गये। उनको लगा कि इसका बुरा असर उनको भी भुगतना पड़ेगा। इसके अलावा उस स्त्री ने अगर कहीं लड़के की शिकायत सरकार से कर दी तो...

राजकुमार के मालिक ने उसको डॉटा और कहा कि वह इस मामले में उसकी तरफ से हुछ नहीं बोल पायेगा। जो उसने किया वह उसी को भरना पड़ेगा।"

लड़का बोला — "आप चिन्ता न करें मैं कोई दोषी साबित नहीं होऊॅगा। यह मेरा मामला है। भगवान ने एक मुॅह मेरे सिर में रखा है और उस मुॅह में जबान रखी है। जरूरत पड़ने पर मैं अपने लिये बोल भी सकता हूॅ। मैं आपसे अपना वकील बनने के लिये भी नहीं कहूॅगा। अगर उस स्त्री ने तरीके से ठीक से स्ट्रौबैरीज़ मॉगी होतीं तो मैंने उसको वे दे दीं होतीं। पर उसने मुझे गॅवार कैसे कहा। मेरी नाक भी उतनी ही साफ है जितनी उसकी।"

इस बीच वह स्त्री शाही शहर चली गयी। वहॉ जा कर सबसे पहला काम तो उसने यह किया कि उस बच्चे गड़रिये की शिकायत

की। तुरन्त ही जॉच का हुक्म दिया गया। लड़के और उसके मालिक दोनों को राजा के सामने आने का हुक्म दिया गया।

जब दूत अपना हुक्म बजाने के लिये गॉव में दाखिल हुआ तो लड़के ने कहा — "मेरे मालिक ने इसमें कुछ नहीं किया है सो जो कुछ मैंने उस दिन किया उसका जिम्मेदार मैं खुद हूँ।"

वे उसके हाथ उसकी पीठ पीछे बॉध देना चाहते थे और अदालत में उसको एक कैदी की तरह से ले जाना चाहते थे। इस पर उसने अपनी जेब से एक तेज़ चाकू निकाल लिया और कुछ कदम पीछे हट कर चाकू की नोक अपनी छाती पर रख कर बोला —

"जब तक मैं ज़िन्दा हूँ कोई मुझे नहीं बॉध सकता जब तक मैं तुम्हें खुद अपने आपको बॉधने न दूँ। वरना मैं यह चाकू अपनी छाती में भोंक लूँगा। तब तुम लोग मेरी लाश को बॉध लेना। या फिर जो कुछ भी तुम चाहो उसके साथ कर लेना। पर जब तक मैं ज़िन्दा हूँ तब तक कोई मेरे शरीर पर रस्सी नहीं डालेगा।

मैं अदालत में जाने के लिये और गवाही देने के लिये बिल्कुल तैयार हूँ पर मैं वहॉ किसी कैदी की हैसियत की तरह से नहीं जाऊँगा।"

उसकी बहादुरी देख कर दूत डर गये। अब तो वे उसके पास जाने तक में डर रहे थे। क्योंकि उन्हें डर था कि अगर कुछ हो गया यानी लड़के ने अपनी धमकी पूरी कर दी तो उसका इलजाम उन्हीं

पर लगाया जायेगा। और क्योंकि वह खुद ही उनके साथ जाने के लिये तैयार था सो उन लोगों को उसे वैसे ही ले जाना पड़ा।

रास्ते में जाते समय दूत सोचते जा रहे थे कि यह लड़का तो बहुत होशियार है। वह तो वह सब भी जानता था जो वह नहीं जानते थे। पर जजों को यह देख कर बहुत आश्चर्य हुआ जब उन्होंने लड़के के मुँह से सारी घटना का हाल सुना।

वह इतने अच्छे तरीके से बोल रहा था कि उनको अपना फैसला उसी के हक में सुनाना पड़ा। उन्होंने उसको सारे इलजामों से आजाद कर दिया और छोड़ दिया।

अब वह स्त्री राजा के पास गयी तो राजा ने कहा कि इस मामले की जॉच वह खुद करेगा। पर वह भी लड़के की बात सुनने के बाद लड़के के हक में फैसला सुनाने पर मजबूर था। उसने भी कह दिया कि लड़का बिल्कुल बेकुसूर है।

अब तो वह स्त्री गुस्से से पागल हो गयी कि राजा ने भी उसकी बजाय एक सड़क के लड़के को जिता दिया।

यह देख कर वह रानी जी के पास गयी क्योंकि वह जानती थी कि रानी राजा से ज़्यादा सख्त थी। उसकी बात सुन कर वह बोली — "मेरा पति तो एक बहुत पुराना बेवकूफ है उसके जज भी सारे के सारे बेवकूफ हैं। यह तुम्हारे लिये बहुत बुरा हुआ कि तुम्हारा मुकदमा बजाय मेरे पास लाने के अदालत में ले जाया गया क्योंकि मैं

इस मामले को किसी और तरह से देखती और तुम्हारे साथ न्याय करती।

पर अब क्योंकि तुम्हारा मामला अदालत में से गुजर चुका है और राजा ने उसके फैसले को ठीक कहा है मैं अब इसको कोई बहुत ज़्यादा अच्छा रूप नहीं दे सकती पर फिर भी मैं देखती हूँ कि तुमको इसमें न्याय कैसे दिलवाया जा सकता है।

स्त्री को याद आया कि उसके राज्य में एक बहुत ही बुरे स्वभाव वाली स्त्री रहती थी जिसके साथ कोई नौकर रहना नहीं चाहता था। उसके पति ने भी यह कह रखा था कि इस स्त्री के साथ तो उसकी ज़िन्दगी इतनी दूभर थी कि शायद नरक भी इससे अच्छी जगह होती।

सो उसने सोचा कि अगर इस लड़के को उस स्त्री के घर में गड़रिये की नौकरी दिलवा दी जाये तो यह सजा उस लड़के के लिये सबसे अच्छी रहेगी जो सजा दूसरे जज उसे देते।

रानी ने कहा ठीक है मैं इस मामले को तुम्हारी इच्छा के अनुसार ही निपटाती हूँ। सो रानी ने एक अपने भरोसे का आदमी बुलाया और उसको समझ दिया कि उसे क्या करना है।

अगर रानी को इस बात का ज़रा सा भी अन्दाज़ होता कि यह लड़का निकाला हुआ राजकुमार है तो वह उसे तुरन्त ही मरवा देती। वह जजों और राजा किसी के फैसले की परवाह नहीं करती। पर यह बात उसके दिमाग में ही नहीं आयी।

जैसे ही राजकुमार के किसान मालिक को इस बात का पता चला कि उसने लड़के को अपने यहॉ से निकाल दिया। उसने अपने सितारों को धन्यवाद दिया कि वह इस मामले से इतनी आसानी से बाहर आ गया।

रानी का दूत लड़के को उस स्त्री के खेत पर ले गया जहॉ रानी ने उसको ले जाने के लिये कहा था। अब यह काम तो लड़के की बिना मर्जी के ही था।

जब उस नीच स्त्री को पता चला कि रानी जी ने उसके पास काम करने के लिये एक गड़रिया भेज दिया है और साथ में यह भी कि वह उसके साथ कैसा भी सुलूक कर सकती है तो वह तो खुशी से चिल्ला पड़ी। उसने कहा कि क्योंकि यह लड़का बहुत ही अजीब तरह से व्यवहार करता है और कोई काम ठीक से नहीं कर सकता तो तुम इसको कैसे भी रख सकती हो।

उसको यह नहीं मालूम था कि वह कितना मुश्किल आदमी था सो उसने सोचा कि उस लड़के को जैसे वह चाहेगी रखेगी।

पर जल्दी ही उसको पता चल गया कि वह तो इतनी ऊॅची बाड़ थी कि उसको पार करना बहुत मुश्किल था। और वह लड़का अपने अधिकारों को बाल भर भी छोड़ना नहीं चाहता था।

अगर वह उससे बिना किसी वजह के एक बुरा शब्द भी कहती तो वह उसको दस शब्द पलट कर सुनाता। और अगर वह उस पर हाथ उठाने की कोशिश करती तो वह भी उसके सामने कोई पत्थर

या लकड़ी का लट्ठा उठा लेता। या फिर कुछ और जो कुछ भी उसके हाथ में आ जाता।

वह चिल्ला कर कहता — "मेरी तरफ एक कदम भी आगे बढ़ने की हिम्मत नहीं करना वरना मैं तुम्हारी खोपड़ी तोड़ दूँगा और तुम्हें मसल कर तुम्हारा सूप बना दूँगा।"

उस स्त्री ने ऐसी भाषा पहले कभी किसी से नहीं सुनी थी। और कम से कम अपने नौकरों से तो कभी नहीं सुनी थी। यह सब झगड़ा देख सुन कर उसका पति मन ही मन बहुत खुश होता था। वह अपनी पत्नी के साथ बिल्कुल खड़े होना नहीं चाहता था क्योंकि लड़का अपने सारे काम ईमानदारी से करता था।

स्त्री ने उस बच्चे के उत्साह को भूख से मारना चाहा। उसने उसको खाना नहीं दिया पर बच्चे ने खुद ही जो कुछ उसे घर में खाना मिला उसे खा लिया। दूध उसने गायों से निकाल कर पी लिया। इस तरह से वह कभी भूखा नहीं रहा।

जितना ज़्यादा वह बच्चे को अपने काबू में नहीं रख पाती थी उतना ही ज़्यादा वह अपन गुस्सा अपने पति और अपने आस पास के लोगों पर निकालती थी।

लड़के ने जब इस तरह की ज़िन्दगी कुछ हफ्ते तक निकाल ली और उसको लगा कि हर दिन पहले दिन जैसा ही था तो उसने उस नीच स्त्री की नीचता के लिये कुछ इस तरह से बदला देना चाहा कि दुनियॉ ऐसी राक्षसी से बच जाये।

अपन प्लान कामयाब करने के लिये उसने बारह भेड़िये पकड़े और उन्हें एक गुफा में बन्द कर दिया। अपने जानवरों में से एक जानवर वह उनको रोज फेंक देता था ताकि वे भूखे न रहें।

अब उस स्त्री के गुस्से को कौन बखान कर सकता है जब उसने देखा कि उसके जानवरों का झुंड धीरे धीरे कम हो रहा है। रोज रोज लड़का उसके जानवर जितने वह सुबह ले कर जाता था उससे कम ले कर आता था। पूछने पर लड़के ने कहा कि उन्हें भेड़िया खा गया।

वह उस पर पागलों की तरह से चिल्लाती और उसको धमकी देती कि वह उसको जंगली जानवरों के सामने उसको खाने के लिये फेंक देगी। तो वह हॅस कर जवाब देता — "क्या तुम्हारा अपना जंगली मॉस उनके लिये ज़्यादा स्वादिष्ट नहीं होगा?"

उसके बाद उसने भेड़ियों को गुफा में तीन दिन तक खाने के लिये कुछ नहीं दिया। अगले दिन रात को जब सब सोये हुए थे तो उसने मालकिन के जानवर उसके बाड़े में से निकाल लिये और उसमें वे बारह भूखे भेड़िये रख दिये। बाड़े का दरवाजा कस कर बन्द कर दिया ताकि वे जंगली जानवर वहॉ से निकल कर न भाग सकें।

यह करने के बाद उसने खेत की तरफ से मुॅह मोड़ लिया क्योंकि बहुत दिनों से वह गड़रिये का काम करते करते थक गया था। अब वह कोई बड़ा काम करना चाहता था।

पर अगले दिन क्या ही डरावना दृश्य था। जब वह स्त्री अपने जानवरों के बाड़े में गयी और उसमें से गायों को दुहने के लिये जानवर निकालने लगी तो बजाय जानवरों के उसमें से गुस्से से भरे भूखे भेड़िये उसके ऊपर गिर पड़े और पलों में उसको उसके कपड़े खाल आदि खा कर खत्म कर दिया।

केवल उसकी जबान और दिल बचा जो उन जंगली जानवरों के खाने के लिये भी इतने जहर भरे थे कि उन्होंने भी उनको छोड़ दिये। न तो उसके पति को और न ही उसके किसी और नौकर को उसके मर जाने का दुख हुआ। बल्कि उसके मरने की हर एक को खुशी हुई।

अब राजकुमार कुछ सालों तक ऐसे ही घूमता रहा। कभी वह यह काम करता कभी कोई दूसरा काम करता पर वह एक जगह कहीं टिक कर नहीं बैठा। क्योंकि उसके बचपन के दिन उसके सामने बहुत ही साफ सपने की तरह दिखायी देते और वे हमेशा उसको यह याद दिलाते रहते कि वह किसी बड़ा काम करने के लिये पैदा हुआ है।

कुछ कुछ समय बाद वह बूढ़ा उससे मिलता रहा जिसने जब वह नया नया गड़रिया बना था तभी से उसकी ऑखों में पढ़ लिया था। जब राजकुमार अठारह साल का हुआ तो बागबानी सीखने के लिये उसने एक माली का काम शुरू कर दिया। इसी समय एक ऐसी घटना घटी जिसने उसकी ज़िन्दगी पलट दी।

वह नीच स्त्री जो रानी के हुक्म से राजकुमार को रात में बाहर ले जा कर छोड़ कर आयी थी और जिसने उसे जंगल में गरीब किसान को पालने के लिये दिया था मरने वाली हो रही थी।

क्योंकि इस पाप को करने से उसके दिल दिमाग पर एक बोझ लदा हुआ था इसलिये उसने मरते समय उसने पादरी के सामने यह स्वीकार किया कि उसने ऐसा नीच काम किया था। इस बात को पादरी के सामने कहने से ही उसके दर्द को थोड़ा आराम मिल पाया।

उसने यह तो बता दिया कि उसने लड़का वहॉ छोड़ा था पर वह यह नहीं बता सकी कि बच्चा अभी ज़िन्दा है या मर गया। यह सुन कर पादरी तुरन्त ही राजा साहब के पास भागा गया और राजा को जा कर यह खुशी की खबर सुनायी कि उसका खोया हुआ बेटा मिल गया है।

राजा ने यह बात किसी को नहीं बतायी और तुरन्त ही अपना घोड़ा तैयार करवाया। अपने तीन भरोसे के नौकर लिये और जंगल के उस खेत की तरफ चल दिया जहॉ उस स्त्री ने उसके बच्चे को रखा था।

वहॉ पहुँच कर किसान और उसकी पत्नी ने बताया कि हॉ फलॉ फलॉ समय एक स्त्री वहॉ आ कर एक बच्चा दे गयी थी और उसी समय वह उनको बच्चे के पालने के लिये सौ रूबल भी दे गयी थी।

जिस तरह से वह बच्चा उनको दिया गया उससे उनको लगा कि वह बच्चा किसी कुलीन परिवार का है पर वे यहॉ तक नहीं सोच सके कि वह शाही परिवार का होगा। जब वह बच्चा यह कहता था कि वह शाही परिवार का है तो वे उसे मजाक समझते थे।

उसके बाद किसान राजा को खुद उस गॉव तक ले गया जिस गॉव में वह उसको गड़रिये का काम दिलवा कर आया था। उसने उसको वह काम उसी की इच्छा पर दिलवाया था न कि अपनी इच्छा से। क्योंकि उसने कहा था कि वह अब यहॉ अकेले रहना नहीं चाहता था।

पर जब किसान राजा को उस अमीर किसान के घर ले कर पहुँचा जहॉ उसने उसको नौकरी दिलवायी थी तो उसे बड़ा आश्चर्य हुआ और उससे ज़्यादा आश्चर्य राजा को हुआ जब वह लड़का उनको वहॉ नहीं मिला। उसको तो एक नौजवान हो जाना चाहिये था पर वह तो गॉव भर में नहीं था न उसकी कोई खबर थी।

सारे लोग उसके बारे में उनको बस यही बता सके कि उस लड़के को राजा की अदालत में बुलाया गया था क्योंकि किसी कुलीन स्त्री ने उस पर मुकदमा लगा दिया था। मुकदमे में वह बेकुसूर साबित हुआ था सो छोड़ दिया गया था।

इसके बाद रानी का एक नौकर आ कर उसको यहॉ से ले गया और उसको किसी दूसरे किसान के घर पर काम के लिये रखवा दिया था। अब राजा जल्दी से उधर ही की तरफ चल दिया। वहॉ

जा कर पता चला कि उसका बेटा वहॉ कुछ हफ्ते के लिये वहॉ था पर वह वहॉ से भी भाग गया।

उसके बाद उसके बारे में फिर कुछ नहीं सुना गया। अब वे उसके बारे में किससे पूछें। ऐसा कौन था जो उनको अब उसके पास ले जाता।

राजा जब इस बड़ी मुश्किल में था कि उसके बेटे की खोज के सारे दरवाजे बन्द हो गये थे तब वह बूढ़ा दिखायी दिया जो लड़के से पहले भी कई बार मिल चुका था।

उसने कहा कि वह उस लड़के को जानता है जिसको वे खोज रहे हैं। जो पहले गड़रिये का काम करता था और फिर बाद में जिसने कई और काम भी किये। उसने उनको आशा दिलायी कि शायद वह उस बच्चे को ढूँढने में उनकी मदद कर सके।

राजा ने उसे बहुत कीमती इनाम देने का वायदा किया अगर वह उस लड़के को ढूँढने में उनकी मदद कर सका। उसने अपने एक नौकर को घोड़े पर से उतरने के लिये कहा और उस बूढ़े को उस घोड़े पर चढ़ने के लिये कहा ताकि वे लोग जल्दी जल्दी चल सकें।

पर बूढ़ा मुस्कुराया और बोला — "इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि घोड़ा कितनी तेज़ दौड़ता है। मेरी टॉगें भी उतनी ही तेज़ी से दौड़ सकती हैं क्योंकि इन्होंने दुनियॉ की यात्रा किसी भी घोड़े से ज़्यादा की है।"

एक हफ्ते में वे लोग उस जगह आ गये जहॉ वह लड़का था और उन्होंने उसे एक बहुत ही शानदार हवेली के मैदान में काम करते देख लिया जहॉ वह माली का काम कर रहा था।

जैसे ही राजा ने अपने बेटे को देखा तो वह तो खुशी के मारे पागल सा हो गया। उसके लिये तो वह कितने साल रोया था। उसको तो उसने मरा हुआ ही समझ लिया था। उसको अपने सीने से लगाते हुए उसकी ऑखों से ऑसुओं की धारा बहने लगी।

उसने जब अपने बेटे के मुॅह से उसका हाल सुना तो उसकी खुशी थोड़ी कम हो गयी और एक नयी परेशानी खड़ी हो गयी। माली की एक बहुत ही सुन्दर बेटी थी। इतनी सुन्दर कि उसको सामने बागीचे के सारे फूल फीके थे। इतनी साफ जैसे देवदूत।

राजकुमार इस लड़की को दिल दे बैठा था। उसने अपने पिता से साफ साफ कह दिया कि किसी भी ऊॅचे परिवार की लड़की से शादी नहीं करेगा बल्कि इसी माली की बेटी से ही शादी करेगा चाहे राजा उसे अपने राज्य से ही क्यों न निकाल दे।

राजा बोला — "बेटा पहले घर तो चलो। हम लोग वहीं चल कर बात करेंगे।"

फिर राजकुमार ने राजा से एक कीमती ऑगूठी मॉगी और सबके सामने माली की बेटी की उॅगली में पहना दी। और बोला — "इस ऑगूठी से मैं तुमसे अपनी शादी पक्की करता हूॅ। और जल्दी या देर

में मैं तुमको अपनी दुलहिन बना कर ले जाने के लिये जरूर लौटूँगा।"

राजा बोला — "नहीं नहीं। ऐसे नहीं। हम बाद में यह मामला तय करेंगे।" उसने तुरन्त ही लड़की की उँगली से अँगूठी निकाली और अपनी तलवार से उसके दो टुकड़े किये। एक टुकड़ा उसने अपने बेटे को दे दिया और दूसरा टुकड़ा उसने माली की बेटी को दे दिया।

अँगूठी बाँट कर वह बोला — "भगवान ने अगर तुम लोगों को एक दूसरे के लिये बनाया है तो इस अँगूठी के दोनों हिस्से समय के साथ साथ बढ़ते रहेंगे ताकि वह जगह जहाँ से अँगूठी के दो हिस्से किये गये हैं वह जगह दिखायी नहीं देगी। तुम दोनों इन्हें उस समय तक रखो जब तक समय आता है।"

रानी ने जैसे ही अपने सौतेले बेटे को देखा तो वह गुस्से से लाल हो गयी। उसने तो यह सोच लिया था कि वह हमेशा के लिये मर गया। अब तो वह अचानक ही राज्य का वारिस हो कर लौट आया है। क्योंकि नयी पत्नी से राजा के केवल दो बेटियाँ ही थीं।

कुछ साल बाद राजा की आँखें बन्द हो गयीं। और उसका बेटा राजा हो गया। अपनी सौतेली माँ से खराब व्यवहार मिलते हुए भी राजकुमार उसके बुरे व्यवहार का बदला उसको बुरे व्यवहार से नहीं दे रहा था। उसका फैसला उसने भगवान पर छोड़ रखा था।

हालॉकि उसको यह आशा तो नहीं थी कि वह अपनी किसी बेटी को राजगद्दी पर बैठा देखती पर वह यह सपना देख रही थी कि वह उसकी शादी अपने घर की किसी अच्छी लड़की से कर देगी।

पर राजकुमार ने कहा कि वह यह शादी नहीं करेगा क्योंकि उसने अपने लिये बहुत पहले से ही एक लड़की ढूँढ रखी है। जब सौतेली मॉ को यह पता चला कि राजकुमार ने किसी नीचे घराने की लड़की देख रखी है उसने राज्य के सलाहकारों की सलाह से उस शादी को न करवाने का फैसला किया।

पर राजकुमार अपने इरादे का पक्का था। उसने अपनी सौतेली मॉ की बात नहीं मानी। इस मामले पर काफी समय तक बहस होती रही। तब राजा ने अपना आखिरी फैसला सुना दिया — "हम एक बड़ी दावत का इन्तजाम कर रहे हैं। इसमें सब राजकुमारियों को ऊँचे खानदान की सारी कुँआरी कन्याओं को बुलाया जाये।

अगर इनमें से कोई भी मेरी चुनी हुई लड़की से अच्छी लड़की होगी तो मैं उससे शादी कर लूँगा। पर अगर ऐसा नहीं हुआ तो जिससे मेरी शादी पक्की हो चुकी है वही मेरी पत्नी बनेगी।"

सो शाही महल में एक बहुत बड़ी दावत का इन्तजाम हुआ जो पन्द्रह दिन तक चली। इसमें सब स्त्रियों को मौका मिल गया कि वह माली की लड़की से ज़्यादा सुन्दर और अच्छी साबित हों। और

क्योंकि इस दावत का उद्देश्य सबको मालूम था तो सब एक दूसरे से होड़ में थीं।

दिन जल्दी ही बीत गये। जब दावत खत्म होने पर आयी तो बड़े बड़े सलाहकार राजा के सामने एक बार फिर इकट्ठा हुए। उन्होंने राजा से वही कहा जो रानी ने उनसे कहने के लिये कहा था कि "अगर राजा ने आज शाम तक अपना चुनाव नहीं किया तो झगड़ा खड़ा हो जायेगा क्योंकि हर कोई चाहता था कि राजा की शादी हो जाये।

राजा ने कहा — "मुझे अपनी प्रजा का फैसला मंजूर है। मैं शाम तक अपना फैसला सुना दूँगा।"

शाम को सबसे छिपा कर उसने अपना एक भरोसे का आदमी माली के घर भेजा और माली की बेटी को यह सन्देश भेजा कि वह शाम तक छिप कर रहे।

शाम को महल रोशनी से चमक उठा। और जब सारी स्त्रियॉ अपने सबसे अच्छे कपड़े पहन कर वहॉ आयीं और अपनी खुशकिस्मती या बदकिस्मती का इन्तजार करने लगीं।

पर राजा कमरे में एक नौजवान लड़की की तरफ बढ़ा जो सफेद कपड़ों में इतनी ज़्यादा लिपटी हुई थी कि उसकी नाक का अगला हिस्सा भी नहीं दिखायी दे रहा था। सब उसकी सादी सी पोशाक देख कर चौंक गये।

वह सादी सफेद लिनन में लिपटी हुई थी। उसने न तो सिल्क पहनी थी न साटिन और न सोना। जबकि दूसरी सब स्त्रियॉ ऊपर से ले कर नीचे तक सिल्क और साटिन की पोशाकें पहने थीं। किसी के होठ टेढ़े थे तो किसी की नाक ऊपर उठी हुई थी।

पर राजा ने किसी की तरफ ध्यान नहीं दिया। उसने उस लड़की के सिर पर बॅधा रूमाल खोल दिया और उसे रानी की जगह ले गया और बोला — "यह मेरी चुनी हुई दुलहिन है जिसे मैं अपनी पत्नी बनाना चाहता हूॅ। मैं अपनी शादी में आप सबको बुलाना चाहता हूॅ।"

रानी मॉ गुस्से से चिल्लायी — "एक ऐसे लड़के से जो किसी गड़रिये की तरह पला हो उससे इससे ज़्यादा और क्या आशा की जा सकती है।

अगर तुम अपने धन्धे में वापस जाना चाहते हो तो इस लड़की को भी साथ ले जाओ जो शायद सूअर पालना ज़्यादा पसन्द करे। पर यह लड़की राजगद्दी के लायक नहीं है। ऐसी किसान की लड़की तो राजगद्दी को और बदनाम ही करेगी।"

ये शब्द राजा के कानों को तीर जैसे चुभे। उसने कहा — "मैं राजा हूॅ और जो चाहूॅ कर सकता हूॅ पर वह तुम्हीं हो जिसने मुझे अपनी पुरानी ज़िन्दगी याद दिलायी है। तुम्हीं ने मुझे याद दिलाया ही कि मेरी यह हालत किसने की है।

खैर कोई भी तरीके वाला आदमी थैले में बन्द बिल्ली नहीं खरीदेगा। मैं हम लोगों के अलग होने से पहले आप सबको एक चीज़ दिखाना चाहूँगा कि मैं इस लड़की से जो स्वर्ग से आयी देवदूत की तरह से है अच्छी और कोई दूसरी लड़की पा नहीं सकता था।"

यह कहते हुए वह कमरे से बाहर निकल गया। पर तुरन्त ही वापस भी आ गया। उसके साथ वह बूढ़ा था जिसको वह जबसे जानता था जबसे वह गड़रिये का काम करता था। इसी बूढ़े ने राजा को इसका पता बताया था। यह फिनलैंड[37] का एक जाना माना जादूगर[38] था जिसको बहुत सारी विद्याऐं आती थीं।

राजा बोला — "ओ ताकतवर जादूगर। तुम अपनी कला से हमें इस लड़की के अन्दरूनी चरित्र के बारे में बताओ ताकि ये सब जान सकें कि यह लड़की मेरी पत्नी बनने के लायक है या नहीं।"

जादूगर ने वाइन जैसी किसी चीज़ से भरी हुई एक बोतल ली उसके ऊपर जादू डाला और सब लड़कियों को कमरे में आने के लिये कहा। फिर उसने बोतल में से कुछ बूँदें लीं और हर एक लड़की के सिर पर छिड़कीं तो वे सब खड़े खड़े ही सो गयीं।

अब तो क्या ही आश्चर्यजनक घटना घटी। कुछ पलों में ही वे अपने आदमी की शक्ल में नहीं रहीं बल्कि वे बदल गयीं – कोई

[37] Finland – one of the five Norse, or Nordic or Scandinavian countries
[38] Translated for the word "Sorcerer" – Tona Totka knower

सॉप में कोई भालू में कोई भेड़िये में कोई मेंढक में आदि आदि। कुछ शिकारी चिड़ियों में बदल गयीं।

पर इन सब में एक गुलाब की झाड़ी खड़ी थी, फूलों से लदी हुई और उसकी एक डाली पर दो फाख्ताऐं बैठी थीं। यह माली की लड़की थी जिसे राजा ने अपनी पत्नी के रूप में चुना था।

राजा बोला — "अब तुम सब लोगों ने इन लड़कियों का अन्दरूनी हिस्सा देख लिया है। मैं इन लोगों के बाहरी रूप पर नहीं जाने वाला।"

रानी मॉ यह देख कर गुस्से से भर उठी पर फिर भी वह कुछ कर नहीं सकी। उसके बाद जादूगर ने सबको अपने अपने पुराने रूप में ला दिया। राजा ने गुलाब की झाड़ी से अपनी पत्नी को चुन लिया और उससे आधी अॅगूठी मॉगी तो उसने आधी अॅगूठी निकाल कर उसको दे दी।

राजा ने अपनी वाली आधी अॅगूठी निकाली और दोनों को साथ साथ अपनी हथेली पर रख लिया। दोनों आधे हिस्से तुरन्त ही आपस में जुड़ गये और कोई भी उस जगह को नहीं देख सका जहॉ से वे तलवार से काट कर अलग किये गये थे।

नौजवान बोला — "आप सब देखें कि मेरे पिता का सपना पूरा होने जा रहा है।"

उसी शाम राजा की शादी माली की लड़की से हो गयी। जितने लोग भी वहॉ उस समय मौजूद थे राजा ने सबको अपनी शादी में बुलाया।

जब दूसरी लड़कियों को पता चला कि उनकी नींद में उनका क्या हुआ था तो वे तो शर्म से पानी पानी हो गयीं। पर राज्य की जनता बहुत खुश थी कि उनकी रानी शक्ल सूरत और चरित्र दोनों में सबसे अच्छी थी।

शादी का उत्सव खत्म हो जाने के बाद राजा ने राज्य के सारे जजों को बुलवाया और उनसे पूछा कि ऐसे मुजरिम को क्या सजा देनी चाहिये जिसने छिपा कर राजा का बेटा चोरी किया हो और उसको एक किसान के घर में गड़रिये के रूप में पलने के लिये छोड़ दिया हो। इसके अलावा जब उसने अपनी पुरानी जगह ले ली हो तब भी उसके साथ ऐसा अपमानजनक व्यवहार किया हो।

सबने एक आवाज में जवाब दिया ऐसे आदमी को तो फॉसी लगा देनी चाहिये। राजा बोला "ठीक है। रानी मॉ को यहॉ अदालत में ले कर आओ।"

रानी मॉ को बुलवाया गया और उसकी सज़ा उसको सुना दी गयी। अपनी सज़ा सुनते ही रानी तो दीवार की तरह सफेद पड़ गयी और राजा के सामने घुटने टेक कर बैठ कर अपनी करनी की माफी मॉगने लगी।

राजा बोला — "मैं आपको आपकी ज़िन्दगी देता हूँ। मुझे आपको अदालत में कभी नहीं लाना चाहिये था अगर आपने अपना अपराध करने के बाद में मुझे अदालत में मेरा अपमान करने के लिये न बुलाया होता तो। पर आज के बाद आप मेरे राज्य में नहीं रह सकतीं।

आप आज ही अपना सामान बॉध लें और शाम होने से पहले पहले मेरा राज्य छोड़ कर चली जायें। एक आदमी आपको राज्य की सीमा तक छोड़ आयेगा।

ध्यान रखियेगा अब अगर आपने मेरे राज्य में कदम रखा इस राज्य के नीच से नीच आदमी को यह अधिकार है कि वह आपको पागल कुत्ते की तरह मार दे।

आपकी बेटियॉ मेरे पिता की भी बेटियॉ हैं इसलिये वे यहॉ रह सकती हैं क्योंकि इस सब में उनका कोई दोष नहीं है। दोष तो इसमें केवल आपकी आत्मा का है।"

अब क्योंकि रानी मॉ को राज्य निकाल दे दिया गया था सो राजा ने शहर के पास दो बड़े मकान बनवाये। उनमें से एक तो उसने अपनी पत्नी के माता पिता को दे दिया और दूसरा उसने अपने उस किसान पिता को दे दिया जिसने उसको उसकी मजबूरी के दिनों में पाला पोसा था।

राजकुमार जो गड़रिये का काम कर के बड़ा हुआ था अपनी नीचे घराने की पत्नी के साथ हमेशा खुश खुश रहा और अपनी जनता को अपने बच्चों की तरह से प्यार करता रहा।

17 आधा कम्बल[39]

यह बहुत पहले की बात है कि फ्रांस में एक राजा रहता था। यह राजा बहुत अच्छा था और अपने लोगों की बहुत ही अच्छे से देखभाल करता था। वह हमेशा अपने लोगों को सबसे अच्छी चीज़ देने की कोशिश करता था।

उसकी इच्छा थी कि उसका बेटा भी अपनी जवानी लोगों की सेवा में उससे भी अच्छी तरह से लगा दे जितनी कि उसने खुद ने लगायी थी।

इसलिये जब वह बूढ़ा हो गया तो उसने अपनी सारी जमीन और जायदाद अपने एकलौते बेटे को दे दी। बूढ़ा राजा अपनी गद्दी से उतर गया और अपना ताज अपने बेटे के सिर पर रख दिया और उसे राजा बना दिया।

फिर उसने उससे केवल दो चीज़ें मॉगी – पहली तो यह कि तुम मेरे लोगों की बहुत अच्छी तरह से देखभाल करना। और दूसरी यह कि तुम वायदा करो कि तुम मेरे बूढ़े होने पर मेरी भी ठीक से देखभाल करोगे। जितना प्यार मैंने तुम्हें दिया है उतना ही प्यार तुम भी मुझे करोगे। मुझे विश्वास है कि तुम ऐसा ही करोगे।"

---

[39] Half a Blanket - a folktale from France, Europe. Adapted from the Web Site : http://www.mikelockett.com/stories.php?action=view&id=85
Collected and retold by Mike Lockett

जब इन दोनों बातों का वायदा हो गया तो राजा ने फिर रस्मी तौर पर अपने बेटे को राजा बना दिया।

बेटे ने पहले तो अपने पिता की बात मानी और पाया कि उनकी बात मान कर उसका खजाना बढ़ रहा था और उसके लोग उससे बहुत सन्तुष्ट थे और अच्छी तरह से रह रहे थे।

वह अपने पिता की देखभाल भी बहुत अच्छी तरह कर रहा था। पर यह सब बहुत दिनों तक न चल सका।

यह सब तभी तक चला जब तक उसकी शादी नहीं हो गयी। उसकी पत्नी उसके पिता को नहीं चाहती थी। वह सोचती थी कि उसका पिता हमेशा ही सड़क पर रहता था।

इसके अलावा उसको लगता था कि राजा का बेटा उसकी बजाय अपने पिता की ज़्यादा सुनता था।

एक दिन उसने अपने पति से कहा — "यह बुड्ढा हमेशा ही खाने की मेज पर खॉसता रहता है जिससे मेरा तो खाने का सारा मजा ही चला जाता है।

इसके अलावा वह तुमको अभी भी बच्चा ही समझते हैं। वह हमेशा ही तुमको राज्य चलाने के लिये सलाह देते रहते हैं। तुम अब राजा हो कोई बच्चा तो हो नहीं।

वह जब राजा थे तब राजा थे। उन्होंने अपने समय में राज किया पर अब जब वह राज नहीं कर सकते तो वह राज्य उन्होंने

तुमको दे दिया। तो फिर अब वह बीच में अपनी टॉग क्यों अड़ाते रहते हैं।"

अपनी पत्नी को खुश करने के लिये बेटे ने अपने पिता को लेटने और रहने के लिये सीढ़ियों के नीचे एक जगह दे दी। उधर पत्नी ने अपने चौकीदारों को यह हुक्म दिया कि वे राजा को महल के अन्दर न आने दें।

जो जगह राजा को लेटने के लिये दी गयी थी वह ठंडी थी और वहॉ हवा बहुत आती थी। उस जगह वह भूसे के बिस्तर पर जैसा कि किसी कुत्ते के लिये बनाया जाता है कई महीनों तक लेटा रहा।

उसका खाना वहीं सीढ़ियों के नीचे पहुॅच जाता था। वह अपने ही किले में एक बन्दी की तरह रह रहा था। वह बूढ़ा आदमी बेचारा इस सबसे बहुत दुखी था।

फिर एक दिन रानी ने एक बेटे को जन्म दिया जो एक बहुत ही गुणवान लड़के के रूप में बड़ा हुआ। इस बात की चिन्ता न करते हुए भी कि उसकी मॉ क्या कहती रहती थी वह अपना समय अपने बाबा के पास सीढ़ियों के नीचे उनसे बातें करने में और उनसे कुछ सीखने में गुजारा करता था।

उसका दिल बहुत ही नर्म था और वह सबकी बहुत देखभाल करता था। उसको घर में से जो कुछ भी खाना और पीने के लिये मिल जाता था उसमें से कुछ वह अपने बाबा के लिये ले आता था।

उसके बाबा को उसका लाया खाना पीना जितना पसन्द था उससे ज़्यादा उसको अपने पोते की नर्मी और प्यार पसन्द था जो उसके बर्ताव में झलकता था।

एक दिन बाबा ने अपने पोते से ठंड से बचने के लिये घोड़े को ओढ़ाने वाला एक पुराना कम्बल माँगा तो वह लड़का उसके लिये कम्बल लाने दौड़ गया। उसको घुड़साल में एक अच्छा सा कम्बल मिल गया सो उसने उसको ले कर उसके दो टुकड़े कर दिये।

बच्चे के पिता ने उसे कम्बल फाड़ते हुए देख लिया तो उससे पूछा कि वह घोड़े के कम्बल का क्या कर रहा था। उसने अपने पिता को बताया कि वह उसमें से आधा कम्बल उसके पिता के बिछौने के लिये ले जा रहा था।

उसके पिता राजा ने पूछा — "पर तुम उनके लिये केवल आधा ही कम्बल क्यों ले कर जा रहे हो?"

बच्चे ने जवाब दिया — "मैं यह दूसरा आधा आपके लिये बचा रहा हूँ ताकि जब मैं राजा बन जाऊँगा तो यह बचा हुआ आधा कम्बल सीढ़ियों के नीचे आपके इस्तेमाल करने के काम आयेगा।"

अब तुम ज़रा यह सोच कर बताओ कि यह सुनने के बाद क्या महल में उस बूढ़े राजा के लिये कुछ बदला? क्या आगे आने वाले समय का विचार आज की दशा बदल सकता है?

18 एक या दो चुटकी नमक[40]

एक बार फ्रांस के एक राजा के दो बेटियॉ थीं। वह अपनी दोनों बेटियों को बहुत प्यार करता था।

एक दिन वह राजा बैठा बैठा यह सोच रहा था कि मैं तो अपनी बेटियों को बहुत प्यार करता हूँ पर क्या वे भी मुझे उतना ही प्यार करती हैं?

वह जितना ज़्यादा इस बारे में सोचता था वह उतना ही और ज़्यादा परेशान हो जाता। "मुझे इसका जवाब जानना ही है कि क्या मेरी बेटियॉ मुझे सचमुच में ही उतना प्यार करती हैं जितना मैं उनको करता हूँ? पर मैं यह कैसे जानूँ?

यह सवाल राजा को दिन रात परेशान करता था। आखीर में उसने अपनी लड़कियों से ही यह बात पूछने का निश्चय किया कि वे उसके बारे में कैसा महसूस करती थीं।

उसने सोच रखा था जो भी लड़की उसको सबसे ज़्यादा प्यार करती थी वह उसी को अपना राज्य देगा।

"बेटी, तुम मुझे कितना प्यार करती हो?"

---

[40] One or Two Pinch Salt - a folktale from France, Europe. Adapted from the Web Site : http://www.themuralman.com/france/france_folktale.html
Collected and retold by Phillip Martin

पहली लड़की हॅसी और बोली — "ओह पिता जी, आप तो मेरी ऑखों के तारे हैं और मुझे मालूम कि आप भी मेरे बारे में ऐसा ही महसूस करते हैं। है न?"

राजा बोला — "तुम ठीक कहती हो बेटी, मैं भी तुम्हें इतना ही चाहता हूॅ जितना कि तुम मुझको चाहती हो। तुम बहुत ही प्यारी बच्ची हो।" फिर राजा ने वही सवाल अपनी दूसरी बेटी से भी पूछा।

उसकी दूसरी बेटी हॅसी नहीं। वह हमेशा से ही बहुत ही सोच विचार करने वाली लड़की थी। कुछ सोच कर वह बोली — "पिता जी आप मेरे लिये उस एक या दो चुटकी नमक की तरह हैं जो मैं अपने खाने में डालती हूॅ।"

"बस इतना ही? बस नमक जितना ही? तुम मुझे एक या दो चुटकी नमक के बराबर ही समझती हो? यह किस तरह का जवाब है?" राजा ने उससे यह सब पूछा तो पर वह अपने सवालों के जवाब पाने का इन्तजार नहीं कर सका।

वह बोला — "ओ बेवफा लड़की, तुम मेरे सामने से चली जाओ, तुम मेरे महल से चली जाओ और मेरे राज्य से भी चली जाओ। और एक या दो चुटकी नमक, फिर यहॉ कभी वापस मत आना।"

छोटी सी राजकुमारी अपने कमरे में भाग गयी। वहॉ वह बहुत देर तक रोती रही। फिर उसने अपने ऑसू पोंछे और अपनी हालत के बारे में सोचा।

"मैं जिसको अब तक अपना घर समझती थी मुझे अब वह छोड़ना पड़ेगा।" यह सोचते ही उसकी ऑखें फिर भर आयीं। "पर ये ऑसू अब मेरी कोई सहायता नहीं करने वाले।"

यह सोच कर उसने अपनी कुछ सबसे अच्छी पोशाकें उठायीं और कुछ अपनी मन पसन्द का गहना उठाया उन सबको एक गठरी में बॉधा और महल से चली गयी।

जब वह वहॉ से जा रही थी तो वह सोचती जा रही थी कि अब उसका क्या होने वाला है। "मुझे पता नहीं मैं कहॉ जाऊॅ, मैं क्या करूॅ।"

इसमें उसकी कोई गलती नहीं थी जब तक वह महल में थी उसने कुछ करना सीखा ही नहीं था।

वह सोचने लगी — "हॉ मॉ ने बचपन में मुझे खाने की कुछ चीज़ें बनानी जरूर सिखायी थीं पर वे तो मेरा कुछ भला नहीं करने वालीं। और शीशे के सामने खड़े हो कर तैयार होना जो मैं ठीक से हो लेती हूॅ, उससे मुझे किसी के घर में नौकरी नहीं मिलेगी।"

इसके अलावा वह यह भी जानती थी कि इतनी सुन्दर लड़की को भी कोई अपने घर में नौकरी नहीं देगा सो उसने सोचा — "अगर मुझे अपने आप ही काम करना और खाना कमाना है तो मुझे

अपने आपको थोड़ा बदसूरत बनाना पड़ेगा। सबसे पहले तो मुझे इस खूबसूरत पोशाक को उतारना पड़ेगा।"

सो राजकुमारी ने एक भिखारी से कुछ फटे कपड़े लिये और अपनी उस खूबसूरत पोशाक को उतार कर अपनी पोटली में ठूँस लिया।

भिखारी वाले कपड़े थोड़े बदबूदार थे और मैले थे पर उसको मालूम था कि वह इससे कुछ और ज़्यादा भी कर सकती थी सो उसने अपने फटे कपड़ों पर थोड़ी सी मिट्टी मल ली। फिर उसने अपने हाथ पैरों पर भी मिट्टी मल ली।

उसने सोचा कि बस अब मेरे बाल रह गये हैं सो उसने अपने धूल भरी उँगलियाँ दो चार बार अपने बालों में भी फेर लीं और उसकी यह उलझन भी खत्म हो गयी।

अब मुझे काम करने के लिये कोई बहुत सुन्दर नहीं समझेगा मैं भेड़ चराने या मुर्गियों की देखभाल करने का काम आसानी से कर सकूँगी।

और वह अपने सोचने में ठीक थी। पर कोई उतनी गन्दी लड़की को भी काम देने को तैयार नहीं था। उसने मुस्कुरा कर सोचा "शायद मैंने ज़रा कुछ ज़्यादा ही कर लिया था।"

इस तरह राजकुमारी बहुत दिनों तक चलती रही। इन दिनों में उसने कई राज्य पार किये। आखिर वह एक बड़े से खेत पर आयी जहाँ उनको एक भेड़ चराने वाली की जरूरत थी।

किसान की पत्नी ने हवा सूँघी और बोली — "यह यहाँ तब तक काम कर सकती है जब तक यह घर से दूर रहे।" किसान राजी हो गया।

उसने अपनी पत्नी से कहा — "भेड़ें पहाड़ के उस पार हैं हम यहाँ से भेड़ों को या उसकी रखवालिन को नहीं सूँघ पायेंगे।"

इस तरह राजकुमारी को अपना नया घर मिल गया।

उसे घर तो नहीं कहना चाहिये क्योंकि वह तो पहाड़ के उस पार उस किसान की केवल एक झोंपड़ी थी जिसके चारों तरफ भेड़ें रहती थीं – बदबूदार भेड़ें, उतनी ही बदबूदार जितनी कि वह खुद थी।

पर अब कम से कम उसके पास एक सुरक्षित जगह थी रहने के लिये और खूब खाना था खाने के लिये।

जैसे कि लड़कियों की इच्छा होती है, इस राजकुमारी को भी एक दिन यह इच्छा हुई कि वह अच्छे अच्छे कपड़े पहन कर सजे।

बहुत सारी लड़कियों को पास सजने के लिये कुछ नहीं होता पर इस राजकुमारी के पास तो इसकी पोटली में अच्छे कपड़े भी थे और गहने भी थे।

और क्योंकि वह किसान और उसकी पत्नी के घर से बहुत दूर थी सो डर की भी कोई बात नहीं थी। सो उसने अपनी फटी पोशाक उतार दी, पास की एक नदी में जा कर नहायी और अपने राजकुमारी वाले कपड़े और गहने पहन लिये।

कुछ ही देर में वह बदबूदार फटे कपड़े पहनने वाली भेड़ चराने वाली लड़की एक सुन्दर राजकुमारी में बदल गयी।

अब उस दिन कुछ ऐसा हुआ कि उस राज्य का राजकुमार उस दिन शिकार के लिये निकला हुआ था। उस दिन वह पहाड़ के दूसरी तरफ जंगल में रास्ता भूल गया।

घूमते घूमते उसको प्यास लग आयी सो वह जंगल में पानी ढूँढने लगा। ढूँढते ढूँढते वह भी उसी नदी पर आ पहुँचा जहाँ राजकुमारी नहाने आयी थी।

जैसे ही उसने नदी के दूसरे किनारे की तरफ देखा तो उसे अपनी ऑखों पर विश्वास ही नहीं हुआ। एक बहुत ही सुन्दर लड़की बहुत सुन्दर शाही कपड़े पहने तितलियों के साथ नाच रही थी, और वह भी भेड़ों के झुंड के पास।

राजकुमार ने अपनी ऑखें कई बार झपकायीं "लगता है कि मैं अपने आप ही चीज़ें देखने लग गया हूँ।" सो यह पक्का करने के लिये कि वह ठीक ही देख रहा है वह थोड़ा और आगे बढ़ा जिससे घास हिल गयी।

यह घास के हिलने की आवाज राजकुमारी ने सुनी तो उधर देखा जहाँ से वह घास के हिलने की आवाज आ रही थी। वहाँ उसने इतनी सुन्दर नीली ऑखें देखीं जैसी पहले कभी नहीं देखी थीं। तुरन्त ही वह जंगल की तरफ भाग गयी।

उसको भागते देख कर राजकुमार ने उसका पीछा किया पर वह नदी की कीचड़ में दो बार फिसला पर फिर उसने पेड़ की एक शाख पकड़ ली। जब तक वह ठीक से खड़ा हो सका तब तक तो राजकुमारी दूर जा चुकी थी।

वह वहॉ खोयी थोड़े ही थी वह तो अच्छी तरह जानती थी कि उसे कहॉ छिपना है – जहॉ राजकुमार उसे न ढूँढ सके। बस वह वहीं जा कर छिप गयी।

जब राजकुमार उसको ढूँढते ढूँढते थक गया और राजकुमारी को भी यह यकीन हो गया कि राजकुमार वहॉ से चला गया तो उसने अपने शाही कपड़े उतार कर अपनी पोटली में रख दिये और फिर से अपने उस भेड़ चराने वाली वाले कपड़े पहन लिये। उसने अपने शरीर पर फिर से थोड़ी सी मिट्टी भी मल ली।

फिर वह अपनी प्रिय भेड़ के पास बैठ गयी और उसके गले में अपनी बॉह डाल दी और उसके कान में फुसफुसायी — "वह तो बहुत ही करीब था। पर तूने क्या उसकी ऑखें देखीं?"

इसके जवाब में भेड़ केवल मिमिया दी।

इस बीच में राजकुमार को पहाड़ के दूसरी तरफ अपना रास्ता मिल गया सो वह उधर चला गया। पहाड़ के दूसरी तरफ किसान का घर था। तो जब किसान की पत्नी ने उसको देखा तो वह उसके पीने के लिये सेब का रस ले आयी।

राजकुमार सेब का रस पीने बैठ गया तो उसने किसान से उस खूबसूरत लड़की को बारे में पूछा जो भेड़ चराती थी। जैसे ही किसान ने उस लड़की को खूबसूरत सुना तो उसके मुँह से सेब का रस बाहर आ गया।

वह खॉस कर बोला — "खूबसूरत लड़की? उस भेड़ चराने वाली जैसी गन्दी और बदसूरत लड़की तो मैंने आज तक नहीं देखी और आप उसको खूबसूरत लड़की कहते हैं?"

उसकी पत्नी बोली — "और तुम उसको बदबूदार कहना तो भूल ही गये।" मेज के चारों तरफ बैठे सारे लोग हॅस पड़े।

पर राजकुमार को पूरा विश्वास था कि उसने तो किसी बहुत ही सुन्दर लड़की को देखा था जो तितलियों के साथ खेल रही थी। पर उसको यह भी विश्वास था कि उसको भेड़ों की बू भी आ रही थी।

आखिर वह इस नतीजे पर पहुँचा कि हो न हो उस लड़की के साथ कोई जादू हुआ है। और अगर कोई जादू हुआ भी है तो वह उसको अपने से दूर रखने के लिये है।

जब राजकुमार का सेब का रस खत्म हो गया तो उसने किसान और उसकी पत्नी से विदा ली और अपने महल की तरफ चल दिया। पर उसके दिमाग से उस लड़की की तस्वीर नहीं गयी।

राजकुमार ने सोचा "वह तो मेरे पिता के दरबार की लड़कियों से कहीं ज़्यादा सुन्दर थी।"

बल्कि उसने इससे कहीं ज्यादा सोचा। और जब वह सो गया तो इससे कहीं और ज़्यादा वह उसे सपने में देखता रहा।

पर राजकुमार की तो भूख और नींद दोनों ही उड़ गयी थीं। वह दुबला होता जा रहा था। उसके माता पिता ने उससे बहुत पूछा कि वह यह बता दे कि उसे क्या परेशानी थी।

पर राजकुमार ने सोचा — "मैं उनको उस लड़की के बारे में क्या बताऊँ जिसने मेरे ऊपर जादू कर दिया है? वे तो मेरे ऊपर केवल हँसेंगे ही।"

सो अपने माता पिता से सच कहने की बजाय उसने उस लड़की से पहाड़ के किनारे के एक दूर खेत पर पर एक ताजा डबल रोटी मँगवायी।

हालाँकि उसकी यह माँग बहुत ही अजीब सी थी। उसके माता पिता उसके कमरे से बाहर आने के बाद भी काफी देर तक कानाफूसी करते रहे कि उनके बेटे की कैसी अजीब सी माँग है। पर फिर भी राजा और रानी अपने बेटे की इच्छा को पूरी करने के लिये तुरन्त ही रवाना हो गये।

उन्होंने तुरन्त ही एक दूत उस खेत को जो पहाड़ के किनारे था भेजा जिसने जा कर किसान को यह सन्देश दिया।

किसान की पत्नी भी यह अजीब सी माँग सुन कर आश्चर्य में पड़ गयी फिर भी राजा का हुक्म था सो उसने उस भेड़ चराने वाली लड़की को बुला भेजा।

उसने उससे कहा — "देखो, राजकुमार ने तुमसे एक ताजा डबल रोटी मँगवायी है। तुम जल्दी से हाथ धो लो। नहीं नहीं तुम नहा लो और फिर डबल रोटी बना लो।"

राजकुमारी ने आटा लिया, एक दो चुटकी नमक लिया और पानी लिया। उसने एक साबुन की टिक्की भी ली और एक नया तौलिया भी। उसने भगवान को धन्यवाद दिया कि डबल रोटी बनाने का यह तरीका उसकी माँ ने उसे बहुत दिन पहले बताया था और वह उसको अभी तक याद था।

नहाने के बाद उसने अपनी एक प्रिय अँगूठी पहनी। इस छोटे काम को करने में भी उसको कुछ खासियत लगी। फिर उसने आटा मलना शुरू किया। जब वह आटा मल रही थी तो वह राजकुमार की नीली आँखों के बारे में सोचने लगी।

वह उन नीली आँखों में इतनी खो गयी कि उसको पता ही नहीं चला कि कब उसकी अँगूठी उसके हाथ से निकल कर आटे में गिर गयी।

थोड़ी ही देर में राजकुमार के लिये गर्म ताजा डबल रोटी बन कर तैयार थी। राजकुमारी ने मला हुआ आटा अपने हाथ पर लगा रहने दिया और कुछ आटा अपने चेहरे और अपने बालों पर भी लगा लिया और फिर किसान की पत्नी को डबल रोटी देने के लिये चली।

किसान की पत्नी ने डबल रोटी देख कर कहा — "यह भी कोई तुमसे ज़्यादा सुन्दर नहीं है पर राजकुमार ने यही मँगवायी है तो यही सही।"

राजा का दूत वह डबल रोटी ले कर राजमहल भागा गया। वहाँ जा कर उसने वह डबल रोटी रानी को दी और रानी ने वह डबल रोटी अपने बेटे को दी।

डबल रोटी देते हुए रानी बेटे से बोली — "बेटा, यह कोई बहुत सुन्दर डबल रोटी तो नहीं है। हमारे शाही रसोइये तो इससे कहीं ज़्यादा अच्छी डबल रोटी बनाते हैं अगर तुम चाहो तो।"

पर राजकुमार को उससे क्या लेना देना था। उसने तो जब वह रोटी सूँघी तो बस एक मुस्कुराहट उसके चेहरे पर दौड़ गयी और उसकी नीली आँखें खुशी से नाच उठीं।

पर जैसे ही उसने उसे खाने के लिये अपने दाँत घुसाये तो वह किसी कड़ी चीज़ में जा कर लगे तो वह आश्चर्य से बोला — "अरे यह क्या है?"

रानी ने तुरन्त पूछा — "क्या हुआ बेटे?"

बेटे ने डबल रोटी तोड़ी तो उसमें से तो नीले रंग के पत्थर जड़ी एक अँगूठी निकली। वह बोला — "देखो तो माँ यह तो एक अँगूठी है और यह कितनी सुन्दर भी है।"

रानी बोली — "और इसका तो रंग भी तुम्हारी ऑखों की तरह नीला ही है मेरे बेटे।"

राजकुमार बोला — "मॉ, यह निशानी है उस लड़की की। मैं उसी लड़की से शादी करूॅगा जिसकी उॅगली में यह आ जायेगी।"

और फिर ऐसा ही हुआ। राजा ने अपने राज्य भर में यह मुनादी पिटवा दी कि हमारे पास एक ऑगूठी है वह जिस लड़की की भी उॅगली में आ जायेगी हम अपने राजकुमार की शादी उसी लड़की से करेंगे।"

दूर से पास से, गॉव से शहर से, मोटी पतली, जवान बुढ़िया, लम्बी छोटी बड़ी चौड़ी सभी तरह की लड़कियॉ और स्त्रियॉ उस ऑगूठी को पहन कर देखने के लिये और राजकुमार से शादी करने के लिये वहॉ आयीं पर वह ऑगूठी तो किसी को भी नहीं आयी।

बहुत लोगों ने कहा — "अरे यह तो बहुत ही छोटी ऑगूठी है। और यह बहुत ही छोटी नहीं बल्कि यह तो इतनी छोटी है कि यह तो किसी छोटी से छोटी स्त्री की सबसे छोटी उॅगली में भी नहीं आ सकती।"

और यह तो ठीक भी था। बहुत सारी लड़कियों के उस ऑगूठी पहन कर देखने के बाद भी जब वह किसी के हाथ में नहीं आयी तो ऐसी लड़की की खोज और बढ़ा दी गयी। किसानों की लड़कियॉ और बतखों की लड़कियॉ भी बुलायी गयीं पर उनको भी वह ऑगूठी नहीं आयी।

आखिर राजा बोला — "शायद हमको अपनी यह खोज अब यहाँ बन्द करनी पड़ेगी।"

रानी भी एक लम्बी साँस ले कर बोली — "हमने राज्य की सब तरह की लड़कियाँ देख लीं पर किसी की उँगली में भी यह अँगूठी नहीं आयी।"

राजकुमार हँस कर बोला — "पर पिता जी, अभी भी एक लड़की है जो हमारे महल में नहीं आयी है - वह है वह भेड़ चराने वाली लड़की।"

राजा बोला — "क्या? उसके बारे में तो मैंने भी सुना है कि उसमें से बहुत बदबू आती है।"

राजकुमार बोला — "पिता जी, आदमी की शक्ल और बू धोखा भी तो दे सकती हैं।"

सो तुरन्त ही उस भेड़ चराने वाली लड़की को लाने के लिये एक दूत भेजा गया। वह लड़की भी तुरन्त ही अपने फटे कपड़े पहने और भेड़ों की बू से लिपटी हुई वहाँ आ पहुँची।

पर उसके हाथ बहुत साफ थे और वह अँगूठी भी उसके हाथ में बिना किसी मुश्किल के आ गयी। अँगूठी में लगा नीला पत्थर उस की उँगली पर ऐसे ही चमक रहा था जैसे राजकुमार की आँखें।

राजकुमार खुशी से बोला — "सो मैंने तुमको ढूँढ ही लिया। तुम वही हो जिसकी मैं इतने दिनों से तलाश में था।"

राजा चिल्लाया — "पर यह तो केवल एक भेड़ चराने वाली है।"

रानी आगे बोली — "और इसमें से तो बू भी बहुत आती है।"

तब वह भेड़ चराने वाली लड़की आगे बढ़ी और बोली — "मैं कोई भेड़ चराने वाली नहीं हूँ। मैं एक राजकुमारी हूँ। मैं यहीं पास के एक राज्य के राज परिवार में पैदा हुई हूँ। अगर आप मुझे थोड़ा सा साबुन और पानी दें तो मैं अपने आपको साफ कर के अभी आपके सामने आती हूँ।"

राजा ने अपने नौकरों को हुक्म दिया कि वे उसको पानी ला कर दें। रानी ने कहा — "और हाँ साबुन लाना मत भूलना। और देखो साबुन भी बहुत सारा होना चाहिये। हमें बहुत सारे साबुन की जरूरत पड़ेगी।"

सो भेड़ चराने वाली ने अपनी पोटली उठायी और एक नौकर के साथ नहाने के लिये चल दी। दो और नौकर उसके पीछे पीछे उसके नहाने का पानी और साबुन ले कर चल दिये।

जब वह लड़की नहा धो कर लौटी तो उसमें कहीं भी कोई भी निशान किसी भी भेड़ चराने वाली का नहीं था। बल्कि शाही दरबार के सामने खड़ी थी एक राजकुमारी अपनी बहुत सुन्दर पोशाक में और अपने सबसे अच्छे गहने पहने हुए।

राजकुमार तो उसको देखता का देखता रह गया। उसके माता पिता ने भी चैन की साँस ली।

तुरन्त ही राजकुमार राजकुमारी के आगे झुका और बोला — "मैं तो तुमको तभी से प्यार करता हूँ जिस दिन मैंने तुमको पहली बार तितलियों के साथ नाचते देखा था।"

राजकुमारी ने मजाक किया — "अगर मुझे ठीक याद पड़ता है तो उस दिन तो तुम मिट्टी में लिपटे हुए थे।"

राजकुमार बोला — "एक बार मैंने तुमको खो दिया था पर अब ऐसा करने का मेरा कोई इरादा नहीं है। क्या तुम मुझसे शादी करोगी?"

एक पल रुक कर राजकुमारी बोली — "शायद।"

"हुँह, शायद। इस शायद के क्या मानी?"

"जैसा कि मैंने तुमसे कहा कि मैं सचमुच में एक राजकुमारी हूँ तो शादी से पहले मुझे अपने पिता की मर्जी तो जाननी ही चाहिये न।"

राजकुमार तुरन्त बोला — "घुड़सवार, दूत, सब इनके पिता के राज्य जाओ और उनसे इनकी हमसे शादी की मर्जी ले कर आओ और जब तक कि वह राजी न हो जायें तब तक वापस नहीं आना।"

दूत बोला — "ठीक है।" और यह कह कर वह अपने आदमियों को ले कर राजकुमारी के राज्य को चल दिया।

राजकुमार ने अपनी होने वाली दुलहिन का हाथ पकड़ा और मुस्कुराया। पर इससे पहले कि वह कुछ कहता कि दरवाजे पर एक दस्तक हुई।

वह दूत कमरे में घुसा। उसका चेहरा बिल्कुल लाल था। वह झुका और बोला — "माफ कीजिये सरकार, पर हम किस राज्य में जायें?"

तब राजकुमारी ने उनको अपना राज्य बताया और वे फिर दौड़े हुए चले गये।

उधर राजकुमारी के पिता ने अब अपनी बेटी के मिलने की उम्मीद छोड़ दी थी। जैसे ही उसको यह महसूस हुआ कि उसने अपनी बेटी के साथ क्या कर दिया उसने उसको अपने सारे राज्य में ढूँढा पर वह कहीं नहीं मिली।

उसको यह अन्दाजा ही नहीं हुआ कि वह अपने राज्य से कुछ दूर किसी और राज्य में पहाड़ के उस पार किसी भेड़ चराने वाले के घर में उसे ढूँढ ले।

सो जैसे ही वे दूत उसके पास शादी की बात करने आये राजा बड़े आराम और खुशी से अपनी बेटी की शादी उस राजकुमार से करने पर राजी हो गया।

शादी की तारीख तय हुई, शादी की तैयारियॉ हुई और शादी की पोशाक सिली जाने लगी। जल्दी ही राजकुमारी ने अपने पिता का अपने नये राज्य में स्वागत किया।

राजकुमारी खुशी से चिल्ला पड़ी — "आइये पिता जी, आइये। मुझे यकीन है कि आप यात्रा से थके होंगे। मैंने आपके लिये एक बड़ा खास खाना तैयार किया हुआ है।"

राजा भी उसको देख कर खुशी से चिल्लाया — "ओह मेरी बेटी। जैसा मैंने तुम्हारे साथ सुलूक किया है उसके हिसाब से मैं उस खाने के लायक तो नहीं हूँ। मुझे तो बस तुम माफ कर दो।"

राजकुमारी बोली — "चलिये, सब कुछ माफ किया पर आज आप मेरा खाना नहीं छोड़ सकते।"

"जैसी तुम्हारी मर्जी, बेटी।"

जब खाने की मेज लगायी गयी तो राजकुमारी अपने पिता के पास बैठी। राजा को यह पता ही नहीं था कि उसके लिये एक खास प्लेट तैयार की गयी थी।

जबकि और लोग जो वहाँ बैठे थे वे सब उस खाने की बहुत तारीफ कर रहे थे पर राजा को अपनी रोटी में बिल्कुल भी स्वाद नहीं आ रहा था। रोटी में नमक नहीं था और उसका खाना भी बिना नमक और मसालों का था।

आखिर राजकुमारी पिता के कान में फुसफुसायी — "पिता जी, मैं तो आपका चेहरा बहुत पहले से पढ़ लेती थी। और मैं आज भी आपके चहरे को देख कर यह बता सकती हूँ कि आपको यह खाना अच्छा नहीं लग रहा है। यह आपके स्वाद का नहीं है न?"

राजा बोला — "बेटी, सारा खाना बहुत मेहनत से बनाया गया है और बड़े सलीके से पेश भी किया गया है मगर मुझे यह कहते में कुछ अच्छा नहीं लग रहा है कि सारा खाना बिल्कुल ही बेस्वाद है।"

राजकुमारी बोली — "पिता जी, ऐसा इसलिये है कि इसमें नमक नहीं है।

अब तो आप जान ही गये होंगे कि नमक हमारी ज़िन्दगी की सबसे कीमती चीज़ है। यह हमारे खाने में स्वाद लाती है। यह हमारी ज़िन्दगी बेहतर बनाती है।

और जब मैंने आपका नमक से मुकाबला किया था तो वह इसी लिये किया था कि मैं आपको इतना ही प्यार करती थी जितना कोई अपने खाने से करता है पर उस समय आपने मुझे अपने राज्य से भी बाहर निकाल दिया था।"

"बेटी, मैं बेवकूफ था जो यह नहीं समझ सका कि तुम कितनी अक्लमन्द हो। अब क्या मुझे इस खाने के लिये थोड़ा सा नमक मिल सकता है?"

राजकुमारी मुस्कुरायी और बोली — "हॉ शायद मैं आपको एक या दो चुटकी दे सकूँ।"

और फिर वह राजा का सबसे अच्छा खाना था जो उसने अपनी ज़िन्दगी में खाया।

19 सुन्दरी और जानवर[41]

एक बार की बात है कि फ्रांस में एक सौदागर रहता था। उसके तीन बेटियॉ थीं। वे सब एक बहुत ही अच्छे शहर में और एक बहुत ही अच्छे मकान में रहते थे।

वे सोने और चॉदी की थालियों में खाना खाते थे और उनकी पोशाकें दुनियॉ के सबसे बढ़िया कपड़े की बनी होतीं थीं जिनमें जवाहरात लगे रहते थे।

उनमें से दो बड़ी लड़कियों के नाम थे मैरीगोल्ड और ड्रैसैलिन्डा[42]। ऐसा कोई दिन खाली नहीं जाता था जिस दिन वे दोनों लड़कियॉ कहीं किसी दावत पर न जाती हों। पर तीसरी लड़की सुन्दरी घर पर ही अपने पिता के साथ रहना पसन्द करती थी।

अब एक दिन ऐसा हुआ कि उन लोगों के बुरे दिन आ गये। सौदागर के जहाज़ जिनमें बहुत सारा कीमती सामान भरा हुआ था समुद्र में खेते हुए टूट गये और वह शहर का सबसे ज़्यादा अमीर आदमी होने की बजाय शहर का एक सबसे गरीब आदमी बन कर रह गया।

---

[41] Beauty and the Beast – a folktale of France, Europe.
By Jeanne-Marie LePrince de Beaumont, published in 1756.
Adapted from the Web Site : http://www.childstoryhour.com/story23.htm

[42] Marigold and Dresselinda – names of the two elder dauhters of the merchant

पर इस सब नुकसान के बाद अभी भी उनके पास गॉव में एक मकान बच गया था। सो शहर में जब उनका सब कुछ बिक गया तो वह सौदागर अपनी तीनों बेटियों को साथ ले कर वहॉ से गॉव चला आया।

मैरीगोल्ड और ड्रैसैलिन्डा दोनों इस बात से बहुत दुखी थीं कि उनका सब कुछ खो गया था। वे पहले बहुत अमीर थीं और लोग उनके साथ घूमने की इच्छा करते थे पर अब जब कि वे एक छोटे से गॉव के छोटे से मकान में रहती थीं वे अकेली पड़ गयी थीं।

पर सौदागर की तीसरी सबसे छोटी बेटी सुन्दरी हमेशा अपने दुखी पिता को खुश रखने के बारे में ही सोचती रहती थी। जबकि उसकी दोनों बड़ी बहिनें लकड़ी की कुर्सियों पर बैठी रहतीं और रोती रहतीं।

क्योंकि अब सौदागर कोई नौकर नहीं रख सकता था इसलिये अब सुन्दरी ही सारे घर का काम करती थी। वही घर में आग जलाती और सारे घर के लिये खाना बनाती। फिर बर्तन साफ करती और घर भर को खुश रखने की अपनी पूरी कोशिश करती। उन सबकी ज़िन्दगी इसी तरह चलने लगी।

दोनों बड़ी बेटियॉ घर में कोई काम नहीं करतीं सिवाय इसके कि वे अपनी हालत पर रोती रहतीं या फिर अपना मुॅह सुजाये पड़ी रहतीं।

दोनों बहिनें अपनी सबसे छोटी बहिन को बहुत तंग करतीं क्योंकि उसके बारे में उनकी शिकायतें ही खत्म नहीं होतीं। वे घर में काम भी नहीं करती थीं और साथ में उसके हर काम में गलतियॉ भी निकालती रहतीं पर सुन्दरी अपने पिता की वजह से उनकी हर बात शान्ति से सह लेती।

इस तरह से एक साल बीत गया और एक दिन उस सौदागर के लिये एक चिट्ठी आयी। चिट्ठी पढ़ कर सौदागर अपनी बेटियों को ढूँढ रहा था ताकि वह उस चिट्ठी में लिखी हुई अच्छी खबर उनको सुना सके।

जैसे ही वे उसको मिल गयीं वह बोला — "बेटियों, मुझको लगता है कि अब हमारे अच्छे दिन वापस आ गये। आज ही मुझे यह चिट्ठी मिली है कि हमारा एक जहाज़ जिसको हम यह सोच चुके थे कि वह खो गया है वह मिल गया है और वापस भी आ गया है।

और अगर ऐसा है तो अब हमको गरीबी में नहीं रहना पड़ेगा। अब हम लोग पहले की तरह से तो अमीर नहीं होंगे पर कम से कम आराम से रह पायेंगे।

सुन्दरी, जा बेटी मेरा यात्रा वाला शाल[43] ले आ। मैं अभी अपने जहाज़ को लेने के लिये जाता हूँ। अब तुम

[43] Translated for the word "Cloak" – see the pictute above. It may be long as it is shown here, or short – up to the waist

लोग मुझे यह बताओ कि मैं वहॉ से तुम लोगों के लिये क्या ले कर आऊॅ?"

मैरीगोल्ड बिना किसी हिचक के तुरन्त ही बोली — "मेरे लिये सौ पौंड लाना।"

ड्रैसैलिन्डा बोली — "पिता जी, मेरे लिये एक सिल्क की पोशाक लाना।"

सुन्दरी ने अपने पिता को उसका यात्रा वाला शाल ओढ़ाया तो पिता ने उससे पूछा — "और बेटी मैं तुम्हारे लिये क्या ले कर आऊॅ?"

सुन्दरी बोली — "मेरे लिये पिता जी एक गुलाब का फूल लाइयेगा।"

उसके पिता ने उसे प्यार से चूमा और गुड बाई कर के अपने काम पर चला गया। पिता के जाते ही मैरीगोल्ड ने सुन्दरी से कहा — "ओ बेवकूफ लड़की, क्या तू पिता जी को यह दिखाना चाहती है कि तू हमसे ज़्यादा पिता का ख्याल रखती है? क्या तुझको वाकई गुलाब चाहिये?"

सुन्दरी बोली — "हॉ बहिन मुझे वाकई गुलाब चाहिये। पर उसको मॉगने की वजह यह नहीं थी जो तुम सोच रही हो। मुझे लगा कि पिता जी को अपने जहाज़ की सुरक्षा देखने में काफी काम

रहेगा सो बिना बाजार जाये ही वह मेरे लिये यह ला सकते हैं मैंने इसी लिये उनसे वह मँगवाया।"

पर उसकी बहिनें उसकी इस बात पर उससे बहुत नाराज थीं। वे वहाँ से अपने कमरे में चलीं गयीं और जा कर अपनी उन चीज़ों के बारे में बात करने लगीं जो उनके पिता उनके लिये लाने वाले थे।

इस बीच वह सौदागर बड़ी उम्मीद से अपने प्लान बनाता हुआ शहर गया कि वह अपने पैसे का क्या करेगा जो उसे उस जहाज़ से मिलेगा। पर जब वह बन्दरगाह पर पहुँचा तो उसको पता चला कि वहाँ तो कोई जहाज़ ही नहीं आया।

उसने सोचा लगता है किसी ने उसके साथ चाल खेली है। सो वह फिर से अपनी उसी हालत में रह गया था। वह बेचारा सारा दिन केवल यह पता करने के लिये इधर उधर घूमता रहा कि जो चिट्ठी उसको मिली थी उस चिट्ठी में कोई सच्चाई थी या नहीं।

जब उसे वहाँ अपना खोया हुआ जहाज़ नहीं दिखायी दिया तो शाम को बड़े दुखी मन से वह अपने घर की तरफ चल पड़ा। वह बहुत थका हुआ था और परेशान था। जबसे उसने घर छोड़ा था उसने खाना भी नहीं खाया था सो वह भूखा भी बहुत था।

घर आते आते उसको काफी अँधेरा हो गया और वह एक जंगल के पास आ निकला जिसको उसे घर पहुँचने से पहले पार करना होता था।

तभी उसको जंगल में एक रोशनी चमकती हुई दिखायी दी तो उसने उस रात अपने घर जाने का विचार छोड़ दिया और निश्चय किया कि वह वहीं जंगल में उसी रोशनी की तरफ जायेगा और वहीं खाना और रात को रुकने की जगह माँगेगा।

वह सोच रहा था कि शायद वहाँ किसी लकड़हारे की कोई झोंपड़ी होगी पर वह जैसे जैसे उस रोशनी के पास पहुँचा तो उसको यह देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ कि वह रोशनी तो एक बड़े शानदार महल की एक खिड़की से आ रही थी।

उसने उस महल का दरवाजा खटखटाया पर किसी ने कोई जवाब नहीं दिया। उस समय उसको बहुत तेज़ भूख लग रही थी और बाहर बहुत ठंडा था सो वह हिम्मत कर के उस महल के अन्दर चला गया और संगमरमर की सीढ़ियाँ चढ़ कर एक बड़े से कमरे में पहुँच गया।

रास्ते में भी उसको कोई नहीं मिला। उस बड़े कमरे में आग जल रही थी सो वह उसकी गर्मी लेने के लिये उस आग के पास बैठ गया। जब वह थोड़ा गर्म हो गया तो घर के मालिक को ढूँढने निकला।

पर उसको बहुत दूर नहीं जाना पड़ा। पहला दरवाजा खोलते ही उसको एक और कमरा मिला जिसमें मेज पर एक आदमी के लिये खाना लगा था। उस खाने को देखते ही उसकी भूख और बढ़ गयी।

क्योंकि घर का मालिक अभी भी उसको नहीं मिला था सो जितनी हिम्मत से वह घर में घुसा था उतनी ही हिम्मत से वह खाना खाने भी बैठ गया।

खाना खाने के बाद उसने फिर से घर के मालिक से मिलने का विचार किया तो उसने महल का दूसरा दरवाजा खोला। वहॉ उस कमरे में एक बहुत सुन्दर बिस्तर लगा हुआ था।

पेट भरने के बाद और थके होने की वजह से उसको बहुत ज़ोर की नींद आ रही थी। पलंग देख कर उसने सोचा "यह तो किसी परी का काम दिखायी देता है सो मुझे अब और आगे इस घर के मालिक को ढूँढने की जरूरत नहीं है। अभी तो में सो जाता हूँ कल सुबह देखूँगा।"

सो वह उस पलंग पर लेट गया और तुरन्त ही सो गया।

जब वह उठा तो सुबह हो चुकी थी। एकदम से वह अपने आपको इतने मुलायम बिस्तर में पा कर बहुत आश्चर्यचकित था पर फिर उसको सब याद आ गया कि कल रात क्या हुआ था।

उसने सोचा "अब मुझे चलना चाहिये पर अच्छा होता अगर मैं इस घर के मालिक को उसके इस अच्छे खाने और सोने की सुविधा देने के लिये धन्यवाद देता जाता।

पर जब वह बिस्तर से बाहर निकला तो उसको लगा कि इस घर के मालिक को उसको खाने और सोने की जगह देने के अलावा उसको किसी और चीज़ के लिये भी धन्यवाद देना था।

उसके पलंग के पास रखी एक कुर्सी पर एक नया सूट रखा था जिस पर उसका नाम लिखा हुआ था और उस सूट की हर जेब में दस दस सोने के सिक्के रखे हुए थे।

जब उसने वह नीला और सुनहरी सूट पहना जिसकी जेब में वे सोने के सिक्के खनखना रहे थे तो वह तो एक दूसरा ही आदमी लगने लगा।

कपड़े पहन कर जब वह नीचे गया तो उसी छोटे कमरे में जिसमें उसने पिछली रात खाना खाया था सुबह का नाश्ता उसका इन्तजार कर रहा था। उसने पेट भर कर नाश्ता किया और फिर सोचा कि उस महल के बागीचे में थोड़ा घूम लिया जाये।

वह संगमरमर की सीढ़ियॉ उतर कर नीचे गया और जब बागीचे में पहुँचा तो उसने देखा कि वह बागीचा तो गुलाब के फूलों से भरा पड़ा है – लाल और सफेद, गुलाबी और पीले, नारंगी और मैरून। उनको देख कर सौदागर को सुन्दरी की मॉग का ध्यान आ गया।

उसने सोचा — "बेचारी मेरी प्यारी दोनों बड़ी बेटियॉ, वे कितनी नाउम्मीद होंगीं जब वे यह सुनेंगी कि मेरा जहाज़ नहीं आया। पर सुन्दरी को वह जरूर मिल जायेगा जो उसने मॉगा था।"

और उसने हाथ बढ़ा कर अपने सबसे पास वाला एक गुलाब तोड़ लिया। जैसे ही गुलाब की डंडी उसके हाथ में टूटी वह डर कर पीछे हट गया क्योंकि तभी उसने गुस्से से भरी एक गुर्राहट सुनी।

दूसरे ही पल एक भयानक जानवर उसके ऊपर कूद पड़ा। वह दुनियॉ के किसी भी आदमी से ज़्यादा लम्बा था और किसी भी जानवर से ज़्यादा बदसूरत था। वह जानवर उस सौदागर को दुनियॉ की किसी भी चीज़ से कहीं ज़्यादा भयानक लग रहा था।

जानवर की आवाज में दहाड़ने के बाद वह उससे आदमी की आवाज में बोला — "ओ नीच, क्या मैंने तुमको खाना नहीं खिलाया? क्या मैंने तुमको रात को सोने के लिये जगह नहीं दी? क्या मैंने तुमको पहनने के लिये कपड़े नहीं दिये? क्या मैंने तुमको खर्चे के लिये पैसे नहीं दिये?

और तुम मेरे इन ऐहसानों का बदला मेरी उन चीज़ों को चुरा कर दे रहे हो जिनकी में इतनी परवाह करता हूॅ?"

सौदागर बेचारा रुऑसा हो कर बोला — "दया करो, मुझ पर दया करो। इस गुलाब को चुराने का मेरा कोई बुरा इरादा नहीं था।"

वह जानवर बोला — "तो फिर क्या मतलब था तुम्हारा? नहीं नहीं, तुमको तो अब मरना ही है।"

बेचारा सौदागर घुटनों के बल बैठ गया और सोचने लगा कि वह क्या कह कर उस बेरहम जानवर का दिल पिघलाये।

आखिर वह बोला — "जनाब, मैंने यह फूल केवल इसलिये तोड़ा था क्योंकि मेरी सबसे छोटी बेटी ने मुझसे एक गुलाब का फूल

लाने के लिये कहा था। मैं तो यह सोच भी नहीं सकता था कि इतना सब देने के बाद आप केवल एक गुलाब के फूल की वजह से मेरे ऊपर इतना गुस्सा होंगे।"

जानवर ने पूछा — "अच्छा तो तुम अपनी इस बेटी के बारे में बताओ मुझे। क्या वह एक अच्छी लड़की है?"

सौदागर खुश हो कर बोला — "जनाब वह मेरी सबसे अच्छी और सबसे प्यारी बेटी है।"

और यह कह कर वह यह सोचते हुए रो पड़ा कि अब तो वह मर ही जायेगा। उसकी प्यारी बेटी सुन्दरी इस दुनियॉ में अकेली रह जायेगी। कौन उससे दया का बरताव करेगा।

वह रोते रोते बोला — "ओह, मेरे बाद मेरे बच्चे कैसे रहेंगे?"

वह जानवर फिर बोला — "पर यह तो तुमको मेरा गुलाब चुराने से पहले सोचना चाहिये था। हॉ अगर तुम्हारी कोई एक बेटी तुमको इतना प्यार करती हो जो तुम्हारे बिना रहने की बजाय तकलीफ सहना ज़्यादा पसन्द करे तो तुम्हारी जान बच सकती है।

तुम अपने घर वापस जाओ और अपनी सब बेटियों को जा कर बताओ कि तुम्हारे साथ क्या हुआ। पर तुम मुझसे वायदा करो कि आज से अगले तीन महीनों के अन्दर अन्दर तुम या तुम्हारी एक बेटी यहॉ मेरे महल के दरवाजे पर जरूर होगी।"

उस बेचारे आदमी के पास इसके अलावा और कोई चारा नहीं था कि वह इस बात का वायदा करे कि ऐसा ही होगा। उसने सोचा कि कम से कम उसकी ज़िन्दगी तीन महीने तो बढ़ी।

जानवर फिर बोला — "मैं तुमको इस तरह खाली हाथ नहीं जाने दूँगा।" कह कर वह अपने महल की तरफ चल दिया और वह आदमी उसके पीछे पीछे चल दिया।

वह जानवर उस आदमी को एक बड़े कमरे में ले गया। वहाँ उस कमरे के फर्श पर चाँदी की एक बहुत बड़ी आलमारी रखी थी। जानवर ने वह आलमारी खोल कर उसको दिखाते हुए कहा — "इसमें से जो चीज़ भी तुमको अच्छी लगे और जितना तुमको चाहिये तुम उतना खजाना ले लो।"

सौदागर से जितना लिया जा सका उसमें से उसने उतना खजाना ले लिया। जानवर ने उस आलमारी का दरवाजा बन्द करते हुए कहा — "अब तुम अपने घर जा सकते हो।"

सो वह सौदागर भारी दिल से अपने घर के लिये चला। जैसे ही वह महल के दरवाजे से बाहर निकला तो वह जानवर बोला — "पर सुन्दरी का यह गुलाब तो तुम भूल ही गये।"

और उसी समय उसने अपने बागीचे के सबसे सुन्दर गुलाब के फूलों का एक बहुत बड़ा गुच्छा सौदागर के हाथों में थमा दिया।

वह सौदागर जब घर पहुँचा तो सुन्दरी उससे मिलने के लिये बाहर दौड़ी आयी तो उसने सब कुछ सुन्दरी को पकड़ा दिया और

बोला — "ले मेरी बच्ची और आनन्द कर क्योंकि यह सब तेरे गरीब पिता की ज़िन्दगी के बदले में हैं।"

यह कह कर वह बैठ गया और फिर अपनी सारी कहानी अपनी तीनों बेटियों को सुनायी। उसकी कहानी सुन कर दोनों बड़ी बेटियॉ रो पड़ी। वे सुन्दरी को ही इस सबके लिये जिम्मेदार ठहरा रही थीं।

वे सुन्दरी से बोलीं — "अगर तुम्हारी ऐसी मॉग न होती तो हमारे पिता जी अपने नये कपड़ों में सोने के सिक्के ले कर महल से ऐसे ही चले आते। पर तुम्हारी गुलाब की मॉग ने उनको गुलाब तोड़ने पर मजबूर किया और उसी वजह से यह सब हुआ। उसी ने उनकी जान खतरे में डाली।"

सुन्दरी बोली — "नहीं नहीं, पिता जी अपनी ज़िन्दगी नहीं देंगे। मैं ही अपनी ज़िन्दगी दूँगी क्योंकि यह सब मेरी ही वजह से हुआ है।

तीन महीने पूरे होने पर मैं उस जानवर के पास जाऊँगी और फिर अगर वह चाहे तो मुझे मारे या और कुछ करे पर मैं उसको अपने पिता जी को कोई नुकसान नहीं पहुँचाने दे सकती।"

सौदागर ने उसे बहुत समझाया कि वह उस जानवर के पास न जाये पर सुन्दरी ने तो यह सोच लिया था सो वह तीन महीने खत्म होने पर उस जानवर के महल की तरफ चल दी। उसका पिता उसको रास्ता दिखाने के लिये उसके साथ गया।

पहले की तरह ही उसने जंगल में रोशनी जलती हुई देखी, पहले ही की तरह बेकार ही उसने उस महल का दरवाजा खटखटाया, बड़े कमरे में जा कर अपने आपको थोड़ा गर्म किया और उसके बाद दूसरे छोटे कमरे में दो लोगों के लिये खाने की मेज लगी देखी।

सुन्दरी बोली — "पिता जी, आप बिल्कुल चिन्ता मत कीजिये। मुझे नहीं लगता कि वह जानवर मुझे मारना चाहता है। क्योंकि अगर ऐसा होता तो वह मुझे इतना अच्छा खाना न खिलाता।"

पर अगली सुबह जब वह जानवर कमरे में आया तो सुन्दरी उसको देख कर डर के मारे अपने पिता से जा कर चिपक गयी।

जानवर बहुत ही नम्र आवाज में बोला — "तुमको मुझसे डरने की जरूरत नहीं है। पर तुम मुझको इतना बता दो कि क्या तुम अपनी मर्जी से यहॉ आयी हो?"

कॉपते हुए सुन्दरी बोली — "हॉ।"

जानवर बोला — "तुम बहुत अच्छी लड़की हो।"

फिर वह उसके पिता की तरफ घूम कर उससे बोला — "तुम अगर चाहो तो आज की रात यहॉ सो सकते हो। पर सुबह होते ही तुम अपने घर चले जाना और अपनी बेटी को यहॉ छोड़ जाना।"

अगली सुबह पिता बेचारा अपनी बेटी को छोड़ कर ज़ोर ज़ोर से रोता हुआ अपने घर चला गया। सुन्दरी भी अपने आपको सॅभालती हुई न डरने की कोशिश करती रही।

वह महल में इधर उधर घूमती रही। उसने इतना अच्छा महल पहले कभी नहीं देखा था।

उस महल में जो सबसे अच्छे कमरे थे उनके दरवाजों के ऊपर लिखा था "सुन्दरी का कमरा"।

उन कमरों में से किसी में बहुत सारी किताबें रखी थीं तो किसी में संगीत के साज़ रखे थे, किसी में कैनेरी चिड़ियॉ थीं तो किसी में फारस की बिल्लियॉ थीं और वह सब कुछ वहॉ था जो किसी के लिये अच्छा समय गुजारने के लिये हो सकता था।

यह सब देख कर उसके मुँह से निकला — "ओह, काश यहॉ मैं अपने पिता को देख सकती तो मुझे कितना अच्छा लगता।"

जब वह यह बोल रही थी तो इत्तफाक से वह एक बहुत बड़े शीशे के सामने खड़ी थी। तुरन्त ही उस शीशे में उसने अपने पिता की परछाईं देखी जो घोड़े पर सवार उसी महल की तरफ चला आ रहा था।

उस रात जब सुन्दरी शाम को खाना खाने बैठी तो वह जानवर वहॉ आया और उससे पूछा — "क्या मैं तुम्हारे साथ खाना खा सकता हूँ?"

सुन्दरी बोली — "अगर तुमको अच्छा लगे तो।"

सो वह जानवर भी उसके साथ खाना खाने बैठ गया।

जब वह खाना खा चुका तो बोला — "सुन्दरी, मैं तो बहुत बदसूरत हूँ और बहुत बेवकूफ भी। पर मैं तुमको बहुत प्यार करता हूँ। क्या तुम मुझसे शादी करोगी?"

सुन्दरी बड़ी नर्मी से बोली — "नहीं जानवर।"

जानवर ने एक लम्बी साँस भरी और वहाँ से उठ कर चला गया।

हर रात ऐसा ही होता रहा। जानवर सुन्दरी के साथ खाना खाता। खाना खा कर वह उससे पूछता कि क्या वह उससे शादी करेगी। वह हमेशा उसको नर्मी से मना कर देती "नहीं, जानवर" और वह वहाँ से उठ कर चला जाता।

इस सारे समय में कोई छिपे छिपे उसके कामों के लिये खड़ा रहता जैसे वह कोई रानी हो। उसको कोई गवैया या बाजे बजाने वाले तो दिखायी नहीं देते थे पर उसके कानों में संगीत की आवाज सुनायी पड़ती रहती।

पर इन सब चीज़ों में वह जादुई शीशा सबसे अच्छा था क्योंकि उसमें वह सब कुछ देख सकती थी जो वह चाहती थी।

जैसे जैसे दिन गुजरते गये उसने महसूस किया कि उसकी छोटी से छोटी इच्छा वहाँ उसके कहने से पहले ही पूरी हो जाती थी।

इस सबसे उसे ऐसा लगने लगा कि यह जानवर उसको बहुत चाहता है। और उसको इस बात का दुख होने लगा कि हर रात

जब भी वह उससे अपनी शादी बात करता और वह ना कर देती तो वह कितना दुखी हो कर वहॉ से चला जाता था।

एक दिन उसने उस शीशे में देखा कि उसके पिता बीमार थे तो उस रात उसने उस जानवर से कहा — "ओ जानवर, तुम हमेशा से मेरे लिये बहुत अच्छे रहे हो। क्या तुम मुझे मेरे पिता को देखने जाने दोगे? वह बहुत बीमार हैं और यह सोचते हैं कि शायद मैं मर चुकी हूॅ।

मेहरबानी कर के मुझे उनको देखने जाने दो। वह मुझको देख कर खुश हो जायेंगे। मैं तुमसे वायदा करती हूॅ कि उनसे मिल कर मैं सचमुच में जल्दी ही वापस आ जाऊॅगी।"

जानवर बड़ी नर्मी से बोला — "ठीक है। तुम जाओ पर देखो एक हफ्ते से ज़्यादा नहीं रहना क्योंकि अगर तुम इससे ज़्यादा रहीं तो मैं तुम्हारे बिना दुख से मर जाऊॅगा। क्योंकि मैं तुमको बहुत प्यार करता हूॅ।"

सुन्दरी बोली — "पर मैं यहॉ से जाऊॅ कैसे मुझको तो रास्ता ही नहीं मालूम।"

तब जानवर ने उसको एक अॅगूठी दी और कहा कि जब वह सोने जाये तो उस अॅगूठी को अपनी उॅगली में पहन ले। उसमें लगा लाल वह अपनी हथेली की तरफ कर ले।

इससे अगली सुबह जब वह उठेगी तो अपने पिता के घर में ही उठेगी। जब वह वापस आना चाहेगी तो वह फिर उसी तरह करेगी

तो वह यहॉ आ जायेगी। उसने ऐसा ही किया। अगले दिन सुबह वह अपने पिता के घर में थी।

अपनी बेटी को अपने पास देख कर उसका पिता बहुत खुश हुआ पर उसकी बहिनों को उसका आना अच्छा नहीं लगा।

और जब उन्होंने यह सुना कि वह जानवर उसके साथ कितनी अच्छी तरह से बर्ताव करता है तब तो उनको उसके अच्छे भाग्य से जलन ही होने लगी। वह तो कितने अच्छे महल में रहती है जबकि वे एक छोटे से मकान में रहती हैं।

मैरीगोल्ड बोली — "काश हम वहॉ चले जाते तो हम भी ऐसे ही रहते। सुन्दरी को हमेशा ही सबसे अच्छी चीज़ मिल जाती है।"

ड्रैसैलिन्डा सुन्दरी से बोली — "अच्छा ज़रा अपने महल के बारे में भी तो कुछ बताओ। तुम वहॉ क्या करती हो? कैसे बिताती हो अपना समय?"

सो सुन्दरी ने यह सोचते हुए कि यह सब उनको सुनने में अच्छा लगेगा अपनी सब बातें उनको बतायीं। और वह सब सुन सुन कर हर दिन उनकी जलन बढ़ती ही गयी।

आखिर ड्रैसैलिन्डा ने मैरीगोल्ड से कहा — "सुन्दरी ने उसको एक हफ्ते में वापस आने के लिये कहा है अगर हम उसको यह बात किसी तरह भुला दें तो वह जानवर उससे नाराज हो जायेगा और उसको मार देगा। फिर हम लोगों को मौका मिल सकता है।"

सुन्दरी को अगले दिन जानवर के पास वापस जाना था। सो अगले दिन सुन्दरी के वापस जाने से पहले उन्होंने सुन्दरी के शराब के गिलास में पौपी[44] का रस मिला दिया जिसने उसको इतना सुलाया कि वह पूरे दो दिन और दो रात सोती रही।

अपनी नींद के आखिरी समय में उसने एक सपना देखा और उस सपने में उसने उस जानवर को उसके महल के बागीचे में गुलाबों के बीच में मरा पड़ा देखा। वह बहुत ज़ोर से रोते हुए उठ गयी।

हालॉकि उसको यह पता नहीं चला कि जानवर को छोड़े हुए उसको एक हफ्ते के ऊपर दो दिन और हो गये हैं फिर भी उसने अपनी अॅगूठी का लाल अपनी हथेली की तरफ किया और सो गयी।

अगली सुबह जब वह उठी तो जानवर के महल में अपने बिस्तर पर थी। अब उसको यह तो नहीं मालूम था कि उस महल में उस जानवर के कमरे कहॉ हैं पर वह शाम के खाने तक का इन्तजार नहीं कर सकती थी।

उसको लगा कि उसको जानवर को अभी अभी देखना चाहिये। सो वह महल में उसका नाम पुकारते हुए इधर से उधर भागने लगी।

[44] Poppy is a kind of flower. See its picture above. Its seeds are opium seeds.

वह सारा बागीचा छान आयी पर उसका कहीं पता नहीं था। वह बोली — "ओह, अब मैं क्या करूँ मुझे तो वह कहीं मिल ही नहीं रहा। अब मैं फिर कभी खुश नहीं रह पाऊँगी।"

फिर उसको अपना सपना याद आया तो वह गुलाब के बागीचे में भागी गयी। वहाँ बड़े फव्वारे के पास वह बड़ा जानवर मरा पड़ा था। सुन्दरी तुरन्त ही उसके पास घुटनों के बल बैठ गयी।

वह रोते रोते बोली — "ओह प्यारे जानवर, क्या तुम वाकई मर गये हो? अगर ऐसा है तो मैं भी मर जाऊँगी। मैं तुम्हारे बिना नहीं रह सकती।"

लो यह सुन कर वह जानवर तो तुरन्त ही उठ कर बैठा हो गया और एक लम्बी सी साँस भर कर बोला — "सुन्दरी, क्या तुम मुझसे शादी करोगी?"

उसको ज़िन्दा देख कर तो सुन्दरी बहुत ही खुश हो गयी। वह बिना सोचे समझे तुरन्त बोली — "हाँ हाँ, मैं तुमसे शादी करूँगी क्योंकि मैं तुमसे बहुत प्यार करती हूँ।"

बस जैसे ही सुन्दरी ने यह कहा तो उस जानवर के खुरदरे बाल नीचे गिर पड़े और वहाँ जानवर के बदले में एक बहुत सुन्दर राजकुमार खड़ा हुआ था। उसने सफेद और रुपहला सूट पहना हुआ था जैसा कि लोग शादी के समय पहनते हैं।

वह सुन्दरी के पैरों के पास बैठ गया और ताली बजायी और बोला — "प्रिय सुन्दरी, तुम्हारे प्यार के अलावा मेरे ऊपर का यह जादू और कोई नहीं तोड़ सकता था।"

तब राजकुमार ने सुन्दरी को अपनी कहानी सुनायी — "एक नीच परी ने मुझे जानवर में बदल दिया था। और मुझे तब तक इसी हालत में रहना था जब तक कि कोई कुँआरी लड़की मुझसे मेरी बदसूरती और बेवकूफी के बावजूद इतना प्यार न करने लगे कि वह मुझसे शादी करने के लिये तैयार हो जाये।

अब मेरा वह जादू टूट गया है। चलो प्रिये, अब हम अपने महल चलते हैं। अब तुमको वहाँ मेरे सारे नौकर चाकर दिखायी देंगे। वे पहले इसलिये दिखायी नहीं देते थे क्योंकि उस परी ने उन सबके ऊपर भी जादू डाल दिया था। वे अब तक तुमको दिखायी दिये बिना ही तुम्हारी सेवा करते रहते थे। अब तुम उनको देख पाओगी।"

वे अपने महल में लौट आये। अब महल में खूब धूमधाम हो रही थी। वहाँ बहुत सारे राज दरबारी इधर उधर घूम रहे थे जो बड़ी बेसब्री से राजकुमार और राजकुमारी का हाथ चूमने का इन्तजार कर रहे थे।

वहाँ बहुत सारे नौकर भी इधर इधर घूम रहे थे। राजकुमार ने एक नौकर के कान में कुछ फुसफुसाया जिसे सुन कर वह बाहर

चला गया और सुन्दरी के पिता और बहिनों को ले कर वापस आ गया।

सुन्दरी की बहिनों को मूर्तियॉ बना दिया गया और उनको महल के दरवाजे को दोनों तरफ खड़ा कर दिया गय जब तक कि उनके दिल नर्म न हो जायें और वे अपनी बहिन के साथ किये गये बुरे बर्ताव पर पछताने न लगें।

सुन्दरी की राजकुमार के साथ शादी तो हो गयी पर सुन्दरी छिपे छिपे अपनी बहिनों की मूर्तियों को पास रोज जाती थी और रोती थी।

उसके ऑसुओं ने उन पत्थर दिल मूर्तियों के दिलों को भी नर्म कर दिया और वे फिर से ज़िन्दा हो गयीं और फिर ज़िन्दगी भर हर एक के लिये नर्म दिल और दयावान रहीं।

सुन्दरी भी अपने जानवर के साथ जो अब जानवर नहीं था बल्कि एक सुन्दर राजकुमार था हॅसी खुशी रही। मेरे ख्याल से तो वे अभी भी उस देश में खुशी खुशी रह रहे होंगे जहॉ सपने सच हो जाते हैं।

20 भालू ने मॉस खाना कैसे सीखा[45]

यह लोक कथा यूरोप महाद्वीप के फ्रांस देश की लोक कथाओं से ली गयी है। सो यह उन दिनों की बात है जब भालू मॉस नहीं खाते थे। वे भी सब्जियों और फल पर ही गुजारा करते थे।

एक बार की बात है कि जाड़े का मौसम था। ठंड बड़े ज़ोरों पर थी। जानवरों और पक्षियों को अपने खाना ढूँढने के लिये मीलों लम्बा सफर करना पड़ता था। कुछ पक्षी पहाड़ों की ठंड से बचने के लिये पहाड़ों की तलहटी में चले गये थे।

ऐसी ही एक शाम को एक भालू, उसकी पत्नी और उसका बच्चा तीनों ही ठंड से सिकुड़े अपनी गुफा में बैठे थे। लगता था कि वे सब बहुत भूखे हैं और उन्होंने कई दिनों से पेट भर खाना नहीं खाया है।

पत्नी ने कहा — "ऐसे कब तक चलेगा? कितनी ठंड पड़ रही है और खाना भी कहीं मिल नहीं रहा। ऐसे तो हम लोग मर जायेंगे।"

पति ने एक लम्बी सॉस भर कर कहा — "क्या करें, तुम ही बताओ। मेरी तो कुछ समझ में नहीं आता।"

[45] How the Bear Learnt to Eat Meat? – a folktale from France, Europe

पत्नी ने अपने भूखे बच्चे की ओर देखा और बोली — "तुम पहाड़ की तलहटी के पास वाले गॉव में क्यों नहीं चले जाते? लेकिन ज़रा होशियारी से जाना कहीं ऐसा न हो कि तुमको देख कर वे लोग डर जायें।

अगर तुम वहॉ अपने पिछले पैरों पर खड़े हो कर नाचोगे तो वे शायद लोग तुमको देख कर हॅसें और खुश हो कर शायद कुछ प्याज□बन्द गोभी या कुछ आलू दे दें।"

पति ने जवाब दिया — "यह तो साफ ही है कि अगर कोई हमारी सहायता नहीं करेगा तो हम लोग मर जायेंगे इसलिये इस तरीके को आजमाने में भी क्या हर्ज है।

हालॉकि मैंने यह सब पहले कभी किया नहीं है पर कल मैं इसे पहली बार कर के देखता हूॅ। कल मैं अॅधेरे के समय शाम के बाद जाऊॅगा और आदमी की गन्ध सूॅघूॅगा।"

अगले दिन शाम को अॅधेरा होने के बाद पति भालू पहाड़ों से नीचे उतरा और गॉव के रास्ते पर चल दिया। घने कोहरे में से तारों की झिलमिल रोशनी झॉक रही थी। गॉव के पास पहुॅच कर उसको धुॅए की गन्ध आयी। पहली बार पति भालू ने धुॅए की गन्ध महसूस की।

आगे जाने पर उसने देखा कि जहॉ धुॅआ था वहॉ आग थी और जहॉ आग थी वहॉ गर्मी। उस गर्मी से उसके शरीर में कुछ जान आयी।

वह और आगे बढ़ा तो रोटी की खुशबू आयी क्योंकि वहीं पास में एक बेकरी की दूकान थी जहॉ गॉव भर के लिये डबल रोटी बनती थी।

रात हो चुकी थी। करीब करीब सारा गॉव सोया पड़ा था। पर ऐसी रात में एक आदमी अभी भी रोटियॉ बना रहा था।

पति भालू उधर ही जा पहुॅचा और खुले दरवाजे के सामने खड़े हो कर अपनी पिछली टॉगों पर नाचने लगा, जैसा कि उसकी पत्नी ने उससे कहा था।

आदमी की निगाह उधर गयी तो वह चौंक गया। उसने देखा कि एक भालू बाहर खड़ा अपने पिछले पैरों पर खड़ा नाच रहा है। उसकी तो नसों में जैसे खून ही जम गया। वह डर के मारे कॉपने लगा।

कुछ पल वह उसे नाचते देखता रहा तो उसे लगा कि भालू की नीयत उसको तंग करने की नहीं थी बल्कि उसको उसकी ताजा डबल रोटी चाहिये थी। यह देख कर उसकी जान में जान आयी।

उसने भालू से कहा — "तुम वहॉ बाहर खड़े खड़े क्यों नाच रहे हो, आओ मेरी कुछ सहायता ही कर दो। डबल रोटी सेकने की ये तश्तरियॉ मुझे उठा दो और मैं तुम्हें कुछ डबल रोटी दे दूॅगा।"

भालू से जैसा कहा गया उसने वैसा ही किया। उसने वे तश्तरियॉ उठायीं, उनको ओवन में रखा, दूकान साफ की, डबल रोटियॉ ओवन से निकालीं।

सारी रात भालू उस आदमी के वफादार नौकर की तरह उसकी दूकान में काम करता रहा। सुबह को चार डबल रोटियॉ मजदूरी के रूप में ले कर वह अपनी गुफा में पहुँचा। ताजा डबल रोटी देख कर सारा भालू परिवार बहुत खुश हुआ और सबने ताजा डबल रोटी की दावत बॉट कर खायी।

इस घटना के बाद अब वह भालू रोज रात को गॉव जाने लगा और डबल रोटी बनाने में उस आदमी की सहायता करने लगा। उस इलाके में वह आदमी पॉच गॉवों के लिये अकेले ही डबल रोटी बनाता था।

धीरे धीरे वह आदमी अपने शान्ति प्रिय और मेहनती साथी को बहुत पसन्द करने लगा था। और मजदूरी भी कुछ ज़्यादा नहीं, बस केवल चार डबल रोटी। लेकिन फिर भी वह एक भालू को अपनी दूकान में नौकर रख कर खुश नहीं था।

एक रात उस आदमी की पत्नी इस अजीब काम को देखने के लिये रात को उठी। उसको देख कर सचमुच ही बड़ा आश्चर्य हुआ कि किस प्रकार एक भालू सधे हुए हाथों से दूकान का सारा काम कर रहा था।

उसने अपने पति से कहा — "अगर इस भालू की शादी हो गयी हो तो इससे बात करो। इसकी पत्नी घर के कामों में मेरी सहायता कर दिया करेगी।"

दूकान के मालिक ने भालू से इस बारे में बात की। पति भालू ने जब यह सुना तो उसने अपनी पत्नी को जा कर बताया। पत्नी यह सुन कर बहुत खुश हुई और अगले दिन से वह भी गॉव जाने लगी।

दोनों ही भालू मेहनती थे, साथ ही उनकी मजदूरी भी बहुत कम थी सो आदमी और उसकी पत्नी दोनों ने ही यह तय किया कि वह भालू परिवार वहीं गॉव में ही रहे और उनकी सहायता करे।

उन्होंने उनको रहने के लिये वहीं पास में ही एक घर दे दिया गया जिसमें काफी घास फूस थी।

क्योंकि उन भालुओं को अब ताजा पकी हुई डबल रोटी खाने को मिलती थी वे बिल्कुल ही भूल गये थे कि वे क्या हैं, उनका खाना क्या है और उन्हें कहॉ रहना चाहिये।

अब हुआ यह कि उस आदमी के एक लड़का था जो गॉव के दूसरे सिरे पर स्कूल जाया करता था।

उस लड़के और भालू बच्चे की इतनी अधिक दोस्ती हो गयी कि उस आदमी का लड़का उस भालू बच्चे को एक पल के लिये भी अलग नहीं करना चाहता था। सो वह लड़का उस भालू बच्चे को भी अपने साथ स्कूल ले जाने लगा।

उस लड़के के टीचर भी उस भालू बच्चे को देख कर बहुत खुश थे क्योंकि वह भालू बच्चा सोने की तरह सुन्दर और चूहे की तरह शान्त था।

दिन बीतते चले गये। भालू बच्चा बड़ा होता गया। एक दिन ऐसा भी आया जब वह बहुत बड़ा हो गया और इतना बड़ा हो गया कि स्कूल की सारी कुर्सियॉ और मेजें उसके लिये छोटी पड़ गयीं।

मास्टर जी ने पति भालू और पत्नी भालू को बुलाया और उनको सलाह दी कि अब उस बच्चा भालू को किसी व्यापार में लगा दिया जाये लेकिन पति भालू और पत्नी भालू इस बारे में कुछ भी नहीं जानते थे सो इस बारे में वे कुछ भी नहीं सोच सके।

तब मास्टर जी ने उसको सलाह दी कि लाटरी निकाली जाये और जो काम भी उस लाटरी में निकले वही काम बच्चा भालू कर लेगा।

लाटरी निकालने के लिये कुछ पर्चियॉ बनायीं गयीं। उन पर कुछ काम लिखे गये जैसे दरजीगीरी, रंगसाज़, चिमनी साफ करने वाला, लकड़ी काटने वाला, आदि आदि और कसाई।

भाग्य की बात, भालू बच्चा ने जब अपनी पर्ची खोली तो उस के ऊपर कसाई का काम लिखा था। पति भालू और पत्नी भालू दोनों ही उसको साथ ले कर बाजार गये और वहॉ जा कर एक कसाई की दूकान पर उसको काम पर लगा दिया।

जब भालू बच्चा काम पर जाने के लिये विदा हुआ तो तीनों ही भालुओं की ऑखें ऑसुओं से भरी थीं। पति भालू और पत्नी भालू जब बच्चा भालू को काम पर भेज कर वापस घर पहुँचे तो पति

भालू इतना दुखी था कि बहुत देर तक तो उससे कोई काम ही नहीं हुआ।

पत्नी भालू ने पूछा — "प्रिये, क्या बात है बहुत उदास हो?"

पति भालू बोला — "हॉ प्रिये, मैं नहीं जानता कि कसाई क्या होता है और वह क्या करता है पर एक बात मुझे ठीक लगती है कि उस कसाई की दूकान में से खुशबू बहुत ही अच्छी आ रही थी इस लिये हमारा बच्चा वहॉ ठीक से रहेगा।"

ऐसा इसलिये हुआ कि सारा मामला दूकान के बाहर इतनी जल्दी निपट गया और तय हो गया कि पति भालू को दूकान को अन्दर से देखने का मौका ही नहीं मिला। लेकिन पति भालू दूकान की उस गन्ध को नहीं भूल सका।

एक सप्ताह बाद जब भालू बच्चा घर आया तो पति भालू और बच्चा भालू में ये बातें हुईं —

पति भालू — "मेरे बच्चे, तुम उस कसाई के लिये क्या काम करते हो? मेरा मतलब है कि वह तुमसे किस तरीके का काम कराता है?"

बच्चा भालू — "मैं कसाई को भेड़ मारने में मदद करता हूँ, पिता जी। भेड़ आदमी लोग खाते हैं।"

पति भालू — "उॅह, तो क्या आदमी लोग ऊन खाते हैं?"

बच्चा भालू — "नहीं पिता जी, ऊन के नीचे खाल होती है।"

पति भालू — "तो क्या वे खाल खाते हैं?"

बच्चा भालू — "नहीं पिता जी, खाल के नीचे हड्डियॉ होती हैं।"

पति भालू — "तो क्या वे हड्डियॉ खाते हैं?"

बच्चा भालू — "नहीं पिता जी, ऊन के नीचे खाल, और खाल और हड्डियों के बीच में मॉस होता है। वही चीज़ आदमी लोग खाते हैं।"

पति भालू — "अरे, मुझे नहीं मालूम था कि भेड़ें अपने मॉस को इतना छिपा कर रखती हैं। मैंने तो कभी यह शब्द भी नहीं सुना था लेकिन तुमसे यह सब सुन कर और जान कर मुझे बहुत अच्छा लगा।

मेरे प्यारे बेटे, जब तुम अगली बार आओ तो एक टुकड़ा भेड़ के मॉस का हमारे लिये भी लाना, हम भी उसे खा कर देखेंगे।

इसके आगे की कहानी बिल्कुल साफ है। जब बच्चा भालू अगली बार घर आया तो वह मटन चाप के कुछ टुकड़े अपने माता पिता के लिये भी ले कर आया।

जल्दी ही पति भालू और पत्नी भालू को डबल रोटी के बजाय मटन चाप ज़्यादा अच्छे लगने लगे। अब वह डबल रोटी को पाने के लिये इतनी अधिक मेहनत करने को तैयार नहीं थे।

इस तरह अचानक ही वे जंगली हो गये थे। आदमी ने तुरन्त ताड़ लिया कि अब इनको यहॉ रखना ठीक नहीं था। इसलिये उसने उनको तुरन्त ही वहॉ से जंगल में भगा दिया। उनका बच्चा भी उनके साथ ही चला गया। अब वे लोग बजाय फल, सब्जी और शहद के मटन खाने लगे थे।

कितना बेवकूफ था वह मास्टर जिसने एक परची पर कसाई लिखा। अगर मैं होती तो लिखती — कैमिस्ट, फल बेचने वाला, मजदूर आदि आदि। और फिर यह न हुआ होता जो अब हुआ, यानी कि भालू शाकाहारी जानवर ही रहता।

21 छह मोमबत्तियॉ[46]

यह लोक कथा भी यूरोप महाद्वीप के फ्रांस देश में कही सुनी जाती है।

मौन्ट डु लौश[47] की ढलान पर एक आदमी रहता था जिसका नाम था मास्टर पियरो[48]। वह चारकोल बनाने का काम करता था।

एक दिन मास्टर पियरो जंगल में आग जला रहा था कि यकायक उसको एक भालू दिखायी दे गया। वह भालू वहॉ इसलिये आया था कि वह मास्टर पियरो से यह कहे कि वह जंगल में धुँआ उड़ाना बन्द कर दे। और यह उसने उससे कहा भी।

परन्तु मास्टर पियरो को यह बात बहुत बुरी लगी और उसने भालू को अपनी कुल्हाड़ी के एक ही वार से मार डाला। मास्टर पियरो ने उसका मॉस बहुत दिनों तक खाया।

परन्तु उसको उसके मॉस की चिकनाई बिल्कुल भी अच्छी नहीं लगती थी सो उसने उसके मॉस की चिकनाई की छह मोटी मोटी मोमबत्तियॉ बनायीं। वह बहुत ही भला आदमी था सो उसने सोचा कि वह उन मोमबत्तियों को किसमस की शाम को जलायेगा।

जब किसमस की शाम आयी तो वह चर्च के लिये अपनी लम्बे सफर पर चल दिया। भालू की चिकनाई की बनी छह मोमबत्तियॉ

[46] Six candles – a folktale from France, Europe
[47] Mont Du Losch – name of a mountain in France
[48] Pierro – name of a person

उसके पास थीं परन्तु यह क्या? दूर दूर तक जहॉ तक भी नजर जाती थी बर्फ की मोटी चादर फैली पड़ी थी जहॉ से रास्ता खोजना भी मुश्किल था।

मास्टर पियरो ने सोचा क्यों न मैं लकड़हारों के कैम्प में जाऊॅ। वे लोग पेड़ के तनों की ट्राली तार के ऊपर चलाते हैं। अगर वह ट्राली मुझे मिल गयी तो वह मुझे जल्दी ही चर्च के पास पहुॅचा देगी।

परन्तु मास्टर पियरो के किस्मत में तो कुछ और ही लिखा था। जब वह लकड़हारों के कैम्प में पहुॅचा तो कैम्प खाली पड़ा था और सभी लोग चर्च गये हुए थे।

हॉ एक बात अच्छी थी कि ट्राली तार पर लगी थी और वह नीचे जाने के लिये तैयार थी। मास्टर पियरो उसमें बैठ गया और ट्राली एक घर्र की आवाज के साथ नीचे की तरफ चल पड़ी।

पर यह क्या? ट्राली कच कच कच की आवाज के साथ बीच रास्ते में ही रुक गयी। ट्राली के पहिये जो तार पर चलते थे वे जाम हो गये थे और मास्टर पियरो आसमान में लटके हुए थे।

उनके तीन सौ फीट नीचे सब ओर बर्फ बिछी पड़ी थी और ऊपर काला आसमान था जिसमें झिलमिल तारे टिमटिमा रहे थे।

मास्टर पियरो को लगा कि अगर वह वहॉ सुबह तक रहा तो वह जमा हुआ गोश्त बन जायेगा जैसे उसने भालू का जला हुआ गोश्त बना दिया था।

बस फर्क यही था कि भालू का गोश्त खा लिया गया और उसका गोश्त खाना कोई पसन्द नहीं करेगा। लेकिन अब क्या किया जाये?

"ओह, अच्छा याद आया। मेरे पास तो मोमबत्तियॉ हैं। अगर इनमें से मैं एक मोमबत्ती जलाऊॅ तो शायद वे लकड़हारे मुझे देख लें और इस मुसीबत से छुटकारा दिला दें।

यह सोच कर उसने पहली मोमबत्ती जलायी पर उससे कोई फायदा नहीं हुआ। लकड़हारों ने उस मोमबत्ती की रोशनी को देखा तो पर उतनी दूर से उसकी रोशनी उनको तारे जैसी लगी।

मास्टर पियरो वहॉ से सहायता के लिये चिल्लाया भी परन्तु उसकी पुकार क्रिसमस की शाम को होने वाली प्रार्थनाओं की आवाज में खो कर रह गयी।

फिर मास्टर पियरो को ध्यान आया कि मैं भी कितना बेवकूफ हूॅ कि मैं सहायता के लिये आदमी को पुकार रहा हूॅ, मुझे अपने सेन्ट[49] को पुकारना चाहिये।

इसलिये उसने एक मोमबत्ती और जलायी और उसे पेड़ के तने पर मजबूती से खड़ा कर दिया और प्रार्थना की — "प्रिय सेन्ट पीटर, ओ पहाड़ों के अच्छे सन्त, तुम स्वर्ग से आओ और मुझे बचाओ।"

[49] In Christianity, there are many saints whom people worship and they help people. Saint Peter was Jesus' right hand. There are many folk tales of Jesus and Saint Peter. Read some of them in "Lok Kathaaon Mein Eesaaee Dharm", 2 vols, written by Sushma Gupta in Hindi language.

इस समय वह सेन्ट जरूर आता पर मुश्किल यह थी कि क्रिसमस की शाम को उसे भी बहुत काम थे इसलिये वह भी मास्टर पियरो की पुकार न सुन सका। इस प्रकार दूसरी मोमबत्ती भी बेकार ही गयी।

अब सेन्ट के आने की उम्मीद भी खत्म हो गयी थी। जैसे जैसे समय निकलता जा रहा था ठंड बढ़ती जा रही थी और मास्टर पियरो को अपनी जान की चिन्ता लग रही थी।

अपनी थकान से लड़ने और उसे दूर करने के लिये उसने तीसरी मोमबत्ती खा ली। उफ़, कितना बुरा डिनर था वह क्रिसमस की शाम का।

ठंड से ठिठुरते हाथों को गमी देने के लिये उसने चौथी मोमबत्ती जला ली। यह मोमबत्ती उसके लिये वरदान साबित हुई क्योंकि इस मोमबत्ती की रोशनी में मास्टर पियरो ने देखा कि ट्राली के पहिये जंग लगे तार की वजह से नहीं खिसक रहे हैं और उन्हें केवल चिकना करने की ज़रूरत है।

सो उसने अपनी पॉचवीं मोमबत्ती निकाली और मुस्कुराते हुए सोचा "अरे, मैं भी कितना बेवकूफ हूँ कि मैंने अपने तार को तो क्रिसमस डिनर खिलाया ही नहीं। मेरी ट्रौली आगे कैसे चलती।"

और उस मोमबत्ती से उसने उस तार को चिकना कर दिया। और लो वह ट्राली तो यह जा और वह जा। तुरन्त ही ट्राली उस तार पर फिसल चली और चर्च पहुँच गयी।

पर वह चर्च में तब पहुँचा जब आधी रात की प्रार्थना खत्म हो रही थी। उसने अपनी छठी मोमबत्ती जलायी। उसकी मोमबत्ती दूसरी मोमबत्तियों के साथ सिर उठाये खड़ी थी।

जैसे ही मास्टर पियरो ने उसे जलाया वह फुसफुसाया — "प्रिय जीसस, यह मोमबत्ती आपको भालू की भेंट है। मैं तो इतना बेवकूफ हूँ कि अगर भालू की चिकनाई मेरे पास न होती तो मैं तो खाली हाथ ही यहाँ आता।"

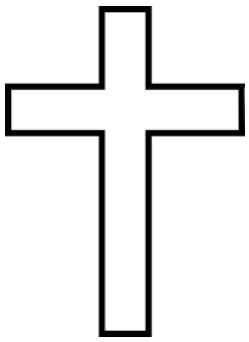

22 सफेद बिल्ली[50]

यह लोक कथा हमने तुम्हारे लिये फ्रांस देश की लोक कथाओं से ली है। यह वहॉ की एक बड़ी मशहूर और बहुत ही लोकप्रिय लोक कथा है।

एक बार की बात है कि एक राजा था जिसके तीन बेटे थे। उसके तीनों बेटे बहुत सुन्दर और बहुत बहादुर थे।

एक बार उसने उड़ती उड़ती यह खबर सुनी कि वे तीनों उसके जीते जी उसका राज्य हथियाने की सोच रहे थे। वे उसके मरने का इन्तजार भी नहीं करना चाहते थे।

सो उसने यह निश्चय किया कि वह उनके दिमाग को किसी और तरफ लगा देगा और इस तरह से वे उसके राज्य लेने का विचार अपने मन से निकाल देंगे। वह इनसे ऐसे वायदे करेगा जिनको वह हमेशा ही पूरा नहीं कर पायेंगे।

यह सोच कर उसने अपने बेटों को बुलाया और उनसे कहा — "मेरे प्यारे बेटों, तुम लोगों मेरी बात सुनो। अब इस बड़ी उमर में मैं

[50] The White Cat – a popular children's story from France, Europe – Adapted from the Web Site : http://www.popularchildrenstories.com/stories/Kids-Story-The-White-Cat-0567.htm .
It was written by Madame D'Aulnoy also in 1892 – available at http://www.surlalunefairytales.com/authors/aulnoy/1892/whitecat.html
[It may be read at http://fairytales4u.com/story/whitecat.htm - from the book "Young Folks Treasury", vol I, 1900. It is available at http://www.sacred-texts.com/neu/lfb/bl/blfb17.htm written by Andrew Lang in his "The Blue Fairy Book". Andrew Lang's many books are availablr at http://www.sacred-texts.com/neu/lfb/index.htm]

अब अपने राज्य की देखभाल उस तरह से नहीं कर सकता जैसे मैं पहले किया करता था। इसलिये मैं अब अपने काम से छुट्टी लेना चाहता हूँ।

मैं चाहता हूँ कि कोई होशियार और वफादार कुत्ता मैं अपने साथ के लिये रख लूँ। मैं वायदा करता हूँ कि तुम लोगों में से जो कोई भी मुझे सबसे ज़्यादा सुन्दर कुत्ता ला कर देगा वही मेरे राज्य का वारिस बनेगा।"

तीनों बेटे पिता की यह अजीब सी इच्छा सुन कर आश्चर्यचकित रह गये पर उनकी बात मान कर उनके लिये एक सुन्दर होशियार और वफादार कुत्ता ढूँढने चल दिये।

राजा ने उनको कुछ पैसे दिये, कुछ जवाहरात दिये और कहा कि वह उन सबको एक साल के बाद उसी समय उसी जगह उसी दिन उनके लाये हुए कुत्तों के साथ ही मिलेगा। बेटों ने पिता को विदा कहा और चले गये।

उन तीनों बेटों ने महल से थोड़ी ही दूर पहुँच कर अपना डेरा डाला और वे भी एक साल बाद उसी जगह मिलने का वायदा कर के अलग अलग राह पकड़ कर अपने अपने रास्ते चल दिये।

दो बड़े वाले भाइयों को तो रास्ते में काफी कठिनाइयाँ उठानी पड़ीं पर सबसे छोटा भाई बहुत ही दयालु, खुशमिजाज और चतुर था। वह काफी लम्बा और सुन्दर भी था जैसा कि एक राजकुमार को होना चाहिये इसलिये उसको ज़्यादा परेशानी नहीं हुई।

शायद ही कोई दिन गया होगा जब उसने कोई कुत्ता नहीं खरीदा होगा – छोटा कुत्ता, बड़ा कुत्ता, खेल वाला कुत्ता, शिकारी कुत्ता आदि आदि।

पर राजकुमार क्योंकि इस सफर पर अकेला ही निकला था तो वह सैकड़ों कुत्तों की तो अकेले देखभाल नहीं कर सकता था इसलिये जब भी उसको कोई कुत्ता अच्छा लगता तो वह उसको खरीद तो लेता पर अगले दिन जब उसको कोई उससे भी अच्छा कुत्ता मिल जाता तो वह पहले वाले कुत्ते को जाने देता और उस दूसरे कुत्ते को अपने साथ रख लेता।

वह अपनी उसी सड़क पर चलता रहा चलता रहा कि एक रात बहुत ज़ोर का तूफान आ गया और बहुत ज़ोर की बारिश होने लगी।

वह रास्ते से भटक गया और चलते चलते एक किले के पास आ पहुँचा। उस किले में उसको कोई दिखायी नहीं दे रहा था सिवाय बारह हाथों के जिनमें मशाल लगी हुई थी।

दूसरे कुछ हाथों ने उसको पीछे से धक्का दिया और उसको उस किले के अन्दर ले चले।

वह एक कमरे में से दूसरे कमरे में चलता जा रहा था और सारे कमरे बहुत ही कीमती पत्थरों और तस्वीरों से सजे हुए थे। उसको तो ऐसा लग रहा था कि वह किसी जादू के महल में आ गया हो।

साठ कमरों में से गुजरने के बाद उन हाथों ने उसे रोक दिया। वहाँ उसके गीले कपड़े उतार लिये गये और उसको बहुत कीमती और बढ़िया कपड़े पहना दिये गये।

फिर वे हाथ उसको खाने के कमरे में ले गये। वहाँ कोई काले कपड़ों से ढका करीब दो फुट लम्बा कोई आया जिसके चेहरे पर काले केप का परदा पड़ा हुआ था। उसके पीछे पीछे बहुत सारे बिल्ले थे।

राजकुमार तो यह सब देख कर इतना चकित हो गया कि हिल भी न सका। इतने में वह दो फुट की छोटी शक्ल आगे बढ़ी और उसने अपने चेहरे से परदा हटाया।

राजकुमार ने देखा कि वह तो दुनियाँ की सबसे सुन्दर सफेद बिल्ली थी। उतनी सुन्दर बिल्ली तो उसने पहले कभी कहीं नहीं देखी थी।

वह बिल्ली राजकुमार से बोली — "ओ राजकुमार, तुम्हारा यहाँ स्वागत है। मैरी फैलीन[51] तुमको यहाँ देख कर आज बहुत खुश है।"

राजकुमार बोला — "मैडम बिल्ली, यह तो बहुत अच्छी बात है कि तुमने मेरा यहाँ इस तरह से स्वागत किया। बहुत बहुत धन्यवाद। पर क्योंकि तुम बोल सकती हो और तुम्हारे पास इतना

[51] Mary Feline – was the name of that cat

बड़ा किला है इसलिये तुम मुझको कोई मामूली बिल्ली तो लगती नहीं। बताओ तुम कौन हो।"

फिर वे दोनों कुछ देर तक बात करते रहे। उसके बाद खाना परोसा गया। खाने के बीच में राजकुमार उस बिल्ली को दुनियॉ भर की खबरें सुना सुना कर उसका दिल बहलाता रहा।

इस सब में उसको पता चल गया कि उस बिल्ली को दुनियॉ के बारे में काफी कुछ पता था कि दुनियॉ में क्या हो रहा था।

जब खाना खत्म हो गया तो बहुत सारे बिल्ले फैन्सी पोशाक पहन कर आये और उन्होंने एक बैले नाच[52] किया। नाच के बाद उस सफेद बिल्ली ने अपने मेहमान को विदा कहा और चली गयी।

जिन हाथों ने राजकुमार को यहॉ तक आने में सहायता की थी वे ही हाथ उसको उसके सोने वाले कमरे तक ले गये। अगली सुबह उन्हीं हाथों ने उसको उठाया और शिकारियों वाले बहुत सुन्दर कपड़े पहना कर बाहर ऑगन में ले गये।

वहॉ जा कर राजकुमार ने देखा कि वह सुन्दर बिल्ली एक बन्दर पर बैठी हुई है और करीब पॉच सौ बिल्ले उसके आस पास खड़े हैं। वे सब शिकार का पीछा करने के लिये बिल्कुल तैयार हैं।

राजकुमार को यह देख कर बहुत अच्छा लगा। ऐसा आनन्द तो उसने पहले कभी महसूस नहीं किया था। वे सब शिकार के लिये

[52] Ballet dance – a kind of dance

चले गये। उसके सवार होने के लिये एक लकड़ी का घोड़ा था पर वह लकड़ी का घोड़ा भी बहुत तेज़ी से भाग रहा था।

दिन पर दिन ऐसे ही आनन्द में बीतते जा रहे थे और इस आनन्द के समय में वह राजकुमार अपना देश तो भूल ही गया था।

उसने सफेद बिल्ली से बार बार कहा — "जब भी मैं तुमको छोड़ कर जाऊँगा तब मैं कितना दुखी होऊँगा। मैं तुम्हें कितना प्यार करता हूँ इसलिये या तो तुम लड़की में बदल जाओ या फिर मुझे बिल्ला बना लो।"

जब आदमी को कोई तकलीफ या परेशानी नहीं होती तो एक साल बीतने में कितनी देर लगती है। राजकुमार का भी एक साल बहुत जल्दी ही पूरा होने को आया और उसको पता ही नहीं चला।

राजकुमार तो यह भी भूल गया था कि उसको वहाँ से कब जाना है पर उस बिल्ली को मालूम था कि राजकुमार को वहाँ से कब जाना है।

एक दिन बिल्ली ने राजकुमार से कहा — "राजकुमार, क्या तुम को मालूम है कि अपने पिता के लिये कुत्ता ढूँढने के लिये तुम्हारे पास अब केवल तीन दिन रह गये हैं? और तुम्हारे भाइयों को तो बहुत सुन्दर कुत्ते मिल भी गये होंगे।"

जब बिल्ली ने उसको इस बात की याद दिलायी तो उसको याद आया कि उसको तो कुत्ता ले कर अपने पिता के पास जाना है। यह सोच कर वह तो रो ही पड़ा।

रोते रोते वह बोला — "तुमने मेरे ऊपर कौन सा जादू डाला कि मैं इतना मुख्य काम भूल गया? अब मैं अपने पिता के लिये एक कुत्ते को और एक तेज़ दौड़ने वाले घोड़े को जो मुझे मेरे देश ले जा सके कहॉ ढूँढू?" और यह सब कह कर वह बहुत दुखी हो गया।

सफेद बिल्ली ने उसको दिलासा दी कि अपने देश जाने के लिये वह उसका लकड़ी का घोड़ा ले जा सकता है। वह उसको काफी जल्दी उसके देश ले जायेगा और एक कुत्ता वह खुद उसको दे देगी।

फिर उसने उसको एक ऐकौर्न[53] दे कर कहा — "तुम अपना कान इसके ऊपर रख कर सुनने की कोशिश करो तो तुम उस कुत्ते का भौंकना सुन पाओगे।"

राजकुमार ने उससे वह ऐकौर्न लिया और उस पर अपना कान लगा कर सुनने की कोशिश की तो उसमें तो उसको कुत्ते का भौंकना साफ सुनायी दे रहा था।

राजकुमारी बोली — "इस ऐकौर्न के अन्दर दुनियॉ का सबसे सुन्दर कुत्ता बन्द है पर ख्याल रखना कि तुम इसको तब तक नहीं तोड़ना जब तक तुम राजा के सामने न पहुँच जाओ।"

फिर उसने उसको एक बहुत ही बदसूरत सा कुत्ता दिया और राजा के पास जाने के लिये कहा।

[53] Acorn is a kind of fruit of oak tree. See its picture above.

राजकुमार ने वह ऐकौर्न लिया, वह बदसूरत कुत्ता लिया और उस लकड़ी के घोड़े पर सवार हो कर नियत समय पर अपने भाइयों के पास आ गया।

भाइयों ने जब अपने सबसे छोटे भाई के पास वह लकड़ी का घोड़ा और बदसूरत कुत्ता देखा तो उसकी बहुत हॅसी उड़ायी। वे सोचने लगे कि क्या उनका भाई उन चीज़ों से पिता का इनाम जीत पायेगा?

वहॉ से वे सब अपने पिता के पास आ गये। राजा ने देखा कि उसके दोनों बड़े बेटों के पास तो इतने सुन्दर, छोटे और कोमल कुत्ते थे कि उनको छूने में भी डर लगता था पर उसके छोटे बेटे के पास तो बहुत ही बदसूरत कुत्ता था जिसकी तरफ देखा भी नहीं जा रहा था।

राजा यह निश्चय ही नहीं कर पा रहा था कि राज्य किसको दिया जाये।

फिर उसके सबसे छोटे बेटे ने अपनी जेब से एक ऐकौर्न निकाला जो उसको बिल्ली ने दिया था। उसने उसे तोड़ा तो उसमें से तो एक इतना छोटा सा कुत्ता निकला जो एक अॅगूठी के अन्दर से उसके किनारों को बिना छुए ही निकल सकता था।

इसके अलावा वह कान्स्टानैट्स[54] भी बजा सकता था। उसके कान जमीन को छू रहे थे और वह एक सफेद साटिन की गद्दी पर बैठा था।

राजा तो उस कुत्ते को देख कर यही सोचने लगा कि वह उस कुत्ते में क्या कमी निकाले क्योंकि उस छोटे से जीव में कोई भी कमी निकालना बहुत मुश्किल था। उसको लगा कि दुनियॉ में उससे सुन्दर कुत्ता और कोई था ही नहीं।

खैर वह अपना राज्य तो अभी किसी को देना नहीं चाहता था सो उसने उन तीनों से कहा कि वे तीनों अपनी खोज में इतने ज़्यादा सफल रहे कि अब वह उनको धरती और समुद्र कहीं से भी एक ऐसे कपड़े की खोज में भेजना चाहता था जो एक बहुत ही छोटी सुई के छेद में से निकल सके।

इस काम के लिये उसने फिर से उन तीनों को एक साल का समय दिया और कहा कि वह उन सबको उसी समय उसी जगह उसी दिन एक साल के बाद उनके लाये हुए कपड़ों के साथ ही मिलेगा। बेटों ने पिता को विदा कहा और चले गये।

तीनों राजकुमार एक बार फिर से अपने सफर के लिये निकले। तीनों राजकुमार अपनी पुरानी जगह से फिर से उसी वायदे के साथ

[54] Constanets is a kind of musical instrument. See its picture above

अपने अपने रास्तों पर चल दिये कि एक साल बाद वे तीनों वहीं आ कर मिलेंगे।

सबसे छोटे राजकुमार ने अपना लकड़ी का घोड़ा उठाया और सीधा सफेद बिल्ली के पास पहुँचा। सफेद बिल्ली तो उसको देख कर बहुत खुश हो गयी।

जब राजकुमार ने उसको बताया कि इस बार उसके पिता को क्या चाहिये था तो सफेद बिल्ली बोली कि वह बिल्कुल चिन्ता न करे और आराम से रहे। उसने कहा कि उसके महल में बहुत ही बढ़िया सूत कातने वाले मौजूद थे वे उसके लिये ऐसा कपड़ा जरूर बुन देंगे।

अब तक राजकुमार को यह विश्वास हो गया था कि यह सफेद बिल्ली कोई साधारण बिल्ली नहीं थी पर जब भी राजकुमार ने उससे अपनी कहानी सुनाने के लिये कहा तब तब उसने उसको टाल दिया। इस तरह से राजकुमार का दूसरा साल भी वहाँ आनन्द मनाते गुजर गया।

और फिर वह दिन भी आया जब उन तीनों राजकुमारों को अपने पिता को उनका मँगाया हुआ कपड़ा देना था।

जाने से एक दिन पहले राजकुमारी ने उसको एक अखरोट दिया और कहा — "देखो, इसमें दुनियाँ की सबसे बढ़िया मलमल बन्द है पर ध्यान

रहे इसको भी तुम राजा के सामने ही तोड़ना।" और उसको विदा कहा।

इस बार दोनों बड़े राजकुमारों ने अपने तीसरे भाई का इन्तजार नहीं किया और राजा के सामने अपना कपड़ा ले कर आ गये।

उन दोनों भाइयों का लाया हुआ कपड़ा बहुत ही सुन्दर बारीक और हल्का था। हालॉकि वे कपड़े राजा की बड़ी सुई के छेद में से तो बड़े आराम से निकल रहे थे पर उसके पास जो छोटी सुई थी उसके छेद में से हो कर वे नहीं जा पा रहे थे।

इस बारे में अभी काफी कानाफूसी हो रही थी कि उन सबको मीठे संगीत की आवाज सुनायी पड़ी। सबसे छोटा राजकुमार रथ पर बैठा हुआ बहुत सारे नौकरों के साथ चला आ रहा था। यह सब उसको सफेद बिल्ली ने दिया था।

आ कर उसने पिता को प्रणाम किया, भाइयों से गले मिला और एक रत्नों से जड़ा बक्सा निकाला। उसमें से उसने एक अखरोट निकाला और उसको राजा के सामने ही तोड़ दिया।

उस अखरोट में से चैरी फल की एक गुठली निकली। गुठली को तोड़ने पर उसमें से एक और दाना निकला और उस दाने को छीलने पर उसमें से एक मक्का का दाना निकला।

राजकुमार को अबकी बार सफेद बिल्ली पर कुछ शक सा होने लगा था। पर फिर भी उसने उस मक्का के दाने को तोड़ा तो उसमें

से बाजरे का एक दाना निकला और उस बाजरे के दाने में से निकला इतना बढ़िया कपड़ा जो राजा के पास जो छोटी वाली सुई थी उसके छेद में से भी उसकी छह परतें निकल सकती थीं।

वह कपड़ा कम से कम चार सौ ऐल[55] लम्बा था। वह कपड़ा इतना बारीक ही नहीं था बल्कि उस पर अनगिनत आदमियों और जगहों की पेन्टिंग भी बनी हुई थीं।

राजा ने एक लम्बी सॉस भरी और अपने बच्चों से बोला — "इस बुढ़ापे में मुझे कुछ अच्छा नहीं लगता। तुम लोगों ने मेरी इच्छाओं को पूरा तो किया है पर मैं चाहता हूँ कि तुम लोग एक बार अपने आपको और साबित करो।

एक बार और एक साल तक सफर करो और साल के आखीर में मुझे जो कोई भी मुझे सबसे सुन्दर लड़की ला कर देगा वही उससे शादी करेगा और उसी को मैं अपना राज्य दे दूँगा।

मैं तुम लोगों से वायदा करता हूँ कि इस बार मैं इस इनाम को और आगे नहीं बढ़ाऊँगा।"

तीसरे राजकुमार को राजा की यह बात अच्छी नहीं लगी। उसका कुत्ता और उसका कपड़ा दोनों एक ही नहीं बल्कि दस दस राज्यों से भी ज़्यादा कीमती थे पर वह इस तरीके से बड़ा हुआ था कि वह अपने पिता की इच्छाओं के खिलाफ नहीं जा सकता था।

[55] 400 ells mean 400 X 45" = 18,000" = 500 yards. One ell is of 45".

सो वह अपने रथ पर सवार हुआ, अपने नौकरों को साथ लिया और एक बार फिर से उस सफेद बिल्ली के किले में आ पहुँचा। सफेद बिल्ली ने आश्चर्य से उससे पूछा — "अरे, तुम फिर से बिना ताज पहने ही आ पहुँचे?"

राजकुमार बोला — "मैडम, तुम्हारी सब भेंटों ने मुझे वह ताज दे दिया होता पर मुझे लगता है कि राजा को उसे छोड़ते हुए कुछ ज़रा ज़्यादा ही तकलीफ हो रही है बजाय मेरी उस खुशी के जो मुझे उसे पहन कर होती। अब मेरे पिता जी को सबसे सुन्दर बहू चाहिये।"

बिल्ली बोली — "तुम चिन्ता न करो। तुमको ऐसे किसी भी काम को नहीं छोड़ना चाहिये जिससे तुमको वह ताज मिल सके। तुमको एक सुन्दर लड़की ले कर अपने पिता के पास जाना ही चाहिये।

कोई बात नहीं मैं तुम्हारे लिये एक ऐसी लड़की ढूँढूँगी जिससे तुमको वह ताज मिल सके। मैं तुम्हारे लिये दुनियॉ की सबसे सुन्दर लड़की ढूँढूँगी। तब तक तुम यहॉ आनन्द से रहो।"

इस बार भी अगर बिल्ली ने उसके जाने के समय का ध्यान न रखा होता तो राजकुमार अपने जाने का समय ही भूल गया होता।

जाने के दिन के पहले दिन की शाम को बिल्ली ने कहा मैं तुम्हारे लिये दुनियॉ की सबसे सुन्दर लड़की ले कर आऊँगी। अब वह समय आ गया है जब उस नीच परी का काम खत्म होगा।

उसने राजकुमार से कहा कि इस काम को पूरा करने के लिये उसको अपने मन को सख्त कर के उसका यानी बिल्ली का सिर और पूँछ काट कर आग में फेंकना पड़ेगा।

राजकुमार यह सुन कर रो पड़ा और बोला — "क्या? यह तुम क्या कह रही हो? क्या तुम सोचती हो कि मैं इतना बेरहम हो सकता हूँ कि मैं जिसको प्यार करता हूँ उसी को मारूँ?

क्या तुम यह चाहती हो कि मैं तुमको यह साबित कर के बताऊँ कि तुमने जो कुछ भी मेरे ऊपर मेहरबानियाँ की हैं वे मैं सब भूल गया हूँ?"

बिल्ली उसको समझाते हुए बोली — "नहीं ऐसी बात नहीं है राजकुमार। तुम कृतघ्न बिल्कुल भी नहीं हो। तुम इस काम को इसलिये करोगे ताकि हम और तुम सुख से रह सकें। एक बिल्ली का विश्वास करो मैं अभी भी तुम्हारी दोस्त हूँ।"

फिर भी राजकुमार का मन नहीं माना। यह सोच कर ही राजकुमार की आँखों से आँसू बहने लगे कि वह बिल्ली को मार डालेगा।

उसने इस सबको न करने के लिये बिल्ली से बहुत कुछ कहा पर फिर बिल्ली के बार बार कहने पर उसने अपनी तलवार उठायी और काँपते हाथों से उस बिल्ली का गला और पूँछ दोनों काट डाले।

उसी पल एक बड़ी आश्चर्यजनक घटना घटी – उस सफेद बिल्ली का शरीर बढ़ने लगा और फिर वह एक बहुत ही सुन्दर लड़की में बदल गया। ऐसा कैसे हुआ यह तो कोई नहीं कह सकता था पर बस उसको वह बदलते देख सका।

उस लड़की का शरीर इतना सुन्दर था जिसको शब्दों में नहीं कहा जा सकता था। तभी वहॉ लौर्ड और लेडीज़ अपनी अपनी बिल्लियों की खालें अपने कन्धों पर डाले हुए आये और उस राजकुमारी के पैरों पर आ कर गिर गये।

वे सब भी उस राजकुमारी को उसके असली रूप में देख कर बहुत खुश थे। उसने सबका प्रेम से स्वागत किया जिससे ऐसा लगता था कि वह दिल की कितनी अच्छी थी।

फिर उसने राजकुमार को अपनी कहानी सुनायी कि किस तरह से वह एक नीच जादूगरनी के जादू से बिल्ली के रूप में बदल गयी थी। राजकुमार को तो उसको देखते ही उससे प्रेम हो गया।

कहानी सुना कर उसने कहा — "मगर राजकुमार तुमने मुझे इस हालत से आजाद किया मैं तुम्हारी बहुत कृतज्ञ हूॅ। असल में जब मैंने तुमको पहली बार देखा था तभी मुझे लगा था कि तुम ही मेरी सहायता करोगे।"

फिर वे दोनों एक शानदार गाड़ी मे चढ़े और उधर चल दिये जहॉ राजकुमार के दोनों भाई उसका इन्तजार कर रहे थे।

जैसे ही वे उस जगह पहुँचे तो वह राजकुमारी एक क्रिस्टल पत्थर में घुस गयी जो रत्नों से जड़ा हुआ था। इस पत्थर को कुछ बहुत ही बढ़िया कपड़े पहने आदमी उठा कर ले जा रहे थे।

राजकुमार अभी भी अपनी गाड़ी में बैठा हुआ था। उसने देखा कि उसके दोनों भाई अपनी अपनी लायी हुई लड़कियों के साथ उसी की तरफ आ रहे थे।

जब उन्होंने उससे उसकी लायी हुई लड़की के बारे में पूछा तो उसने उनको बताया कि वह तो केवल एक बिल्ली ही ले कर आया था।

इस बात पर उनको खूब हँसी आयी। फिर वे अपने घर की तरफ चल दिये। सबसे छोटा भाई उन दोनों के पीछे था और उसके पीछे था वह रत्नजटित पत्थर।

महल आने पर दोनों बड़े राजकुमारों ने अपनी अपनी लायी हुई लड़कियों को गाड़ी से उतारा और महल में अन्दर ले गये। राजा ने उनका ज़ोरदार स्वागत किया पर वह यह निश्चय नहीं कर सका कि वह उनमें से किसको इनाम दे।

फिर उसने अपने सबसे छोटे बेटे की तरफ देखा और पूछा — "तो इस बार तुम अकेले ही आये हो?"

राजकुमार ने उस रत्नजटित पत्थर को दिखाते हुए जवाब दिया — "नहीं जनाब, मैं अकेला नहीं आया बल्कि यह पत्थर साथ लाया

हूँ। इस पत्थर में आप एक छोटी से सफेद बिल्ली देखेंगे जो बहुत मीठी मीठी म्याऊँ करती है और जिसके मखमली मुलायम पंजे हैं।"

यह सुन कर राजा मुस्कुराया और खुद उस पत्थर को खोलने के लिये उठा। जैसे ही वह उस पत्थर के पास आया और उसे छुआ वह पत्थर टूट कर बिखर गया और उसमें से एक बहुत सुन्दर लड़की ऐसे निकल आयी जैसे बादलों में से सूरज निकलता है।

उसके सुन्दर बाल उसके कन्धों पर बिखर कर लहराते हुए उसके पैरों तक पहुँच रहे थे और उसने सफेद और गुलाबी रंग की पोशाक पहनी हुई थी। उसने राजा को काफी नीचे तक झुक कर नमस्ते की।

राजा उसको देख कर उसकी तारीफ में यह कहे बिना न रह सका — "यही है वह जिसका कोई जवाब नहीं। यही मेरे ताज की अधिकारी है।"

वह लड़की बोली — "पिता जी, मैं यहाँ आपकी राजगद्दी लेने नहीं आयी हूँ। वह तो आपकी शान है उस पर तो आप ही बैठे अच्छे लगते हैं। मैं तो खुद ही छह राज्यों की वारिस हूँ। उसमें से एक राज्य मैं आपको देती हूँ और एक एक राज्य आपके सब बेटों को देती हूँ।

इसके बदले में मैं बस इतना चाहती हूँ कि मैं आपके सबसे छोटे बेटे से शादी कर सकूँ। हमारे पास फिर भी तीन राज्य रहेंगे।" यह सुन कर राजा और उनके दरबारी सब खुशी से चिल्ला पड़े।

सबसे छोटे राजकुमार और उस राजकुमारी की तुरन्त ही शादी हो गयी। दूसरे दोनों बड़े राजकुमारों की भी उनकी लायी हुई लड़कियों से शादी कर दी गयी। इस तरह से उस राज्य में बहुत दिनों तक खुशियॉ मनायीं गयीं।

बाद में फिर सब राजकुमारों को उनके राज्यों में भेज दिया गया ताकि वे अपना अपना राज्य सॅभाल सकें। सफेद बिल्ली अपनी सुन्दरता, दया और मीठे स्वभाव के लिये हमेशा याद की गयी।

List of Stories of the Book “Folktales of Europe-1”

1. Apple of Contentment
2. The Beggar and Bread
3. Two Brothers and a White-Bearded Man
4. Darning Needle
5. Promise of Eagles
6. The Prince and the Pea
7. A Prince and the Apple
8. Half Rooster
9. The Singing Rose
10. Why Man Lives 80 years
11. The Porridge Pot
12. Long, Broad and Sharpsighted
13. The Clever Princess
14. The Soldier and the Devil
15. The Orphan Boy and Hell-Hounds
16. Royal Herd-boy
17. Half a Blanket
18. One or Two Pinch Salt
19. Beauty and the Beast
20. How the Bear Learnt to Eat Meat
21. Six Candles
22. The White Cat

List of Stories of the Book “Folktales of Europe-2”

1. The King Midas
2. The Cardplayer
3. North Wind and the Sun
4. The Hungry Wolf
5. Brabo and the Giant
6. The Prince Kindhearted
7. The Mouse
8. Baker's Idle Son
9. The Three Citrons of Love
10. Vain Queen
11. Boys With Golden Stars
12. Mother's Darling Jack
13. Fox and Hedgehog at the Henhouse
14. Voice of the Death
15. Dog, Cat and Mouse
16. Little Half Chick
17. The Emperor's New Clothes
18. The Three Golden Oranges
19. The Magic Mirror
20. The Mouse and the Elephant
21. Cow's Head

देश विदेश की लोक कथाओं की सीरीज़ में प्रकाशित पुस्तकें —

इस कड़ी में 100 से भी अधिक पुस्तकें उपलब्ध हैं। पुस्तक सूची की पूरी जानकारी के लिये लिखें — hindifolktales@gmail.com

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हिन्दी ब्रेल में संसार भर में उन सबको निःशुल्क उपलब्ध है जो हिन्दी ब्रेल पढ़ सकते हैं।

1 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–1
2 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–2
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1
4 रैवन की लोक कथाऐं–1

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हार्ड कापी में बाजार में उपलब्ध हैं।

1 रैवन की लोक कथाऐं–1 — भोपाल, इन्द्रा पब्लिशिंग हाउस, 2016
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–2 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
4 शीबा की रानी मकेडा — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 160 पृष्ठ
5 राजा सोलोमन ः सोलोमन और सैटर्न के साथ — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 144 पृष्ठ
6 रैवन की लोक कथाऐं — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2020, 176 पृष्ठ
7 बंगाल की लोक कथाऐं — देहली, नेशनल बुक ट्रस्ट, 2020, 213 पृष्ठ

Facebook Group
https://www.facebook.com/groups/hindifolktales/?ref=bookmarks

Updated in 2022

लेखिका के बारे में

सुषमा गुप्ता का जन्म उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ शहर में सन् **1943** में हुआ था। इन्होंने आगरा विश्वविद्यालय से समाज शास्त्र और अर्थ शास्त्र में ऐम ए किया और फिर मेरठ विश्वविद्यालय से बी ऐड किया। **1976** में ये नाइजीरिया चली गयीं। वहाँ इन्होंने यूनिवर्सिटी औफ़ इबादान से लाइब्रेरी साइन्स में ऐम ऐल ऐस किया और एक थियोलोजीकल कौलिज में **10** वर्षों तक लाइब्रेरियन का कार्य किया।

वहाँ से फिर ये इथियोपिया चली गयीं और वहाँ एडिस अबाबा यूनिवर्सिटी के इन्स्टीट्यूट औफ़ इथियोपियन स्टडीज़ की लाइब्रेरी में **3** साल कार्य किया। तत्पश्चात इनको दक्षिणी अफ्रीका के एक देश लिसोठो के विश्वविद्यालय में इन्स्टीट्यूट औफ़ सदर्न अफ्रीकन स्टडीज़ में **1** साल कार्य करने का अवसर मिला। वहाँ से **1993** में ये यू ऐस ए आ गयीं जहाँ इन्होंने फिर से मास्टर औफ़ लाइब्रेरी ऐंड इनफौर्मेशन साइन्स किया। फिर **4** साल ओटोमोटिव इन्डस्ट्री एक्शन ग्रुप के पुस्तकालय में कार्य किया।

1998 में इन्होंने सेवा निवृत्ति ले ली और अपनी एक वेब साइट बनायी – www.sushmajee.com। तब से ये उसी वेब साइट पर काम कर रहीं हैं। उस वेब साइट में हिन्दू धर्म के साथ साथ बच्चों के लिये भी काफी सामग्री है।

भिन्न भिन्न देशों में रहने से इनको अपने कार्यकाल में वहाँ की बहुत सारी लोक कथाओं को जानने का अवसर मिला – कुछ पढ़ने से, कुछ लोगों से सुनने से और कुछ ऐसे साधनों से जो केवल इन्हीं को उपलब्ध थे। उन सबको देख कर इनको ऐसा लगा कि ये लोक कथाऐं हिन्दी जानने वाले बच्चों और हिन्दी में रिसर्च करने वालों को तो कभी उपलब्ध ही नहीं हो पायेंगी – हिन्दी की तो बात ही अलग है अंग्रेजी में भी नहीं मिल पायेंगीं।

इसलिये इन्होंने न्यूनतम हिन्दी पढ़ने वालों को ध्यान में रखते हुए उन लोक कथाओं को हिन्दी में लिखना प्रारम्भ किया। इन लोक कथाओं में अफ्रीका, एशिया और दक्षिणी अमेरिका के देशों की लोक कथाओं पर अधिक ध्यान दिया गया है पर उत्तरी अमेरिका और यूरोप के देशों की भी कुछ लोक कथाऐं सम्मिलित कर ली गयी हैं।

अभी तक **2500** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी है। इनको "देश विदेश की लोक कथाऐं" और लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें" क्रम में प्रकाशित करने का प्रयास किया जा रहा है। आशा है कि इस प्रकाशन के माध्यम से हम इन लोक कथाओं को जन जन तक पहुँचा सकेंगे।

विंडसर, कैनेडा
2022